वार्षिक रिपोर्ट

2010 - 2011

Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration

विषय सूची

अध्याय 1:

परिचय 63

अध्याय 2:

वर्ष 2010–2011 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम...... 67

अध्याय 3:

पाठ्यक्रमों तथा विभिन्न गतिविधियों का विवरण...... 68

अध्याय 4:

हमारी सहयोगी संस्थाएं...... 84

अध्याय 5:

क्लब और सोसाइटियां 104

अध्याय 6:

अन्य गतिविधियां...... 109

परिशिष्ट

परिशिष्ट–1 : अकादमी के संकाय सदस्य/अन्य अधिकारी 113

परिशिष्ट–2 : भौतिक अवसंरचना...... 115

परिशिष्ट–3 : भारतीय प्रशासनिक सेवा चरण–I (2009–11 बैच) के प्रतिभागी 116

परिशिष्ट–4 : भारतीय प्रशासनिक सेवा चरण–II के प्रतिभागी (2008–10 बैच) 117

परिशिष्ट–5 : भारतीय प्रशासनिक सेवा चरण– III के प्रतिभागी (2010)...... 118

परिशिष्ट–6 : भारतीय प्रशासनिक सेवा चरण– IV के प्रतिभागी (2010)...... 119

परिशिष्ट–7 : 85वें आधारिक पाठ्यक्रम के प्रतिभागी 120

परिशिष्ट–8 : 108वें प्रवेशकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी...... 120

परिशिष्ट–9 : राष्ट्रीय सुरक्षा पर 14वें संयुक्त सिविल–सैन्य कार्यक्रम के प्रतिभागी 121

परिशिष्ट–10 : राष्ट्रीय सुरक्षा पर 15वें संयुक्त सिविल–सैन्य कार्यक्रम के प्रतिभागी 121

अध्याय 1

परिचय

लोकसभा में तत्कालीन गृहमंत्री ने 15 अप्रैल, 1958 को एक ऐसी राष्ट्रीय प्रशिक्षण अकादमी स्थापित करने संबंधी प्रस्ताव की घोषणा की थी जहां वरिष्ठ सिविल सेवाओं में भर्ती सभी सदस्यों को आधारिक और मूलभूत विषयों का प्रशिक्षण दिया जाए। गृह मंत्रालय ने आई.ए.एस. ट्रेनिंग स्कूल, दिल्ली और आई.ए.एस. स्टाफ कालेज, शिमला को मिलाकर मसूरी में राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी स्थापित करने का निर्णय लिया। 1959 में अकादमी की स्थापना की गई तथा इसका नाम 'राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी' रखा गया। इसे भारत सरकार, गृह मंत्रालय के अंतर्गत 'संबद्ध कार्यालय' का दर्जा प्राप्त था। अक्तूबर, 1972 में इसका नाम बदलकर 'लाल बहादुर शास्त्री प्रशासन अकादमी' कर दिया गया। जुलाई 1973 में, इसके नाम में 'राष्ट्रीय' शब्द भी जोड़ा गया और अब यह अकादमी 'लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी' के नाम से जानी जाती है। यह अकादमी सन् 1870 में बने प्रतिष्ठित ''चार्लिविल होटल'' में शुरू की गई थी। यहां अकादमी की शुरुआत के लिए आधारिक संरचना मौजूद थी, तथापि बाद में इसमें काफी विस्तार किया गया। यहां आवश्यकतानुरूप कई नए भवन बनाए और खरीदे भी गए।

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी में सिविल सेवाओं के सदस्यों के लिए आयोजित किए जाने वाले एक संयुक्त आधारिक पाठ्यक्रम में अखिल भारतीय सेवाओं और केन्द्रीय सेवा समूह 'क' सदस्यों को प्रशिक्षण दिया जाता है तथा भा.प्र. सेवा (आईएएस) के सदस्यों को व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है। यह अकादमी भा.प्र. सेवा के मध्यम–स्तर से लेकर वरिष्ठ–स्तर तक के अधिकारियों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम तथा राज्य सिविल सेवाओं से भा.प्र. सेवा में पदोन्नत अधिकारियों के लिए प्रवेशकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी आयोजित करती है। यह अकादमी विभिन्न विषयों में विशेषज्ञ व्यावसायिक ज्ञान के लिए प्रभूत सामग्री भी उपलब्ध कराती है। यहां व्यक्तियों, गैर–सरकारी संगठनों, निगमित क्षेत्रों, भारत तथा विदेशी सरकारों के लिए भी उनकी आवश्यकतानुरूप पाठ्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जिससे वे अपनी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

उत्पत्ति एवं विकास क्रम

15 अप्रैल, 1958	लोकसभा में तत्कालीन गृह मंत्री द्वारा अकादमी स्थापित करने की घोषणा
13 अप्रैल, 1959	मेट कॉफ हाउस में 115 अधिकारियों के प्रथम बैच ने प्रशिक्षण आरंभ किया
1 सितम्बर, 1959	मसूरी में अकादमी की शुरुआत
1969	चरण–। का सेंडविच पैटर्न चरण–।। जिला प्रशिक्षण, इससे पूर्व आधारिक पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण दिया जा रहा था बाद में 8 माह का सतत् व्यावसायिक प्रशिक्षण आरंभ किया गया।
आरंभ से 31.8.1970 तक	अकादमी गृह मंत्रालय के अधीन कार्य कर रही थी।
1.9.1970 से अप्रैल 77 तक	अकादमी ने मंत्रिमंडल सचिवालय मामले विभाग के अधीन कार्य किया
अक्टूबर, 1972	अकादमी के पूर्व नाम "प्रशासन अकादमी" में "लाल बहादुर शास्त्री" जोड़ा गया
जुलाई–73	"राष्ट्रीय" शब्द जोड़ा गया और तब से अकादमी को "लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी" के नाम से जाना जाता है।
अप्रैल, 1977 से मार्च 1985	अकादमी ने गृह मंत्रालय के अधीन कार्य किया
अप्रैल 85 से अब तक	अकादमी ने कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय के अधीन कार्य करना आरंभ किया।
1988	निक्टू की स्थापना
1989	एनएसडीएआरटी जिसे एनआईएआर के नाम से जाना जाता था, को सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम के तहत 14.10.96 को सोसाइटी बनाया गया।
3 नवंबर, 92	कर्मशिला भवन का उद्घाटन
1995	1995 में सॉफ्ट्रेन की स्थापना की गई जिसे अब प्रकाशन प्रकोष्ठ नाम से जाना जाता है।
9 अगस्त,1996	ध्रुवशिला तथा कालिंदी अतिथि गृह का उद्घाटन किया गया।
2007	चरण– III तथा चरण IV हेतु मिड केरियर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आरंभ।

हमारे संरक्षक

निदेशक : भारत सरकार के अपर सचिव स्तर का वरिष्ठ अधिकारी इस अकादमी का मुखिया होता है। सेवा के अनुकरणीय सदस्य अकादमी के मुखिया रहे हैं। इस अकादमी के अस्तित्व में आने से लेकर अब तक, निम्नलिखित अधिकारियों ने इस पद को सुशोभित किया–

नाम	कार्यकाल		
श्री ए.एन. झा, भा.सि.सेवा	01.09.1959	से	30.09.1962
श्री एस.के. दत्ता, भा.सि.सेवा	13.08.1963	से	02.07.1965
श्री एम.जी. पिम्पुटकर, भा.सि.सेवा	04.09.1965	से	28.04.1968
श्री के.के. दास, भा.सि.सेवा	12.07.1968	से	24.02.1969
श्री डी.डी. साठे, भा.सि.सेवा	19.03.1969	से	11.05.1973
श्री राजेश्वर प्रसाद, भा.प्र. सेवा	11.05.1973	से	11.04.1977
श्री वी.सी. माथुर, भा.प्र. सेवा	17.05.1977	से	23.07.1977
श्री जी.सी.एल. जोनेजा, भा.प्र. सेवा	23.07.1977	से	30.06.1980
श्री पी.एस. अप्पू, भा.प्र. सेवा	02.08.1980	से	01.03.1982
श्री आई.सी. पुरी, भा.प्र. सेवा	16.06.1982	से	11.10.1982
श्री आर.के. शास्त्री, भा.प्र. सेवा	09.11.1982	से	27.02.1984
श्री के. रामानुजम, भा.प्र. सेवा	27.02.1984	से	24.02.1985
श्री आर.एन. चोपड़ा, भा.प्र. सेवा	06.06.1985	से	29.04.1988
श्री बी.एन. युगांधर, भा.प्र. सेवा	26.05.1988	से	25.01.1993
श्री एन.सी. सक्सेना, भा.प्र. सेवा	25.05.1993	से	06.10.1996
श्री बी.एस. बसवान, भा.प्र. सेवा	06.10.1996	से	08.11.2000
श्री वजाहत हबीबुल्लाह, भा.प्र. सेवा	08.11.2000	से	13.01.2003
श्री बिनोद कुमार, भा.प्र. सेवा	20.01.2003	से	15.10.2004
श्री डी.एस. माथुर, भा.प्र. सेवा	23.10.2004	से	06.04.2006
श्री रुद्र गंगाधरन, भा.प्र. सेवा	06.04.2006	से	01.09.2009
श्री पदमवीर सिंह, भा.प्र. सेवा	02.09.2009	से	अब तक

संयुक्त निदेशक : निम्नलिखित अधिकारियों ने अकादमी में संयुक्त निदेशक के रूप में कार्य किया–

नाम	कार्यकाल		
श्री जे.सी. अग्रवाल	19.06.1965	से	07.01.1967
श्री टी.एन. चतुर्वेदी	27.07.1967	से	09.02.1971
श्री एस.एस.बिषेन	01.04.1971	से	09.09.1972
श्री एम. गोपालकृष्णन	20.09.1972	से	05.12.1973
श्री एच.एस. दूबे	03.03.1974	से	18.12.1976
श्री एस.आर. अडिगे	12.051977	से	07.01.1980
श्री एस.सी. वैश्य	07.01.1980	से	07.07.1983
श्री एस. पार्थसारथी	18.05.1984	से	10.09.1987
श्री ललित माथुर	10.09.1987	से	01.06.1991
डॉ. वी.के. अग्निहोत्री	31.08.1992	से	26.04.1998
श्री बिनोद कुमार	27.04.1998	से	28.06.2002
श्री रुद्र गंगाधरन	23.11.2004	से	06.04.2006
श्री पदमवीर सिंह	12.03.2007	से	02.02.2009
श्री पी.के. गेरा	24.05.2010	से	अब तक
श्री संजीव चोपड़ा	09.09.2010	से	अब तक

परिसर

यह अकादमी चार्लिविल, ग्लेनमाइर और इंदिरा भवन नामक तीन सुरम्य परिसरों में फैली है। तीनों परिसरों में अलग–अलग विशिष्ट कार्य होते हैं। चार्लिविल में प्रारंभिक स्तर के प्रशिक्षण के साथ–साथ, व्यावसायिक पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं। ग्लेनमाइर परिसर में राष्ट्रीय प्रशासनिक अनुसंधान संस्थान (एन.आई.ए.आर.), जो अकादमी का अनुसंधान तथा विकास स्कंध है, स्थापित है। इंदिरा भवन परिसर में सेवाकालीन प्रशिक्षण, अन्य विशिष्ट पाठ्यक्रम / कार्यक्रम, कार्यशालाएं और संगोष्ठियां आयोजित की जाती हैं।

प्रशिक्षण योजना

इस अकादमी का यह प्रयास रहता है कि देश के लिए ऐसा अधिकारी–तंत्र तैयार करने में मदद की जाए जो अपने पद की अपेक्षा, अपने कार्यों से सम्मान पा सकें। हम सिविल सेवकों के लिए संविधान में निर्धरित आदेशों के पालन का प्रयास करते हैं जिसके अनुसार सिविल सेवक वह है, जो साधनहीनों के प्रति सहानुभूति रखता हो, राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए प्रतिबद्ध हो, जिसमें अपने अधीनस्थों के लिए और समाज के लिए अनुकरणीय बनने की योग्यता हो, जो सभी जातियों, पंथों, धर्मों के प्रति समभाव रखता हो; जिसमें चहुमुखी विकास के लिए लड़ने की व्यावसायिक क्षमता हो। प्रत्येक सिविल सेवक का अभीष्ट लक्ष्य यही है। हम अधिकारी–तंत्र के अनुभवों से उन सीखों को भी ग्रहण करने का प्रयास करते हैं, जो दूसरे देशों में आर्थिक प्रगति, समान विकास तथा मानव कल्याण के लिए सहायक सिद्ध हुई हैं।

पाठ्य–विवरण को प्रासंगिक बनाए रखने के लिए उनकी निरंतर समीक्षा कर अद्यतन किया जाता है। ऐसा करने के लिए राज्य काउंसलरों के माध्यम से राज्य सरकारों से और अर्धवार्षिक सम्मलेनों में राज्य सरकारों की सलाह, प्रतिभागियों के फीडबैक और इस उद्देश्य के लिए गठित सरकारी समितियों की सिफारिशों के आधार पर किया जाता है। केंद्र सरकार के विभागों के प्रतिनिधियों से भी समय–समय पर विचार–विमर्श किया जाता है। यह स्पष्ट है कि प्रवृत्तियों और मूल्यों की महत्ता को उजागर करने के लिए कक्षा–व्याख्यान की विधि बहुत उपयुक्त नहीं है। अतः हमने कई अन्य नई विधियां भी अपनाई हैं। अधिकांश पाठ्यक्रम मॉड्यूल के अनुसार चलते हैं। इसके अनुसार उपयुक्त विषय चुने जाते हैं और उसके सभी पहलुओं पर विचार करते हुए, सुव्यस्थित तरीके से उसका व्यापक अध्ययन किया जाता है।

फील्ड भ्रमण

- हिमालय ट्रेक– विषमता, खराब मौसम, अपर्याप्त आवास और खाद्य पदार्थों की दुर्लभता में अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों की हिम्मत की परीक्षा होती है। इस यात्रा के दौरान उनके वास्तविक गुणावगुण सामने आ जाते हैं।
- ग्रामीण जीवन की समस्याओं और वास्तविकताओं को समझने के लिए पिछड़े जिलों के गांवों का दौरा किया जाता है।

नागरिकों पर सरकारी कार्यक्रमों के प्रभाव पर, फील्ड भ्रमणों तथा लाभार्थियों के साथ विचार–विनिमय के जरिए कार्य अनुसंधान भी किया जाता है।

जीवन–मूल्यों को बढ़ावा

ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी युवा सिविल सेवकों को उन आदर्श जीवन–मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है जिनकी लोक सेवक से अपेक्षा की जाती है। व्यावसायिक सिविल सेवा के लिए वांछित दक्षता और ज्ञान प्रदान करना अपेक्षाकृत आसान होता है, और ये पारंपरिक रूप से अकादमी के सबल पक्ष रहे हैं। तथापि प्रशिक्षण के लिए उपलब्ध कम समय में, विविध पृष्ठभूमि और अनुभव वाले, कुशाग्र बुद्धि युवक और युवतियों की प्रवृत्तियों और मूल्यों को उपयुक्त दिशा की ओर मोड़ना बहुत अधिक कठिन कार्य है।

मॉड्यूल में निम्नलिखित सभी या कुछ विधियां प्रयुक्त की जाती हैं:–

- अकादमी के संकाय तथा अतिथि संकाय, दोनों द्वारा व्याख्यान
- विविध विचारों को जानने के लिए पैनल परिचर्चा
- प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)
- फिल्में
- समूह परिचर्चा
- अनुकरण अभ्यास
- संगोष्ठियां
- मूट कोर्ट और मॉक ट्रायल
- आदेश और निर्णय लेखन अभ्यास
- प्रयोगात्मक निदर्शन
- समस्या समाधान अभ्यास
- रिपोर्ट लेखन (सत्र आलेख)
- समूह कार्य
- परियोजना कार्य अनुभव (होप)

लोक सेवा में दक्ष एवं प्रभावशील होने के लिए जिन प्रवृत्तियों और जीवन–मूल्यों की जरूरत है उनके बारे में कोई मत–विविधता नहीं है। ये जीवन मूल्य हैं– सत्यनिष्ठा, नैतिक साहस, शोषितों के लिए दर्द और समानुभूति, धर्म, क्षेत्र, जाति, वर्ग या लिंग पर आधारित साम्प्रदायिक विद्वेष का न होना। लेकिन वास्तविकता यह है कि आज इन्हीं जीवन–मूल्यों पर सबसे अधिक आघात हुआ है।

अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों में इन्हीं जीवन–मूल्यों के विकास के लिए उन्हें सामाजिक क्रियाकलापों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। उन्हें ललिता शास्त्री बालवाड़ी स्कूल में सुधार की जिम्मेदारी भी दी जाती है, जहां कर्मचारियों एवं आम जनता के बच्चों के लिए मामूली लागत पर नर्सरी, एलकेजी तथा यूकेजी की कक्षाएं चलाई जाती हैं। उन्होंने मसूरी में कार्यरत गैर–सरकारी संगठनों के साथ मिलकर न सड़ने वाले कूड़े के प्रबंधन का कार्य भी किया है। इस क्षेत्र के निर्धन बच्चों के लिए अधिकारी प्रशिक्षणार्थी सायंकालीन कोचिंग/शैक्षणिक कक्षाएं भी लेते हैं।

इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए थियेटर और नुक्कड़ नाटकों की मदद से जनसाधारण को जीवन मूल्यों को समझाने का प्रयास किया जा रहा है। साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार आदि बुराइयों पर नाटकों के मंचन के लिए मशहूर नुक्कड़ नाटक समूहों को आमंत्रित किया गया और इनकी काफी सराहना हुई है।

प्रत्येक प्रमुख प्रशिक्षण कार्यक्रम में अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को रक्तदान के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। मसूरी के शहरी और ग्रामीण निर्धन लोगों के लिए प्रत्येक गुरुवार को नियमित रूप से स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया जाता है। युवा अधिकारी प्रशिक्षणार्थी सकारात्मक प्रतिक्रिया दिखाते हुए इन कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं, और इससे उनके सहजात आदर्शवाद को भी बल मिला है।

निष्ठा एवं विश्वास

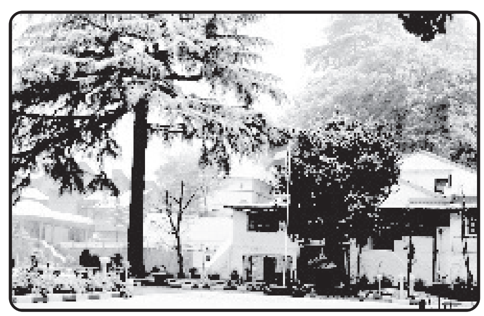

हम मानते हैं कि लोक सेवा चुनौतीपूर्ण है अतः सिविल सेवकों को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि यदि वे मान–सम्मान और गर्व के साथ जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो उन्हें अथक प्रयास करना होगा। हम चाहते हैं कि वे जनता के प्रति उत्तरदायी होने के साथ–साथ अपने स्वयं की नजरों में भी सम्मानित रहें। उनके लिए यही सबसे बड़े गौरव की बात होनी चाहिए। प्रभावशाली ढंग से काम करने की योग्यता, व्यावसायिक क्षमता और संविधान के प्रति कटिबद्धता पर निर्भर होती है। राष्ट्र के रूप में, हमारे यहां सबसे बड़ी ग्रामीण रोजगार योजना है और हमारा प्रयास यह रहता है कि सिविल सेवकों को व्यावसायिक रूप से इतना दक्ष बनाया जाए कि वे पंचायतीराज संस्थाओं से मदद ले सकें और लोगों की भागीदारी बढ़ा सकें। अधीनस्थों को अभिप्रेरित करना सभी प्रशासकों के कार्य का महत्वपूर्ण क्षेत्र है। हमारा प्रयास यह रहता है कि वे अधीनस्थों के साथ बातचीत कर उन्हें प्रेरित करें।

व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए, बाह्य क्रियाकलापों पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है। हिमालय में ट्रेक के अलावा व्यायाम प्रशिक्षण, क्रॉस कंट्री, योग, घुड़सवारी, रिवर राफ्टिंग, पैरा–ग्लाइडिंग, रॉक क्लाइंबिंग और पिस्टल/राइफल शूटिंग भी सिखाई जाती है। जन–संबोधन, थियेटर वर्कशाप, मोटर मैकेनिक्स, बागवानी, फोटोग्राफी और संगीत अवबोधन आदि कुछ अन्य विकल्प भी युवा अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को दिए जाते हैं। खेल–कूद परिसर में प्रशिक्षणार्थियों को सभी प्रकार की खेल तथा विश्व स्तरीय व्यायामशाला की सुविधाएं उपलब्ध हैं। उन्हें भारतीय खेल प्राधिकरण के प्रशिक्षकों से खेल सीखने का अवसर भी प्रदान किया जाता है।

अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न क्लबों तथा सोसाइटियों के माध्यम से सांस्कृतिक तथा पाठ्येतर कार्यकलापों में भाग लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है। इन क्लबों तथा सोसाइटियों के सदस्य तथा पदाधिकारी ये अधिकारी प्रशिक्षणार्थी स्वयं होते हैं। ये क्लब तथा सोसाइटियां अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों के लाभ हेतु सायं को ऐसे कार्यकलापों का आयोजन करते हैं।

'संघ भावना' को बढ़ावा

अखिल भारतीय सेवाओं और केन्द्रीय सेवा समूह 'क' के सभी अधिकारी प्रशिक्षणार्थी लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी से ही अपने व्यावसायिक जीवन की शुरुआत करते हैं। यह सरकारी क्षेत्र में कार्य करने का उनका पहला अनुभव होता है। परिणामस्वरूप, यह संस्था विभिन्न सिविल सेवाओं के युवा अधिकारियों के बीच एक घनिष्ठता कायम करती है। इस प्रकार मातृ संस्था के रूप में यह अकादमी यहां से प्रशिक्षण पाने वाले विभिन्न सेवाओं के अधिकारियों के मध्य घनिष्ठता स्थापित करती है। इस प्रकार यह अकादमी अधिकारियों के बीच ऐसा भाईचारा स्थापित करती है कि वे अपने पुराने दिनों को याद करते हैं। अकादमी की एक अनोखी विशिष्टता, इसकी आधुनिक अवसंरचना के अतिरिक्त, नवीन एवं पुरातन का अनोखा मिश्रण है।

प्रतिभागी

वित्तीय वर्ष 2010–11 के दौरान कुल 23 पाठ्यक्रम/कार्यशालाएं/संगोष्ठियां आयोजित की गईं जिनमें कुल 1171 प्रतिभागियों ने भाग लिया। आगे सारणी में वर्ष 2010–11 में विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रतिभागियों/प्रशिक्षणार्थियों का विवरण दिखाया गया है।

वर्ष 2010–11 के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रतिभागियों/प्रशिक्षणार्थियों का विवरण

पाठ्यक्रम का नाम	**2010–11 के प्रतिभागियों की संख्या**
आधारिक पाठ्यक्रम (मुख्य)	277
भा. प्र. सेवा चरण–I	120
भा. प्र. सेवा चरण–II	114
भा. प्र. सेवा चरण–III	93
भा. प्र. सेवा चरण–IV	64
भा. प्र. सेवा चरण–V	93
प्रवेशकालीन पाठ्यक्रम	39
संयुक्त सिविल–सैन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम	71
वर्तमान प्रशासन में आचार नीति	21
भा.प्र.से., भा.पु.से., भा.वि.से. (विधि तथा व्यवस्था, आपदा प्रबंधन) के लिए संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम	49
प्रशिक्षण विकास कार्यक्रम	112
अन्य कार्यशालाएं/संगोष्ठियां/सम्मेलन	116
योग	**1171**

वर्ष 2010–11 के दौरान, अनुसंधान इकाइयों द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यशालाओं/संगोष्ठियों/ सम्मेलनों में प्रतिभागियों/प्रशिक्षणार्थियों का विवरण

पाठ्यक्रम का नाम	**प्रतिभागियों की संख्या**
ग्रामीण अध्ययन केंद्र	–
राष्ट्रीय जेंडर केंद्र	90
आपदा प्रबंधन केंद्र	100
राष्ट्रीय प्रशासनिक अनुसंधान संस्थान	605
राष्ट्रीय शहरी प्रबंध केंद्र	19
योग	**814**

अध्याय 2

वर्ष २०१०-२०११ के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

पाठ्यक्रम/परिसर का नाम	संचालित	पाठ्यक्रम टीम सर्वश्री	प्रतिभागियों की संख्या पु.	म.	योग
भा.प्र.सेवा व्यावसायिक पाठ्यक्रम चरण–I (2009–2011 बैच)	14 दिसंबर, 2009 से 11 जून, 2010	दुष्यंत नरियाला डॉ. मनिन्दर कौर द्विवेदी आशीष वच्छानी राजेश आर्य	89	31	120
भा.प्र.सेवा व्यावसायिक पाठ्यक्रम चरण–II (2008–2010 बैच)	16 जून, से 20 अगस्त, 2010	जसप्रीत तलवार गौरव द्विवेदी मोना भगबती राजेश आर्य	82	32	114
भा.प्र.सेवा के अधिकारियों के लिए मिड कैरियर प्रशिक्षण कार्यक्रम (चरण–III) (2000–2001 बैच)	07 जून से 30 जुलाई, 2010	तेजवीर सिंह आशीष वच्छानी डॉ. प्रेम सिंह	79	14	93
अखिल भारतीय सेवाओं तथा केन्द्रीय सेवाओं (समूह 'क') के लिए 85वां आधारिक पाठ्यक्रम	30 अगस्त से 10 दिसम्बर 2010	गौरव द्विवेदी रंजना चोपड़ा राजेश आर्य डॉ. प्रेम सिंह निधि शर्मा	199	78	277
भा.प्र.सेवा के अधिकारियों के लिए मिड कैरियर प्रशिक्षण कार्यक्रम (चरण–IV) (1991, 92, 93, 95 बैच)	04 अक्तूबर से 26 नवंबर, 2010	संजीव चोपड़ा जसप्रीत तलवार तेजवीर सिंह	54	10	64
भा.प्र.सेवा के अधिकारियों के लिए मिड कैरियर प्रशिक्षण कार्यक्रम (चरण–V) (1991, 92, 93, 95 बैच)	12 दिसम्बर, 2010 से 14 जनवरी, 2011	प्रेम कुमार गेरा आलोक कुमार डॉ. मनिन्दर कौर द्विवेदी	83	10	93
राज्य सिविल सेवा से भा.प्र. सेवा में प्रोन्नत/चयन सूची के अधिकारियों के लिए 108वां प्रवेश कालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	20 सितम्बर से 12 नवम्बर 2010	डॉ. एस.एच. खान डॉ. मनिन्दर कौर द्विवेदी डॉ. (प्रो.) ए.एस. रामचंद्र	31	08	39
राष्ट्रीय सुरक्षा पर 14वां संयुक्त सिविल–सैन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम	17 से 28 मई, 2010	राजेश आर्य डॉ. ए.एस. रामचंद्र मोना भगबती	31	01	32
राष्ट्रीय सुरक्षा पर 15वां संयुक्त सिविल–सैन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम	09 से 20 अगस्त 2010	डॉ. एस.एच. खान डॉ. प्रेम सिंह डॉ. ए.एस. रामचंद्र	39	00	39
वर्तमान प्रशासन में आचार नीति विषयों पर 15वां कार्यक्रम	23 से 27 अगस्त 2010	तेजवीर सिंह डॉ. ए.एस. रामचंद्र	19	02	21
भा.प्र. सेवा के 1960 बैच के अधिकारियों का पुनर्मिलन	16 से 17 सितंबर, 2010	दुष्यंत नरियाला तेजवीर सिंह	29	01	30
केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों का 11वां सम्मेलन	11–12 अक्तूबर 2010	राजेश आर्य	19	04	23
प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों तथा राज्य प्रशिक्षण समन्वयकों का 9वां सम्मेलन	19 मई से 20 मई, 2010	आशीष वाच्छानी	22	02	24
"जिला अस्पतालों में सुधार" विषय पर समग्र गुणवत्ता प्रबंध प्रशिक्षण कार्यक्रम	5 से 9 जुलाई, 2010	डॉ. एस.एच. खान	14	01	15
सीधे प्रशिक्षक दक्षता पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की रूपरेखा	5 से 9 जुलाई, 2010	डॉ. एच.एम. मिश्रा	24	06	30
कानून–व्यवस्था पर संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम	2 से 6 नवम्बर, 2009	राजेश आर्य	28	–	28
आपदा प्रबंधन पर संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम	23 से 27 नवम्बर, 2010	राजेश आर्य	21	–	21
शहरी खंड में पीपीपी पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	07 से 11 मार्च, 2011	आलोक कुमार गौरव द्विवेदी निधि शर्मा	24	02	26
प्रशिक्षण विकास कार्यक्रम	i) 26 से 28 अप्रैल, 2010 ii) 5 से 9 जुलाई, 2010 iii) 17 से 21 अगस्त, 2010	डॉ. एच.एम. मिश्रा	68	14	82
योगः			**954**	**217**	**1171**

अध्याय 3

पाठ्यक्रमों तथा विभिन्न गतिविधियों का विवरण

अकादमी में प्रतिवर्ष कई प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। उनमें से आधारिक पाठ्यक्रम मुख्यतः ज्ञानोन्मुखी है, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में मूलतः दक्षता विकसित करने पर ध्यान दिया जाता है और सेवाकालीन पाठ्यक्रमों में सरकार में वरिष्ठ पद सम्भालने के लिए नीति–निर्माण की क्षमता विकसित करने पर जोर दिया जाता है, विभिन्न वाठ्यक्रमों की संक्षिप्त रुपरेखा नीचे दी गई हैः–

आधारिक पाठ्यक्रम (15 सप्ताह)

इस पाठ्यक्रम में सभी अखिल भारतीय सेवाओं– भारतीय प्रशासन सेवा, भारतीय पुलिस सेवा, भारतीय विदेश सेवा तथा भारतीय वन सेवा के सदस्य के साथ–साथ विभिनन केन्द्रीय समूह के सेवाओं के सदस्यों को भी प्रशिक्षण दिया जाता है। यह पाठ्यक्रम वर्ष में केवल एक बार प्रायः सितम्बर से दिसम्बर तक आयोजित किया जाता है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को देश की संवैधानिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और विधिक संरचना की आधारभूत जानकारी देना है। साथ ही विभिन्न लोक सेवाओं के सदस्यों में संघ–भावना विकसित करने तथा उनके मध्य बेहतर तालमेल स्थापित करने और सहयोग तथा परस्पर निर्भरता को बढ़ाने का प्रयास किया जाता है। चूंकि अधिकारी प्रशिक्षणार्थी सरकार में नव–नियुक्त होते हैं, अतः सुविचारित पाठ्यक्रम की मदद से उन्हें देश के राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और प्रशासनिक परिवेश से परिचित कराया जाता है। वर्ष 2010 के दौरान 85वाँ आधारिक पाठ्यक्रम आयोजित किया गया जिसका विवरण निम्नवत हैः–

85वाँ आधारिक पाठ्यक्रम (30 अगस्त 2010 से 10 दिसम्बर 2010 तक)	
पाठ्यक्रम समन्वयक	श्री गौरव द्विवेदी
सह पाठ्यक्रम समन्वयक	श्रीमती रंजना चोपड़ा, श्री राजेश आर्य, डॉ. प्रेम सिंह, श्रीमती निधि शर्मा
कार्यक्रम का शुभारम्भ	श्रीमती मारग्रेट अल्वा, महामहिम राज्यपाल, उत्तराखंड
समापन भाषण	श्री कमलनाथ, माननीय सड़क परिवहन तथा राजमार्ग मंत्री।
प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी	अखिल भारतीय सेवाओं, रॉयल भूटान वन सेवा के नए भर्ती अधिकारी–प्रशिक्षणार्थीगण
समूह गठन	कुल 277 (198 पुरुष और 79 महिलाएं)

प्रमुख क्रियाकलाप

85वें आधारिक पाठ्यक्रम में 278 अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन्होंने 30 अगस्त 2010 को 15 सप्ताह के दीर्घावधिक कार्यक्रम में भाग लिया जो 10 दिसम्बर 2010 को समाप्त हुआ। इस प्रशिक्षण में अकादमी के संकाय सदस्यों के अतिरिक्त सार्वजनिक जीवन से जुड़े तथा अपने अपने व्यावसायिक क्षेत्र के अग्रणी प्रशिक्षकों तथा वक्ताओं को आमंत्रित किया गया था।

अकादमिक विषयों में अर्थशास्त्र, लोक प्रशासन, प्रंबध, राजनैतिक सिद्धांत और भारत का संविधान, भारतीय इतिहास एवं संस्कृति तथा विधि, प्रमुख थे। कक्षा व्याख्यानों के अलावा हैड्स ऑन प्रोजेक्टस (होप) सत्रांत परीक्षा, पुस्तक समीक्षा, महोत्सवों का आयोजन, भारत दिवस, खेलकूद आदि के माध्यम से सहयोग तथा आत्मनिर्भरता का विकास करते हुए प्रशिक्षण दिया गया। आधारिक पाठ्यक्रम के दौरान 9 दिवसीय हिमालयन ट्रेक, एक सप्ताह का ग्राम प्रवास, भारत दिवस समारोह का आयोजन, खेलकूद, ए.के. सिन्हा स्मारक एकांकी, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा मेले का आयोजन किया गया, जो अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों के लिए यादगार पल थे। अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक गतिविधियां, उनके बीच संबंधों को सृदृढ़ करने में सहायक होती हैं। उन्होंने वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया तथा उसमें भाग लिया, सामाजिक विषयों पर निबंध लिखे तथा क्लबों एवं सोसाइटियों के माध्यम से विविध कार्यकलापों का आयोजन किया। अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों ने अकादमी परिसर में श्रमदान कर साफ–सफाई की तथा अकादमी के आस–पास वृक्षारोपण किया। अकादमी में समुचित सदाचार तथा अनुशासन पर विशेष ध्यान दिया जाता है, और इससे उनके अंदर सिविल सेवा द्वारा वांछित जीवन शैली का निर्माण किया जाता है, ताकि वे सिविल सेवा के अपने कैरियर के दौरान आने वाली चुनौतियों का सामना कर सकें।

प्रशिक्षणार्थियों में छः प्रमुख विषयों का माध्यामिक मूल्यांकन किया गया और उनकी सत्रांत परीक्षा आयोजित की गई, शिक्षा संबंधी तकनीकों में परिचर्चा, प्रबंधन, औपचारिक क्विज प्रतियोगिता आदि के द्वारा परस्पर ज्ञान आदान–प्रदान पर विशेष ध्यान दिया गया। आधारिक पाठ्यक्रम का मूलाधार ऐसे गुणी कर्मियों का विकास करना है जो लोक सेवा के लिए आवश्यक हो तथा आधारिक पाठ्यक्रम में अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों के लिए एक ऐसा वातावरण उपलब्ध कराया जाता है जिससे वे स्वयं को एक परिपक्व तथा आत्म विश्वास से पूर्ण अधिकारी के रुप में विकसित कर सकें।

अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को भाषा का भी गहन प्रशिक्षण दिया जाता है। जिन अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को हिंदी का पर्याप्त ज्ञान नही होता, उन्हें हिंदी भाषा की शिक्षा लेनी होती है। अखिल भारतीय सेवा, भा.प्र. सेवा, भा. पुलिस सेवा भारतीय वन सेवा तथा भा. विदेश सेवा के अधिकारियों को अकादमी में उपलब्ध विकल्पों में से कोई अन्य भाषा सीखने का भी विकल्प दिया जाता है।

अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों के साथ अपने अनुभवों तथा विचारों का आदान–प्रदान के लिए विभिन्न क्षेत्रों में प्रख्यात व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया। अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों द्वारा दैनिक फीडबैक में आंतरिक संकाय सदस्यों एवं अतिथि वक्ताओं का निरंतर उच्च स्तरीय मूल्यांकन किया गया। इस पाठ्यक्रम के कुछ प्रमुख अतिथि वक्ताओं के नाम इस प्रकार है :– भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, डॉ. अजय कुमार, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, मैक्स नीमन इन्टरनेशनल, नई दिल्ली, श्री दिनेश अकुला, कार्यकारी निदेशक, टी.वी.–9 नेटवर्क हैदराबाद, महामहिम राज्यपाल श्री ई.एस.एल. नरसिम्हन, आंध्र प्रदेश सरकार, श्री कमलनाथ माननीय केन्द्रीय परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री, डॉ. किरन सेठ, स्पाइकमैके के संस्थापक अध्यक्ष, महामहिम राज्यपाल, उत्तराखंड, श्रीमती मारग्रेट अल्वा, श्री नवीन जिंदल, सांसद लोकसभा, श्री उमर अब्दुला, मा. मुख्यमंत्री, जम्मू एवं कश्मीर, सुश्री पल्लवी गोविल, भा.प्र.से., प्रधान मंत्री कार्यालय नई दिल्ली; श्री आर.एस. दलाल, पुलिस महानिदेशक, हरियाणा, श्री आर.एस. शर्मा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग, श्री राजदीप सरदेसाई, मुख्य संपादक, आई.बी.एन.18 नेटवर्क, श्री एस.आई. कुरेशी, भारत के मुख्य निर्वाचक आयुक्त, श्री शेखर दत्त, महामहिम राज्यपाल, छत्तीसगढ़, श्री शेखर गुप्ता, मुख्य संपादक, द इण्डियन एक्सप्रेस, श्री सुदीप अहलुवालिया, जिला एवं सत्र न्यायाधीश, पश्चिम बंगाल, श्री वजाहत हबीबुल्लाह, मुख्य सूचना आयुक्त, नई दिल्ली।

85वें आधारिक पाठ्यक्रम के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों का संक्षिप्त विवरण परिशिष्ट – I में दिया गया है।

भा.प्र. सेवा व्यावसायिक पाठ्यक्रम, चरण– I (26 सप्ताह)
(14 दिसम्बर, 2009 से 11 जून 2010 तक)

आधारिक पाठ्यक्रम पूरा कर लेने के बाद अधिकारी प्रशिक्षणार्थी व्यावसायिक पाठ्यक्रम चरण– I का प्रशिक्षण लेते हैं। पाठ्यक्रम का लक्ष्य यह रहता है कि भा.प्र.से. के अधिकारी उस परिवेश को अच्छी तरह समझ लें जिसमें उन्हें काम करना होगा और उन जीवन–मूल्यों, आदर्शों तथा गुणों को विकसित कर लें जिनकी उनसे अपेक्षा की जाती है। लोक प्रशासन, विधि, अर्थशास्त्र और कम्प्यूटर अनुप्रयोग के आधारिक ज्ञान के अलावा लोक व्यवस्था और उनके प्रबंधन को समझने पर विशेष बल दिया जाता है। चरण– I प्रशिक्षण के दौरान, भा.प्र. सेवा के प्रशिक्षणार्थी को शीतकालीन अध्ययन के लिए भी भेजा जाता है। इस अवधि में उन्हें तीनों सशस्त्र सेनाओं, पब्लिक सेक्टर, प्राइवेट सेक्टर, नगरपालिका, स्वैच्छिक अभिकरण, जनजातीय क्षेत्र, ई–गवर्नेंस और गैर–सरकारी संगठन इत्यादि से भी संबंद्ध किया जाता है। सशस्त्र सेनाओं के साथ उन सेवाओं को बेहतर ढंग से समझने का अवसर प्राप्त होता है। शीतकालीन अध्ययन के दौरान, प्रशिक्षणार्थियों को संसदीय अध्ययन और प्रशिक्षण ब्यूरो के साथ भी प्रशिक्षण दिया जाता है जहां वे संवैधानिक पदों पर आसीन विशिष्ट व्यक्तियों से मुलाकात करते हैं।

ये सहयोजन अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को भारत की विविधता का अनुभव कराते हैं। इस दौरान उन्हें विभिन्न संगठनों की कार्यप्रणाली को निकटता से देखने और समझने का भी अवसर मिलता है। इसके पश्चात् अधिकारियों को नियमित कक्षा प्रशिक्षण लेना होता है। इन कक्षाओं में उन्हें भारत सरकार द्वारा अनुमोदित पाठ्यक्रम के अनुसार लोक प्रशासन, प्रबंध, विधि, कम्प्यूटर और अर्थशास्त्र पर व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है। चरण– I प्रशिक्षण पूरा होने पर भा.प्र. सेवा के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को, एक वर्ष के जिला प्रशिक्षण के लिए भेजा जाता है।

पाठ्यक्रम समन्वयक	श्री दुष्यंत नरियाला, उपनिदेशक वरिष्ठ, पाठ्यक्रम समन्वयक
सहपाठ्यक्रम समन्वयक	डॉ. मनिन्दर कौर द्विवेदी, श्री आशीष वच्छानी, श्री राजेश आर्य
कार्यक्रम प्रतिभागी / समूह	भा.प्र.सेवा अधिकारियों के लिए भा.प्र.से. व्यावसायिक प्राठ्यक्रम, चरण– I
समूह गठन	कुल 120 जिनमें रॉयल भूटान सिविल सेवा के 3 अधिकारी भी शामिल है। (89 पुरुष और 31 महिलाएं)
समापन भाषण	श्री पदमवीर सिंह, निदेशक, ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी, मसूरी।

प्रस्तावना

ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी में भा.प्र. के 2009 बैच के चरण– I कार्यक्रम में 113 अधिकारी प्रशिक्षणार्थी थे। आर.डब्ल्यू अय्यर समिति के बाद किये गये विषय–वस्तु में संशोधन के अनुसार 2009 के चरण– I पाठ्यक्रम का संचालन किया गया। परिवर्तन के इस चरण में कतिपय विषय शामिल किये गये।

अभिनव प्रयास

मॉड्यूलर तथा बाह्य क्रियाकलाप केन्द्रित प्रशिक्षण

इस पाठ्यक्रम में सुव्यवस्थित मॉड्यूलर के रूप में प्रशिक्षण प्रदान किया गया जिसमें विषय–वस्तु के बारे में पाठ्यक्रम टीम की प्राथमिकताओं तथा प्रत्येक विषय का गहराई से छानबीन करने कि आवश्यकता बताई गई। इससे पाठ्यक्रम में सुधार हुआ।

विधि, भाषाएं, अर्थशास्त्र (परिमाणात्मक दक्षताएं) तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी पर नियमित कक्षाएं संचालित की गईं और इसके साथ ही बाह्य प्रशिक्षण या केवल मॉड्यूल आधारित प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया।

स्व–अध्ययन

अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को सूचना को लिखित एवं मौखिक दोनों रूपों में आत्मसात, अनुसंघान, संकलन, प्राप्ति तथा प्रस्तुति पर काफी जोर दिया गया। उन्हें काफी सोच–विचार कर लगभग 4200 पृष्ठों की पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराई गई। इस पाठ्यक्रम के दौरान उन्हें उपलब्ध कराई गई समस्त पाठ्यसामग्री की विवरणिका अकादमी पुस्तकालय में उपलब्ध है।

नियमित भाषा परीक्षाएं

राज्य–विनिर्दिष्ट प्रशिक्षण के लिए भाषा शिक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है और पाठ्यक्रम टीम ने इसको सुदृढ़ करने का पूर्ण प्रयत्न किया। भाषा समन्वयक के कुशल नेतृत्व में भाषाओं की कक्षाएं संचालित की गई तथा भाषा दक्षता हेतु चरणबद्ध तरीके से तीन परीक्षाएं भी ली गईं, जिससे अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों का अपने राज्य संवर्ग की भाषा सीखने तथा नए राज्य में काम करने की दिशा में आत्मविश्वास बढ़ा है। परिणामों से उल्लेखनीय प्रगति दिखाई दी, जिसमें राज्य में उनके प्रशिक्षण के दौरान और अधिक प्रगति होगी। इस पाठ्यक्रम में अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को अपने परामर्शदाता के समक्ष कुछ मिनट के लिए अपनी भाषा में अपना आलेख प्रस्तुत करने को भी कहा गया, जिसमें उन्हें अपने कार्य को अपने राज्य संवर्ग की भाषा में रूपांतरित करने का विश्वास पैदा हो सके।

अनुशासन तथा उपस्थिति पर विशेष ध्यान

इस पाठ्यक्रम में अधिकारियों प्रशिक्षणार्थियों की उपस्थिति तथा उनका अनुशासन उत्कृष्ट स्तर का रहा है। भा.प्र. सेवा के 2009 बैच में आचरण तथा अनुशासन के संदर्भ में सामान्य आकलन काफी सकारात्मक रहा।

भा.प्र.से. चरण–। (2009–2011) बैच के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों का संक्षिप्त विवरण परिशिष्ट–3 में दिया गया है।

जिला प्रशिक्षण (52 सप्ताह)

इस प्रशिक्षण के दौरान अधिकारी प्रशिक्षणार्थी जिला स्तर पर प्रशासन के विविध पक्षों के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं। इस अवधि में वे जिला कलेक्टर और राज्य सरकारों के सीधे नियंत्रण में रहते है और कलेक्टर/जिला मजिस्ट्रेट तथा राज्य सरकार की अन्य संस्थाओं के कार्यों की प्रारंभिक जानकारी प्राप्त करते हैं। प्रशिक्षण काल में उन्हें विभिन्न क्षेत्र–स्तरीय कार्यों का स्वतंत्र प्रभार संभालने का अवसर भी मिल सकता है। इसके अलावा, जिला प्रशिक्षण के दौरान अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को अकादमी द्वारा सौंपे गए कार्य भी करने होते हैं, जो जिलों में फील्ड अध्ययन पर आधारित होते हैं।

अकादमी द्वारा नामित संवर्ग परामर्शदाता पत्राचार द्वारा, वहां का दौरा करके और उनके कलेक्टर से मिलकर, प्रशिक्षणार्थियों से संपर्क बनाए रखते हैं।

भा.प्र. सेवा व्यावसायिक पाठ्यक्रम, चरण–।। (8 सप्ताह)
अवधि : 16 जून से 20 अगस्त, 2010 तक

आधारिक पाठ्यक्रम और चरण–। पाठ्यक्रमों में, अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को सैद्धांतिक पक्षों की जानकारी दी जाती है, और जिला प्रशिक्षण में उन्हें बुनियादी वास्तविकताओं का अध्ययन करना होता है। चरण–।। में, देशभर के अनुभवों का आदान–प्रदान किया जाता है, जब अधिकारी प्रशिक्षणार्थी अपने–अपने जिले से तरह–तरह के अनुभव लेकर अकादमी में लौटते हैं। चरण–।। पाठ्यक्रम की रूपरेखा इस प्रकार तैयार की जाती है कि अधिकारी प्रशिक्षणार्थी वर्ष के दौरान राज्य तथा जिला स्तर के सहयोजनों से हासिल ज्ञान और जिला अनुभवों का, पूर्व में प्राप्त सैद्धांतिक ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण कर सकें। यह पाठ्यक्रम अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को अकादमी में प्राप्त ज्ञान के संदर्भ में क्षेत्र की वास्तविकताओं के पुनः परीक्षण का अवसर प्रदान करता है। चरण–।। पाठ्यक्रम में मुख्य रूप से इस बात पर ध्यान दिया जाता है कि अधिकारी प्रशिक्षणार्थी जिला प्रशिक्षण से प्राप्त अनुभवों के आधार पर प्रशासन से जुड़े मुद्दों को समझें और उन समस्याओं के प्रति सचेत हो जाएं, जिनका सामना उन्हें अपने सेवाकाल के प्रारंभिक वर्षों में करना है।

पाठ्यक्रम टीम	श्रीमती जसप्रीत तलवार, पाठ्यक्रम समन्वयक
सह पाठ्यक्रम समन्वयक	श्रीमती मोना भगबती, श्री गौरव द्विवेदी, श्री राजेश आर्य
पाठ्यक्रम परिचय	भा.प्र. सेवा के अधिकारियों के लिए मुख्य अकादमी पाठ्यक्रम चरण–।।
पाठ्यक्रम प्रतिभागी	भा.प्र. सेवा के अधिकारियों के लिए भा.प्र. सेवा व्यावसायिक पाठ्यक्रम चरण–।।
समूह गठन	कुल 114 जिनमें रॉयल भूटान सिविल सेवा के 2 अधिकारी भी शामिल हैं। (82 पुरुष और 32 महिलाएं)
समापन भाषण	श्री पदमवीर सिंह, अकादमी के निदेशक

भा.प्र.से. चरण–।।, 2008 बैच के अतिथि वक्ताओं की सूची

डॉ. ए. काकोदकर, पूर्व अध्यक्ष ए.ई.सी. तथा होमी भाभा पीठ, भाभा परमाणु अनुसंघान केन्द्र ट्रॉम्बे, मुंबई, श्री विक्रम के. चंद, वरिष्ठ सार्वजनिक क्षेत्र प्रंबधन विशेषज्ञ, विश्व बैंक, नई दिल्ली, श्री आर.एस. शर्मा, महानिदेशक एवं मिशन निदेशक, यूनीक आइडेंटिफिकेशन ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, श्री एस.आर. राव, अपर सचिव, भारत सरकार, सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, नई दिल्ली, श्री ए.के. सिंह, निदेशक (भूमि सुधार) भू–संसाधन विभाग, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, श्री आर.के. वर्मा, प्रंबध निदेशक, पंजाब इन्फोटेक, चण्डीगढ़ (पंजाब), प्रो. ए.बी. सूरज, विधि एवं लोक नीति, भारतीय प्रबंध संस्थान, बंगलूरु, श्री राज चिंगप्पा, मुख्य संपादक, ट्रिब्यून, चण्डीगढ़, डॉ. अमरजीत सिंह, भा.प्र.से., कार्यकारी निदेशक, जनसंख्या स्थिरता कोष, नई दिल्ली, सुश्री रितु सेन, भा.प्र.से., कलेक्टर, कोरिया (छत्तीसढ़), श्री रोहित यादव, भा.प्र.से., निदेशक, तकनीकी शिक्षा, रोजगार एवं प्रशिक्षण, तकनीकी शिक्षा निदेशालय पॉलीटैक्निक, रायपुर, छत्तीसगढ़, श्री हेमन्त कुमार गेरा, भा.प्र.से., कलेक्टर भरतपुर (राजस्थान), श्री माधव चवान, सह संस्थापक, न्यासी एवं निदेशक, कार्यक्रम, 'प्रथम', मुंबई, सुश्री निधि शर्मा, भा.रा.से., उपनिदेशक, आयकर (अवसंरचना), नई दिल्ली (शिविरः ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी, मसूरी, श्री मनीष मोहन, निदेशक, प्रशासनिक सुधार एवं लोक शिकायत विभाग, नई दिल्ली, श्री आर.सी. भार्गव, अध्यक्ष, मारुति सुजूकी इंडिया लि. नई दिल्ली, श्री कृष्ण कुमार, भा.प्र.से., महानिदेशक, विद्यालयी शिक्षा, पंजाब सरकार, विद्यालयी शिक्षा विभाग, चंडीगढ़, पंजाब, डॉ. वंदना शर्मा, उप महानिदेशक जी.आई.एस. एवं सुदूर संवेदी प्रभाग, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, नई दिल्ली, श्री आर. साईनाथ, तकनीकि निदेशक, जी.आई.एस. एवं सुदूर संवेदी प्रभाग, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, नई दिल्ली, श्री राज शेखर, भा.प्र.से., जिला मजिस्ट्रेट एवं कलेक्टर, झांसी, उत्तर प्रदेश, सुश्री नीता चौधरी, भा.प्र.से., सदस्य (न्यायिक) राजस्व परिषद, उत्तर प्रदेश, लखनऊ, श्री अमित ढाका, भा.प्र.से., ए.डी.सी. (विकास) मुक्तसर, पंजाब सरकार, पंजाब, सुश्री जयति चन्द्रा, भा.प्र.से., सचिव, भारत सरकार, पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, श्री राजेन्द्र कुमार, भा.प्र.से., प्रधान सचिव, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार, सुश्री निधि शर्मा, भा.प्र.से., उपनिदेशक, आयकर (अवसंरचना),नई दिल्ली, श्री के. राजीवन, परामर्शदाता, उत्तरा, चेन्नई, श्री रामनाथ झा., मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं प्रबंध निदेशक, खेड़ इकोनोमिक इन्फ्रास्ट्रक्चर, प्रा.लि. पुणे, श्री असीम गुप्ता, अपर नगर आयुक्त, नगर निगम, वृहद् मुंबई, श्री संतोष वैद्य, सचिव, नई दिल्ली नगर निगम, दिल्ली, सुश्री अरुणा रॉय, समाजिक कार्यकत्री, मजदूर किसान शक्ति संगठन, राजसमंद, राजस्थान, सुश्री वीणा एस. राव.भा.प्र.से. (सेवानिवृत्त), कर्नाटक न्यूट्रीशन मिशन, कर्नाटक भवन, नई दिल्ली, श्री श्याम शरण, पूर्व विदेश सचिव, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली, श्री जी.के. पिल्लै, गृह सचिव, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली, श्री एल.सी. सिंघी, भा.प्र.से., आयुक्त एवं सचिव, असम सरकार सचिवालय, गुवाहटी, डॉ. मृत्युंजय सांरगी, भा.प्र.से., अपर सचिव, भारत सरकार, मंत्रिमंडल सचिवालय, नई दिल्ली, डॉ. बी. अशोक, भा.प्र.से., कृषि, उपभोक्ता मामले, सार्वजनिक वितरण राज्यमंत्री के निजी सचिव, कृषि भवन, नई दिल्ली, श्री के. दुर्गा प्रसाद, अपर पुलिस महानिदेशक (प्रशिक्षण) आंध्र–प्रदेश, पुलिस महानिदेशक कार्यालय हैदराबाद, मिस्टर जेफरी एस. हैम्मर, चार्ल्स एंड मैरी रॉबर्ट्सन विजिटिंग प्रोफेसर इन इकोनोमिक्स डेवलपमेंट, वुडरो विल्सन स्कूल ऑफ पब्लिक एंड इन्टरनेश्नल अफेयर्स, प्रिंसटन यूनीवर्सिटी, प्रिंसटन, न्यूजर्सी (यूएसए)।

भा.प्र.सेवा के अधिकारियों के लिए मिडकैरियर प्रशिक्षण कार्यक्रम

यह चरण–IV तथा V पाठ्यक्रम, क्रमशः 14–16 वर्ष तथा 7–9 वर्ष की सेवा पूरी कर चुके भा.प्र. सेवा के अधिकारियों के लिए अनिवार्य पाठ्यक्रम है। अधिकारी की सेवा में कुछ स्तरों पर प्रोन्नति के लिए यह कार्यक्रम अनिवार्य है, अतः इस प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेना अधिकारियों के हित में है। भारत सरकार ने 20 मार्च 2007 की अधिसूचना द्वारा भा.प्र.सेवा (वेतन) नियमावली, 1954 में संशोधन किया है, जिसमें सेवा के विभिन्न चरणों में इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक पूरा करना शामिल किया गया है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य अधिकारियों में अगले स्तर हेतु दक्षता का विकास करना है। चरण–।।। कार्यक्रम की अवधि 08 सप्ताह है और इसका आयोजन संयुक्त रूप से ड्यूक विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय ड्यूक सेन्टर एवं ला.ब.शा.रा. प्रशासन अकादमी द्वारा किया जाता है। कार्यक्रम में मुख्यतः क्षमता विस्तार के अतिरिक्त परियोजना निर्माण और मूल्यांकन पर ध्यान दिया जाता है।

भा.प्र.से. व्यावसायिक पाठ्यक्रम चरण–।।। (चक्र–4)
(7 जून से 30 जुलाई, 2010)

पाठ्यक्रम शीर्षक	• भा.प्र.सेवा का चरण।।। मिड कैरियर प्रशिक्षण कार्यक्रम
अवधि एवं तिथि	• 7 जून से 30 जुलाई, 2010 (8 सप्ताह) • विदेश अध्ययन दौरा दक्षिण कोरिया 4 से 16 जुलाई 2010 (2 सप्ताह)
अकादमी की पाठ्यक्रम टीम	• श्री तेजवीर सिंह, उपनिदेशक (व.) पाठ्यक्रम समन्वयक • श्री आशीष वच्छानी तथा डॉ. प्रेम सिंह, उपनिदेशक सह पाठ्यक्रम समन्वयक
पाठ्यक्रम परिचय	• कार्यक्रम का उद्देश्य लगभग् 8–10 वर्ष की वरिष्ठता • प्राप्त भा.प्र.सेवा अधिकारियों को कार्यक्रम कार्यान्वयन तथा लोक सेवाएं प्रदान करने संबंधी विषय पर प्रकाश डालते हुए कार्यक्रम नियत करने में उन्हें आवश्यक दक्षता प्रदान करके अगले स्तर के लिए सामर्थ्यवान बनाना है। • इसमें शासन के अधिकांश क्षेत्रों के बारे में उनके ज्ञान का अद्यतन करने की कोशिश की जाती है।
कार्यक्रम के प्रतिभागी	• 1998, 1999, 2000, 2001 तथा 2002 बैच के भा.प्र.से. के अधिकारी।
समूह गठन तथा महिला एवं पुरुष अधिकारियों का ब्यौरा	• कुल प्रतिभागी – 93 भा.प्र.से. अधिकारी • महिलाएं – 14 पुरुष 79
कार्यक्रम का शुभारंभ	• डॉ. किरीट पारेख, ''इंडियन इकोनोमी चैलेन्जेज एंड प्रोस्पेक्ट्स'' संबंधी विषय पर योजना आयोग के पूर्व सदस्य।
समापन भाषण	• श्री जी.के.पिल्लै, केन्द्रीय गृह सचिव

कार्यक्रम का उद्देश्य

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य, क्षेत्र स्तर पर कार्यान्वयन करने वाले कनिष्ठ मध्य स्तरीय भा.प्र.सेवा. के अधिकारियों को कार्यक्रम निर्धारण तथा उसके प्रभावपूर्ण तरीके से कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए तैयार करना है।

अकादमी संकाय

श्री पदमवीर सिंह, श्री पी.के.गेरा, श्री संजीव चोपड़ा, श्री आलोक कुमार, श्री दुष्यंत नरियाला, श्रीमती जसप्रीत तलवार, श्री गौरव द्विवेदी, डॉ. मनिन्दर कौर द्विवेदी, श्री राजेश आर्य, डॉ.एस.एच. खान, श्री आशीष वच्छानी, डॉ. प्रेम सिंह और श्री तेजवीर सिंह।

आई.आई.एम अहमदाबाद संकाय

प्रो. सेबेस्टियन मोरिस, प्रो. रविन्द्र ढोलकिया, प्रो. जी रघुराम, प्रो. प्रेम पंगोत्रा, प्रो. अजय पाण्डेय, प्रो. निहारिका वोहरा, डॉ. सोमेश अग्रवाल, डॉ. अंकुर सारीन, डॉ. नवदीप माथुर।

अतिथि संकाय

डॉ. किरीट पारिख, श्री सलमान खुर्शीद, श्री मनप्रीति सिंह बादल, श्री भारतेन्द्र बसवान, श्री जी.के. पिल्लै, डॉ. प्रजापति द्विवेदी, श्रीमती अरुणा राय, डॉ. अनिल के काकोदकर, श्री श्याम सरन. अम्बेसडर, के.सी. सिंह, प्रो. लैंट प्रीचेट, डॉ. एन.सी. सक्सेना, श्री बजाहत हबीबुल्लाह, श्री शेखर सिंह, श्री नजीब जंग, श्री राज चेंगप्पा, डॉ. विक्रम के. चंद, श्री टी.आर. रघुनन्दन, श्री माघव चवान, श्री के. राजू., श्री टी. विजयकुमार, श्री रामनाथ झा, श्री के. राजीवन, डॉ. एस. भवानी, प्रो. श्यामल रॉय, श्री आर.एस. शर्मा, श्रीमती सरोजनी जी. ठाकुर, डॉ. अरबेंदु सरकार, श्री ए.के. सिंह, श्री एस. आर. राव, श्री उपेन्द्र त्रिपाठी, श्री आर.के. वर्मा, श्री के.एल. शर्मा, डॉ. अनिल सूरज, डॉ. अमरजीत सिंह, श्री निखिल डे, डॉ. तम्माराव, डॉ. पदमनाभन, डॉ. दिनेश अरोड़ा, श्रीमती अनीता कौल, डॉ. अरुणीश चावला, श्री टी.के. जोस, श्री मनोज कुमार, श्री सचिन मार्डीकर, कमोडोर, एस. पी.एस. दलाल, श्री असीम कुमार गुप्ता, प्रो. विनोद व्यासुलु, डॉ. शंकरा जंड्याला, श्री संजय दुबे, सुश्री स्टेसी मैकनल्टी, श्री विन्ह दु नगुयेन, श्री अनुराग अग्रवाल, श्री विवेक सिंगला, श्री राकेश शर्मा और श्री के.के. सबरवाल।

चरण–।।। प्रतिभागियों का संक्षिप्त विवरण परिशिष्ट–।। में दिया गया है।

भा.प्र.से. व्यावसायिक पाठ्यक्रम चरण–IV (2010)
(4 अक्तूबर से 26 नवंबर, 2010)

मिड कैरियर विदेश दौरे की अवधि	• विदेश अध्ययन दौरा– दक्षिण कोरिया 22 अक्टूबर से 5 नवम्बर, 2011 (2 सप्ताह) • पाठ्यक्रम का आयोजन, मसूरी अकादमी में किया गया।
अकादमी की पाठ्यक्रम टीम	• श्री संजीव चोपड़ा, संयुक्त निदेशक, पाठ्यक्रम समन्वयक • श्री तेजवीर सिंह एवं श्रीमती जसप्रीत तलवार, उपनिदेशक (वरिष्ठ), सह पाठ्यक्रम समन्वयक
पाठ्यक्रम परिचय	• इस कार्यक्रम का उद्देश्य, लोक नीति निर्धारण के क्षेत्र में भावी कार्यो के लिए अधिकारियों को तैयार करना है। तदनुसार नीति विश्लेषण, नीति क्रियान्वयन तथा अभ्यास, लोक प्रबंध तथा नेतृत्व निर्माण इसके मुख्य घटक हैं। • इसमें शासन के अधिकांश क्षेत्रों में उनकी जानकारी को अद्यतन करने की भी कोशिश की गई है।
कार्यक्रम के प्रतिभागी	• इसमें 1991, 1992, 1993, 1995 बैच के भा.प्र.से. के अधिकारियों ने भाग लिया।
समूह गठन तथा महिला एवं पुरुष अधिकारियों का ब्यौरा	• कुल प्रतिभागी – 64 भा.प्र.से. अधिकारी • महिलाएं – 54 पुरुष 10 • एस.एल.ए.एस. प्रतिभागी – 4 • अवशेष प्रतिभागी – 4
कार्यक्रम का शुभारंभ	• श्री पदमवीर सिंह, निदेशक, ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी द्वारा उद्घाटन भाषण
समापन भाषण	• श्री जी.के.पिल्लै, केन्द्रीय गृह सचिव

कार्यक्रम का उद्देश्य, इनपुट तथा प्रमुख अतिथि संकाय

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य, कार्यक्रम प्रबंध को प्रभावी तथा उत्तरदायित्व पूर्ण नीति निर्धारण तथा प्रवर्तक बनाने में अधिकारियों की सहायता करना था। कार्यक्रम का लक्ष्य, प्रतिभागियों की रणनीति प्रबंधन एवं नेतृत्व कौशल का विकास करना तथा राजनैतिक अर्थनीति का समाधान ढूढंने में उनकी दक्षता को बढ़ाना है। इसे निम्नलिखित माध्यम से हासिल किया गयाः

- अपने विगत कार्यक्रमों तथा परियोजना अनुभवों को सुदृढ़ करना तथा उनसे सीख लेना।
- वैश्विक, राष्ट्रीय तथा राज्यस्तरीय नीतियों की गहन समझ विकसित करना।
- क्षेत्रविशेष की विस्तृत जानकारी, अवधारणा तथा साधन के साथ–साथ नीतिगत परिदृष्य उपलब्ध कराना।

पाठ्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों ने निम्नलिखित क्षेत्रों में योग्यता हासिल की–

- वैश्विक तथा राष्ट्रीय स्तर पर राजनैतिक अर्थनीति के क्षेत्र में समकालीन विकास का मूल्यांकन करने में।
- लोकनीति निर्धारण, विश्लेषण तथा मूल्यांकन की प्रक्रिया समझने में।
- लोकनीति की प्रक्रिया के संदर्भ में प्रभावी जानकारी बढ़ाने में।
- नेतृत्व एवं समझौता–वार्ता दक्षता बढ़ाने और
- शासन में मूल्यों की केन्द्रीयता का मूल्यांकन करने में।

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

- पहला सप्ताह – परिदृष्य निर्माण
- दूसरा तथा तीसरा सप्ताह – आई.आई.एम, बंगलूरु द्वारा लोकनीति संबंधी मॉडयूल, जिनमें भारत की समसामायिक आर्थिक रणनीति, नीति निर्धारण तथा क्रियान्वयन शामिल हैं।
- चौथा तथा पांचवां सप्ताह – दक्षिण कोरिया के लिए विदेश अध्ययन दौरा (कोरियन डेवलपमेंट इंस्टीटूट, सीयोल के सहयोग से)

- छठा सप्ताह – ऐच्छिक (स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास, विकेन्द्रीकरण एवं कृषि तथा शहरी विकास) तथा नेतृत्व संबंधी इनपुट।
- सातवां सप्ताह – ऐच्छिक (शिक्षा; अवसंरचना एवं पी.पी.पी; तथा लोक वित्त) तथा समझौता–वार्ता संबंधी कार्यशाला।
- आठवां सप्ताह – राष्ट्रीय सुरक्षा; ई–गवर्नेंश, जन सेवा प्रदायगी तथा नीतिगत दस्तावेजों की प्रस्तुति।

संकाय

इस पाठ्यक्रम में अकादमी के संकाय सदस्यों तथा आई.आई.एम, बंगलूरु, राष्ट्रीय लोक वित्त एवं नीति संस्थान, नई दिल्ली से आमंत्रित, प्रख्यात शिक्षाविदों तथा विशेषज्ञों और प्रख्यात अतिथि वक्ताओं ने व्याख्यान दिए, जिनमें वरिष्ठ नेता, अर्थशास्त्री, सेवारत तथा सेवानिवृत्त सिविल सेवक और सम्मानित क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल हैं। अकादमी के संकाय सदस्यों ने पाठ्यक्रम से संबंधित अन्य सत्रों के अलावा कुल 30 प्रतिशत से अधिक सत्रों में व्याख्यान दिए।

अकादमी संकाय

श्री पदमवीर सिंह, श्री संजीव चोपड़ा, श्री तेजवीर सिंह, श्रीमती जसप्रीत तलवार

अतिथि वक्ता

श्री अभिजीत सेन, श्री अमरजीत सिंह, श्री अमरजीत सिन्हा, श्री अमित कौशिक, सुश्री अरुणा राय, श्री बी.सी. खातवा, श्री बी.एस. बासवान, श्री दिग्विजय सिंह, डॉ. मृगेश भाटिया, डॉ. अजोय कुमार, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, डॉ. विबके देबरॉय, डॉ. देबाशीष चटर्जी, डॉ. हरप्रीत कौर, डॉ. इशर जज अहलूवालिया, डॉ. जे.बी.जी. तिलक, डॉ. जगनारायण सहाय, डॉ. निशांत जैन, डॉ. पी.आर. जेना, डॉ. पीटर मैकलॉलिन, डॉ. प्रजापति त्रिवेदी, डॉ. संजीव चोपड़ा, डॉ. सतीश बी. अग्निहोत्री, डॉ. तापस सेन, डॉ. टी.वी. सोमनाथन, दुर्गा प्रसाद दुब्बरी, श्री जी.के.पिल्लै, श्री गजेन्द्र हल्दिया, श्री के. राजीवन, श्री कबीर वाजपेयी, श्री के.सी. सिंह, श्री के.एल. शर्मा, श्री के.टी. चाको, श्री के.एम. रामचन्द्रन, श्री एम.पी. विजयकुमार, श्री मनोज पंत, श्री माक्र जॉन्सन, सुश्री एस. अपर्णा, सुश्री अनीता कौल, सुश्री अनीता रामपाल, श्री एन.सी. सक्सेना, श्री निखिल डे, सुश्री निर्मला बुच, श्री प्रजापति त्रिवेदी, श्री राजेन्द्र कुमार, प्रो. भरत कर्नाड, प्रो. कुलदीप माथुर, प्रो.वी. श्रीनिवास चैरी, श्री आर.एस. शर्मा, श्री आर.वी.वैधनाथ अय्यर, श्री राघव बहल, श्री रामनाथ झा, श्री रमेश रामनाथन, सुश्री रोहिणी मुखर्जी, श्री एस.वाई. कुरैशी, श्री समीर शर्मा, श्री शंकर अग्रवाल, श्री शेखर गुप्ता, श्री रमेश रामनाथन, श्री शिशिर प्रियदर्शी, श्री शिवेन्द्र मोहन सिंह, श्री एम.एम. विजयानन्द, श्री सौरव मुखर्जी, श्री सुभाशचन्द्र खुंटिया, सुश्री सूशन रिफकिन, सुश्री स्वाति रामनाथन, श्री टी. नन्दकुमार, श्री टी. विजयकुमार, श्री टी..के.जोस, श्री विक्रम के. चन्द, श्री विनोद राय, श्री यशवंत सिन्हा।

आई.आई.एम. अहमदाबाद

प्रो. सेबेस्टियन मोरिस, प्रो. अजय पांडे, प्रो. जी रघुराम, प्रो. रेखा जैन

आई.आई.एम. बंगलूरु संकाय

डॉ. चिरंजीव सेन, डॉ. ए. दामोदरन, प्रोफेसर, प्रो. एन आर माधव मेनन, डॉ. एम.वी. राजीव गौड़ा, डॉ. वी. रंगनाथन, डॉ. सौरव मुखर्जी, प्रो. अनिल बी. सूरज, डॉ. श्यामल राय, डॉ. आर.वी. वैद्यनाथ अय्यर, डॉ. एम. जयदेव, डॉ. राजलक्ष्मी वी. मूर्ति, श्री जी. रमेश, डॉ. पंकज चन्द्रा, डॉ. पुलक घोष।

राष्ट्रीय लोक वित्त एवं नीति संस्थान, नई दिल्ली।

एम. गोविन्दराव, डॉ. कविता राव, श्री पी.के. जेना, डॉ. जहांगीर अज़ीज, सुश्री पिनाकी चक्रवर्ती, श्री तापस जैन

भा.प्र.सेवा का व्यावसायिक पाठ्यक्रम चरण V (2010)
(12 दिसम्बर, 2010 से 14 जनवरी, 2011)

चरण V

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी में आयोजित किया जाने वाला यह पहला चरण –V कार्यक्रम था । यह पहला चरण–V कार्यक्रम था जिसमें विदेश परिचय वाले घटक को शामिल किया गया ।

लक्ष्य

26 वर्ष की सेवा पूर्ण कर चुके अधिकारियों के लिए रणनीति बनाने और उसके व्यापक कार्यन्वयन हेतु प्रभावी रूपांतरण करवाना ।

पाठ्यक्रम का शीर्षक	• भा.प्र.सेवा के अधिकारियों के लिए मध्यावधि कैरियर प्रशिक्षण कार्यक्रम चरण V
अवधि एवं तिथि	• 12 दिसम्बर 2010 से 14 जनवरी, 2011 तक (पाँच सप्ताह) • विदेश अध्ययन दौरा हावर्ड केनेडी स्कूल, बोस्टन 12 दिसम्बर से 17 दिसम्बर, 2010 (एक सप्ताह) • पाठ्यक्रम, अकादमी, मसूरी में आयोजित किया गया।
अकादमी की पाठ्यक्रम टीम	• श्री पी.के. गेरा, संयुक्त निदेशक, पाठ्यक्रम समन्वयक • श्री आलोक कुमार एवं डॉ. मनिन्दर कौर द्विवेदी, पाठ्यक्रम सह समन्वयक
लक्ष्य समूह	• 1979,1980,1981, 1982, 1983 बैंचों से लिए गए भा.प्र.सेवा के अधिकारी
समूह गठन – प्रतिनिधिक सेवा और पुरूष/महिला अधिकारियों का विवरण	• यू.एस.ए. परिचय भ्रमण 92, पुरुष –80, महिलाएं –12 • कुल प्रतिभागी–93 भा.प्र.सेवा अधिकारी • पुरुष –83, महिलाएं –10 • श्रीलंका प्र. सेवा के अधिकारी – 02
कार्यक्रम का उद्घाटन	• श्री पदमवीर सिंह, निदेशक, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी
समापन भाषण	• श्री पदमवीर सिंह, निदेशक, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी

उद्देश्य

पाठ्यक्रम की समाप्ति पर, प्रतिभागियों में –

- भावी चुनौतियों का सामना करने के लिए सेक्टरल रणनीतियों के निर्धारण की दृष्टि से वैश्विक तथा राष्ट्रीय परिदृष्य का विकास ।
- अंतर सेक्टरल नीति डिजायन तथा क्रियान्वयन की महत्ता की समझ ।
- अपने कार्य परिवेश में प्रभावी नेतृत्व प्रदान करना ।
- अपने सहयोगियों के अनुभवों से सीखना ।
- नीति निर्धारण तथा क्रियान्वयन हेतु सेवा नेटवर्क की आवश्यकताओं का प्रबलन ।

पाठ्यक्रम स्वरूप

सप्ताह 1 – हार्वर्ड केनेडी स्कूल, बोस्टन में वैश्विक परिदृष्य तथा नेतृत्व ।

सप्ताह 2 एवं 3 – आई.आई.एम. अहमदाबाद द्वारा पूर्वी एशियाई तथा क्षेत्रीय परिदृष्य जिसमें भारत की वर्तमान आर्थिक तथा सामाजिक सेक्टर रणनीतियों, रणनीति निर्धारण तथा क्रियान्वयन को शामिल किया गया ।

सप्ताह 4 एवं 5 – राष्ट्रीय सुरक्षा, विश्व व्यापार संगठन तथा व्यापार, ई–गर्वेनेन्श, सार्वजनिक सेवा प्रदायगी तथा रणनीति आलेखों का प्रस्तुतिकरण ।

संकाय

इस पाठ्यक्रम में अकादमी के आंतरिक संकाय, ख्याति प्राप्त शिक्षाविदों तथा आई.आई.एम. अहमदाबाद के विशेषज्ञों और प्रख्यात अतिथि वक्ताओं ने व्याख्यान दिए जिसमें वरिष्ठ नेतागण, अर्थशास्त्री, सेवारत तथा सेवानिवृत्त सिविल सेवक तथा विषय विशेषज्ञ शामिल थे । अकादमी संकाय में पाठ्यक्रम संबंधित सत्रों के अलावा शिक्षण सामग्री भी उपलब्ध कराई ।

अतिथि वक्ता

श्री एन.एन. वोहरा, श्री आर. सी. अय्यर, डॉ. शशि थरूर, श्री विक्रम के. चन्द, श्री एस.आर. राव, श्री सुभाष भटनागर, श्री के.सी. सिंह, श्री विक्रम मेहता, डॉ एन.सी. सक्सेना, डॉ. प्रजापति त्रिवेदी, डॉ. राहुल खुल्लर, श्री देबाशीष चक्रवर्ती, श्री शरद जोशी, प्रो. आर.एस. रत्ना, प्रो. अनवरूल होडा, श्री सुमंत चौधरी, श्री यू.एस. भाटिया ।

आई.आई.एम. अहमदाबाद

प्रो. सेबास्टियन मॉरिस, प्रो. अजय पाण्डेय, प्रो. रविन्द्र एच. ढोलकिया, प्रो. राकेश बसंत, प्रो.बिमल पटेल, प्रो. अनुराग अग्रवाल, श्री सी.वी. मधुकर, प्रो. दिलीप वी. मावलंकर, प्रो. सुरेश प्रभु, प्रो. जी. रघुराम, प्रो. प्रेम पंगोत्रा, प्रो. अनिल स्वरूप, प्रो. समीर के. बरूआ, प्रो. जयंत आर. वर्मा ।

भा.प्र.सेवा अधिकारियों के लिए 108वां प्रवेशकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम (20 सितम्बर से 12 नवम्बर, 2010)

कार्यक्रम की रूपरेखा

इस पाठ्यक्रम की रूपरेखा अखिल भारतीय सेवाओं, देश में आज की नीतिगत स्थिति, प्रभावी प्रशासन में दक्षता तथा शासन के मुख्य मुख्य क्षेत्रों से संबंधित समग्र परिदृष्य के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार की गई है। उल्लेखनीय है कि प्रतिभागी वरिष्ठ स्तर के अधिकारीगण होते हैं, जिन्हें सरकार में कार्य करने का पर्याप्त अनुभव होता है अतः इसमें एक दूसरे को जानकारी तथा अनुभव आदान–प्रदान करने पर जोर दिया जाता है। इस पाठ्यक्रम का एक प्रमुख उद्देश्य विभिन्न राज्यों से आए अपने सहयोगियों के अनुभवों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के मुख्य लक्ष्य निम्नवत् हैं–

- प्रशासन के रूप में प्रभावपूर्ण ढ़ग से कार्य करने के लिए अंतर अनुशासनिक ज्ञान एवं कौशल अर्जित करना तथा उसको अद्यतन करना।
- अनुभवों, विचारों तथा दृष्टिकोणों के जरिए अखिल भारतीय परिदृष्य को समझना।
- प्रतिभागियों को वर्तमान प्रबंधकीय तकनीकों तथा आई.सी.टी. की जानकारी प्रदान करना।

प्रतिभागियों को सार्वजनिक उपक्रमों, निजी क्षेत्रों, गैर सरकारी संगठनों आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करने की दृष्टि से विभिन्न क्षेत्रों में भेजा गया तथा उन्हें विभिन्न स्थानों पर संवैधानिक प्राधिकारियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों के साथ विचार विनिमय का अवसर प्रदान किया गया। प्रतिभागियों ने मंत्रिमंडल सचिव तथा कार्मिक राज्य मंत्री से मुलाकात की।

इन प्रतिभागियों को निम्नलिखित अतिथि वक्ताओं ने संबोधित किया :–

सुश्री पौलिन तमेसिस, सुश्री सुमीता बनर्जी, प्रदीप सिंह खरोला, श्री आनंद मोहन तिवारी, प्रो. माधव मेनन, श्री विपिन कुमार, श्री आनंद शर्मा, श्रीमती कल्पना दुबे, श्री सुमन बिल्ला, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, डॉ. अजय कुमार, श्री भरत खर्नाड़, डॉ. चिंरजीब सेन, श्री गिरधारी नाइक, श्री अनिल कौल, सुश्री पौलिन तमेसिस, सुश्री सुमिता बनर्जी, प्रो. डॉ. एन.आर. माधव मेनन, श्री विपिन कुमार।

108 वें प्रवेशकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागियों का संक्षिप्त विवरण परिशिष्ट– ।।। में दिया गया है।

संयुक्त सिविल–सैन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम

पाठ्यक्रम का उद्देश्य, प्रमुख गतिविधियां:

- राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित विभिन्न आयामों तथा इसके घटकों तथा ऐसी सुरक्षा की चुनौतियों से संबंधित जानकारी में वृद्धि करना।
- राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रबंध की चुनौतियों से अवगत कराना, उभरते हुए बाह्य सुरक्षा परिवेश, वैश्वीकरण तथा आंतरिक सुरक्षा परिवेश का असर इत्यादि,
- प्रतिभागियों को इस विषय पर विचार–विमर्श का अवसर प्रदान करना; तथा
- राज्य, प्रखंड और जिला स्तर पर सिविल–सैन्य विचार–विनिमय का अवसर प्रदान करना।

पाठ्यक्रम सामग्री विशुद्ध सैन्य मामलों से लेकर आर्थिक सुरक्षा, आसूचना, आतंकवाद तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आदि विषयों तक व्यापक होती है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्याख्यान सत्रों के अतिरिक्त प्रकरण अध्ययन, परिदृष्य नियोजन अभ्यास तथा युद्ध खेल प्रमुखतः शामिल किए जाते हैं।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य, समुचित प्रशिक्षण द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित जानकारी दक्षता तथा व्यवहार की कमी को दूर करना है।

राष्ट्रीय सुरक्षा पर 14वां संयुक्त सिविल–सैन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम

पाठ्यक्रम टीम : श्री राजेश आर्य, पाठ्यक्रम समन्वयक, डॉ. ए.एस. रामचंद्र, सह पाठ्यक्रम समन्वयक, डॉ. मोना भगबती, सह पाठ्यक्रम समन्वयक

अथिति वक्ता

श्री सोमनाथ चटर्जी पूर्व लोक सभा अध्यक्ष, नई दिल्ली, श्री अजीत लाल, विशेष निदेशक, आसूचना ब्यूरो, गृह मंत्रालय, नार्थ ब्लॉक, नई दिल्ली, सुश्री सविता पांडे, प्रोफेसर, सेन्टर फॉर साउथ, सेन्ट्रल, साउथईस्ट एशियन एंड साउथवेस्ट पैसिफिक स्टडीज, जेएनयू, नई दिल्ली, आलोक शर्मा, भा.पु.से., उप महानिरिक्षक, मेला (कुम्भ मेला 2010), हरिद्वार (उत्तराखंड), सुश्री श्रीराधा दत्त, अनुसंधान अध्येता, रक्षा अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान, 1 डेवलेपमेंट इन्कलेव (यूएसआई के समीप) राव तुलाराम मार्ग, नई दिल्ली–110010, एयर मार्शल पी.के. बरबोरा, पीवीएसएम, वीएम, एडीसी, उप वायुसेना प्रमुख, वायुसेना मुख्यालय, वायु भवन, नई दिल्ली, डॉ. गुलशन राय, महानिदेशक, भारत सरकार संचार और सूचना

प्रौद्योगिकी मंत्रालय, संचार प्रौद्योगिकी विभाग, इंडियन कम्प्यूटर इमर्जेसी रिस्पॉन्स टीम (सीईआरटी–इन), इलैक्ट्रॉनिक निकेतन, 6, सीजीओ कॉम्पलेक्स, नई दिल्ली, 110003, श्री आनन्द के शर्मा, निदेशक, मौसम विज्ञान केन्द्र, भारतीय सर्वेक्षण परिसर, 17–ई सी रोड़, देहरादून (उत्तराखंड), डॉ. अरविन्द गुप्ता, लाल बहादुर शास्त्री चेयर इन्स्टीट्यूट ऑफ डिफेंस स्टडीज एंड एनालिसिस, 1 डेवलपमेंट एन्क्लेव, राव तुला राम मार्ग, नई दिल्ली–110010; श्री डी.एम. मित्रा, भा.पु.से., अपर पुलिस महानिदेशक (रेलवे / मादक द्रव्य), मध्य प्रदेश सरकार, पुलिस मुख्यालय, भोपाल (म.प्र.), डॉ. नम्रता गोस्वामी, सह–अध्येता, रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान, 1 डेवलपमेंट इन्कलेव (यूएसआई के समीप) राव तुला राम मार्ग –110010, श्री निहार नायक, सह–अध्येता, रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान, 1 डेवलपेंट एन्कलेव (यूएसआई के समीप) राव तुला राम मार्ग, नई दिल्ली–110010, श्री ए.बी. माथुर, विशेश सचिव, मंत्रिमंडल सचिवालय, कमरा न. 7, बीकानेर हाऊस (सौध) शाहजहां रोड, नई दिल्ली, महानिदेशक, संदर्शी योजना (पर्सपेक्टिव प्लानिंग), नई दिल्ली, कैप्टन (भारतीय नौसेना) राजेश सिंह, कालेज ऑफ डिफेन्स मैनेजमेंट, हैदराबाद, (आन्ध्र प्रदेश), श्री राजीव त्रिवेदी, भा.पु.से., पुलिस महानिरीक्षक तथा अपर निदेशक, आन्ध्र पुलिस अकादमी, हैदराबाद, (आन्ध्र प्रदेश) श्री एम.जे. अकबर, संपादक, एशियन एज, नई दिल्ली, श्री आविनाश शर्मा, निदेशक, भारत सरकार, मंत्रिमंडल सचिवालय, कमरा न.–7 बीकानेर हाऊस, (सौंध) शर्मा शाहजहॉ रोड़, नई दिल्ली –11, रियर एडमिरल सी.एस. मूर्ति, नौसेना मुख्यालय, नई दिल्ली।

अन्य क्रियाकलापः

- प्रतिभागियों ने सह–पाठ्यक्रम तथा पाठ्येतर क्रियाकलापों में भाग लिया।
- प्रतिदिन योग कक्षाओं का संचालन किया गया।

राष्ट्रीय सुरक्षा पर 15वां संयुक्त सिविल–सैन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम (9 से 20 अगस्त, 2010)

पाठ्यक्रम / संगोष्ठी / कार्यशाला / सम्मलेन का शीर्षक	राष्ट्रीय सुरक्षा पर 15वां सिविल सैन्य प्रषिक्षण कार्यक्रम
अवधि एवं तिथि	9 से 20 अगस्त, 2010
पाठ्यक्रम टीम	डॉ. एस.एच. खान, पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ. प्रेम सिंह, सह पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ. ए.एस. रामचन्द्र, सह पाठ्यक्रम समन्वयक
पाठ्यक्रम परिचय	राष्ट्रीय सुरक्षा पर संयुक्त सिविल–सैन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम, अकादमी का मुख्य पाठ्यक्रम है। इसे राष्ट्रीय सुरक्षा तंत्र के सुधार पर मंत्रियों के समूह की रिपोर्ट पर अनुवर्ती कार्रवाई करते हुए आरंभ किया गया था।
पाठ्यक्रम के प्रतिभागी	भा.प्र. सवो., भा.पु.सवो. भा.रा.सेवा. भा.रे.सेवा. भा.वन सेवा, भा.रे.ले.सेवा, आसूचना ब्यूरो के अधिकारी (निदेशक / संयुक्त सचिव) सशस्त्र बलों के अधिकारी (ब्रिगेडियर / कर्नल स्तर के) अर्धसैनिक बलों के अधिकारी (उप पुलिस महानिरीक्षक / पुलिस महा निरीक्षक स्तर के) मीडिया निजी क्षेत्र
समूह गठन तथा महिला एवं पुरूष अधिकारी	कुल – 39 (सभी पुरूष)
कार्यक्रम उद्घाटन	श्री एम.के. नारायणन, महामहिम राज्यपाल, पश्चिम बंगाल
समापन भाषण	श्री विजय सिंह, सदस्य, संघ लोक सेवा आयोग, नई दिल्ली

अतिथि वक्ताः

श्री अरुण गोयल, निदेशक, फाइनेंसियल इन्टेलीजेंस यूनिट–भारत, वित्त मंत्रालय, नई दिल्ली, एअर वाइस मार्शल आर.के. जौली, वी.एम,. वी.एस. एम, द्वारा–एसीएएस सचिवालय के सामने, वायु सेना मुख्यालय (वायु भवन), श्री मधुकर गुप्ता भा.प्र.से. (सेवा निवृत्त) पूर्व गृह सचिव, नई दिल्ली, प्रो. सुजीत दत्त, महात्मा गॉधी चेयर, नेल्शन मंडेला सेन्टर फॉर पीस एंड कंफिलक्ट रिसोल्यूशन, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली, रिअर एडमिरल ए.आर. कर्वे, द्वारा–एकीकृत रक्षा मंत्रालय (नौसेना) मुख्यालय, नई दिल्ली, श्री टी.सी.ए. श्रीनिवास राघवन, सह सम्पादक, हिंदू, बिजनेस लाइन, दिल्ली, मननीय न्यायाधीश सुश्री मुक्ता गुप्ता, दिल्ली उच्च न्यायालय, नई दिल्ली, विंग कमांडर अजय लेले, वरिष्ठ अध्येता, रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान, नई दिल्ली, सुश्री नम्रता गोस्वामी, अध्येता, रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान, नई दिल्ली, श्री विजय सिंह, पूर्व रक्षा सचिव

तथा सदस्य, संघ लोक सेवा आयोग, नई दिल्ली, श्री पी.के. गेरा, संयुक्त निदेशक, ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी, मसूरी, श्री विक्रम छिब्बर, अपर सचिव तथा वित्तीय सलाहकार, जहाजरानी मंत्रालय भारत सरकार, श्री के.सी सिंह, सुरक्षा विशेषज्ञ तथा पूर्व सचिव, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, पद्मश्री प्रो. अमिताव मलिक, पूर्व सदस्य, एनएमएवी, निदेशक, रक्षा विज्ञान केन्द्र, सुश्री सुधा महालिंगम, पूर्व सदस्य, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक परिषद तथा सदस्य, भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार परिषद, नई दिल्ली, लेफ्टिनेंट जनरल वी.के. अहलूवालिया, एवीएसएम, वाईएसएम, वीएसएम, जीओसी–इन चीफ, केन्द्रीय कमान, लखनऊ कैंट, लेफ्टिनेंट जनरल अनिल चैत, एवीएसएम, वीएसएम, श्री सी. महापात्र, वरिष्ठ अध्येता, अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन केन्द्र, जेएनयू., श्री एम जे अकबर ,अध्यक्ष कवर्ट मैगजीन, प्रख्यात पत्रकार एवं लेखक, डॉ. प्रेम सिंह, उपनिदेशक, ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी, मसूरी, कैप्टन (भा.नौसेना) राजेश सिंह, कॉलेज ऑफ डिफेंस मैनेजमेंट सिकन्दराबाद, कर्नल एस के सेंगर, कालेज ऑफ डिफेंस मैनेजमेंट, सिकन्दराबाद।

भा.प्र. सेवा, भा.पु.से. तथा भा.वि. सेवा के अधिकारियों के लिए संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम

अकादमी, प्रत्येक वर्ष उपर्युक्त सभी के लिए तीन विषयों पर एक सप्ताह का एक से लेकर तीन पाठ्यक्रम अयोजित करती है। ये पाठ्यक्रम विभिन्न स्तर के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए आयोजित किए जाते हैं।

आपदा प्रबंधन पर संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम
अवधि : (20 से 30 जुलाई, 2011)

पाठ्यक्रम समन्वयक	श्री दुष्यंत नरियाला, उपनिदेशक (वरिष्ठ)
भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी	04
भारतीय पुलिस सेवा	09
भारतीय वन सेवा के अधिकारी	08
कुल	21

अतिथि वक्ता

श्री अनिल भूषण प्रसाद, सचिव. एन.डी.एम.ए, नई दिल्ली, श्री अमित झा, संयुक्त सचिव, एनडीएमए, नई दिल्ली, डॉ. जे. राधाकृष्णन, असिस्टेट कन्ट्री डायरेक्टर, यूएनडीपी, श्री ए.आर. सुले , निदेशक (शमन), मेजर जनरल वी.के. दत्त, वरिष्ठ विशेषज्ञ, एनडीएमए, नई दिल्ली, डॉ. विक्रम गुप्ता, वैज्ञानिक, वाडिया इन्स्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलौजी देहरादून, श्री के.एम. सिंह, सदस्य, एनडीएमए, नई दिल्ली, डॉ. एम.सी. अबानी, वरिष्ठ विशेषज्ञ, एनडीएमए, नई दिल्ली, श्री आलोक शर्मा, भ.पु.से. उप पुलिस महानिरीक्षक, कुम्भ मेला, 2010 श्री वी. तिरूप्पुगज, सूचना आयुक्त, गांधीनगर, ब्रिगेडियर (डॉ.) वी.आर.आर. सिंह, एफ.आर.आई, देहरादून, श्री एम.एफ. दस्तूर, मुख्य अग्निशमन अधिकारी, अहमदाबाद नगर निगम, गुजरात, डॉ. आनंद शर्मा, निदेशक, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, देहरादून।

अन्य क्रियाकलाप

- प्रतिभागियों ने सह–पाठ्यक्रम तथा पाठ्येतर क्रियाकलापों में भाग लिया।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य तथा प्रमुख गतिविधियां:

इस पाठ्यक्रम में आपदा कार्रवाई तंत्र का परिचय, भारत में आपदा प्रबंधन, प्रतिमान परिवर्तन तथा एन.डी.एम.ए. की भूमिका, सुनामी प्रभाव–तमिलनाडु अनुभव, सिविल डिफेन्स की भूमिका, राष्ट्रीय आपदा शमन परियोजना, भारत में संकट, आपदाएं तथा आतंकवाद– भारत की द्विविधा, परमाणु तथा रेडियोधर्मी आपदाओं का प्रबंध, आपात कार्रवाई केन्द्र की संकल्पना तथा स्वरूप आदि विषय लिए गए।

वर्तमान प्रशासन में आचार–नीति पर 15वां कार्यक्रम
(23 से 27 अगस्त, 2010)

पाठ्यक्रम उद्देश्य एवं प्रमुख गतिविधियां:

- आचार–नीति / नैतिक दर्शन के बुनियादी सिद्धांतों के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी देना।
- उन्हें उन मूल्यों के बारे में विश्वास उत्पन्न कराना जो लोक नीति के निर्धारण एवं उनके क्रियान्वयन में मजबूती प्रदान करें।
- उन्हें ऐसी आचार–नीति के बारे में बताना जिससे नीति निर्माता, लोक मुद्दों को दृढ़ता से सुनिश्चित करने में उपयोग कर सकें।

पाठ्यक्रम शीर्षक	वर्तमान प्रशासन में आचार–नीति विषयक मुद्दों पर 15वां प्रशिक्षण कार्यक्रम
अवधि तथा तिथि	29 अगस्त 2009 से 27 अगस्त, 2010
पाठ्यक्रम टीम	श्री तेजवीर सिंह, पाठ्यक्रम समन्वयक श्री ए.एस. रामचन्द्रन, सह पाठ्यक्रम समन्वयक
पाठ्यक्रम परिचय	आचार–नीति/नैतिक दर्शन के बुनियादी सिद्धांतों से प्रतिभागियों को परिचित करना।
समूह गठन तथा पुरूष/महिला अधिकारियों का ब्यौरा	भ.प्र.से. – 04 भ.पु.से – 05 भ. वि.से. – 09 भारतीय सेना – 02 भारतीय नौसेना शस्त्र सेवा – 01 पुरुष – 19 महिलाएं– 02 कुल – 21
कार्यक्रम के प्रतिभागी	अखिल भारतीय सेवाओं (भा.प्र.से. भा.पु.से., भा.वि.से. के लिए) के अधिकारी
कार्यक्रम का उद्घाटन	श्री पदमवीर सिंह, निदेशक, ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी, मसूरी
स्मापन भाषण	श्री आर.एस. टोलिया, राज्य सूचना आयुक्त, उत्तराखंड

पाठ्यक्रम के उद्देश्य को पूरा करने के लिए व्यवस्थित व्याख्यान, पैनल परिचर्चा, अनुभव आदान–प्रदान करने तथा प्रकरण अध्ययन की पद्धति अपनाई गई थी।

अतिथि वक्ता :

प्रो. वी.के. थॉमस, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं उपभोक्ता मामले, खाद्य तथा सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री, नई दिल्ली, श्री निखिल डे, एम.के.एस. एस., देवडूंगरी, जिला राजसमंद (राजस्थान), श्री पी.एस. बावा, भा.पु.से. (सेवा निवृत्त) अध्यक्ष, ट्रांसपेरेंसी इन्टरनेशनल इंडिया, नई दिल्ली, श्री कुश वर्मा, भा.प्र.से., कार्यकारी निदेशक, राष्ट्रीय प्रशासनिक अनुसंधान, ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी, मसूरी, श्रीमती रजनी एस. सिब्बल, निदेशक, एच. आई.पी.ए. हरियाणा।

कानून–व्यवस्था पर संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम
अवधि : 6 से 10 सितम्बर 2010

पाठ्यक्रम समन्वयक	श्री राजेश आर्य
सह पाठ्यक्रम समन्वयक	श्री दुष्यंत नरियाला, सुश्री मोना भगबती
भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी	09
भारतीय पुलिस सेवा	11
भारतीय वन सेवा के अधिकारी	06
सशस्त्र बल/नौसेना/वायु सेना	02
कुल	28

वक्ता

श्री एस.एन. प्रधान महानिदेशक (एस.बी.), झारखंड सरकार, रांची, झारखंड, श्री एन.एस. निगम, जिला मजिस्ट्रेट, मेदिनीपुर, कोलकाता (पश्चिम बंगाल) श्री के. दुर्गाप्रसाद, अपर महानिदेशक (प्रशिक्षण), आन्ध्र प्रदेश पुलिस अकादमी, हैदराबाद (आ.प्र) श्री आलोक शर्मा, उप महानिदेशक, कुम्भ मेला (2010), हरिद्वार, उत्तराखंड, श्री शेखर गुप्ता, मुख्य संपादक, द इंडियन एक्सप्रेस ग्रुप, नई दिल्ली, श्री जी.एस. भारद्वाज, वैज्ञानिक–ई, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, श्री पदमवीर सिंह, निदेशक, ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी मसूरी।

अन्य उद्देश्य

- प्रतिभागियों ने सह–पाठ्यक्रम तथा पाठ्येतर कार्यकलापों में भाग लिया।
- प्रतिदिन योग कक्षाओं का संचालन किया गया।

प्रशिक्षण विकास कार्यक्रम

विवरण	पाठ्यक्रम ब्यौरा
पाठ्यक्रम/संगोष्ठी/कार्यशाला/सम्मेलन का शीर्षक	आर.टी. विकास कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्यक्ष प्रशिक्षण कौशल (डी.टी.एस.) तथा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की रूपरेखा (डी.ओ.टी)
अवधि तथा तिथि	आर.टी. विकास कार्यक्रम डी.टी.एस.– 4 मई से 22 मई, 2010 डी.ओ.टी.– 11 मई से 29 मई, 2010 डी.टी.एस. तथा डी.ओटी. के दो पाठ्यक्रम 1. प्रत्यक्ष प्रशिक्षण कौशल– 17–21 अगस्त, 2010 2. प्रशिक्षण की रूपरेखा– 24–28 अगस्त, 2010 3. प्रत्यक्ष प्रशिक्षण कौशल– 30 नवंबर–04 दिसंबर, 2010 4. प्रशिक्षण की रूपरेखा– 7–11 दिसंबर, 2010
पाठ्यक्रम समन्वयक	प्रो. एच.एम. मिश्रा
पाठ्यक्रम परिचय	संगठन के सतत् उत्थान तथा विकास की जरुरत है। इसके अलावा इसे 21 वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के दृष्टिगत तैयार किया जाना चाहिए। प्रशिक्षण एक ऐसा साधन है जिससे सतत् विकास की चुनौतियों तथा परिवर्तन की मांगों को पूरा करने में संगठन को सहायता मिलती है। यह ''प्रोवाइडर'' से ''फैसिलीटेटर'' तक प्रशिक्षण की बदलती भूमिका को समझने के लिए भी आवश्यक है, जहां नौसिखिए की प्रशिक्षण आवश्यकता पर ध्यान दिया जाता है। इस पाठ्यक्रम में इस सिद्धान्त का अत्यधिक सावधानी से अनुपालन किया गया।
समूह गठन तथा पुरुष/महिला प्रतिभागियों का ब्यौरा	आर.टी. विकास कार्यक्रम डी.टी.एस. – पुरुषः 32 महिलाएंः 17, कुल 49 डी.ओ.टी. – पुरुषः 17 महिलाएंः 07, कुल 24 डी.टी.एस. तथा डी.ओ.टी. के दो पाठ्यक्रम 1. डी.टी.एस. पुरुषः 21 महिलाएंः 03, कुल 24 2. डी.ओ.टी. पुरुषः 10 महिलाएंः 02, कुल 12 3. डी.टी.एस. पुरुषः 21 महिलाएंः 03, कुल 24 4. डी.ओ.टी. पुरुषः 09 महिलाएंः 02, कुल 11 कुलः 144 प्रतिभागी मास्टर प्रशिक्षकः 03 पी.आर. प्रशिक्षकः 06
कार्यक्रम का उद्घाटन	श्री पदमवीर सिंह, निदेशक

कार्यक्रम का उद्देश्य :

- मूलभूत शिक्षण कौशलों के विकास हेतु अवसर प्रदान करना।
- शिक्षण परिवेश सृजित करना और उसका प्रबंध करना।

डी.टी.एस. पाठ्यक्रम क्रियाकलाप, इनपुट तथा प्रमुख गतिविधियांः

प्रत्यक्ष प्रशिक्षण कौशल (डी.टी.एस.) पाठ्यक्रम अकुशल प्रशिक्षकों के लिए तैयार किया गया था जिसका उद्देश्य उन्हें मूलभूत शिक्षण कौशलों के विकास के अवसर प्रदान करना है। यह कार्मिक तथा प्रशिक्षण विभाग, भारत सरकार के तत्वावधान में संचालित किया जाता है।

यद्यपि यह पाठ्यक्रम प्रशिक्षण परिवेश में नवांगतुकों के लिए है तथापि इसमें केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थानों तथा ल.ब.शा.रा.प्र. अकादमी के ऐसे अनुभवी प्रशिक्षकों ने भी भाग लिया जो प्रशिक्षण की बारिकीयों से परिचित थे। तथापि, विभिन्न गतिविधियों एवं सूक्ष्म अभ्यास सत्रों का आयोजन करके इसे पर्याप्त रूप से प्रतिभागी तथा उपयोगी बनाया गया। प्रतिभागियों को अपने शिक्षण अनुभवों को दूसरों के साथ बांटने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस पाठ्यक्रम के दौरान सह प्रतिभागियों से फीडबैक प्राप्त करने या उनको फीडबैक देने से प्रौढ़ शिक्षण प्रक्रिया के मूल सिंद्धात प्रतिपादित हुए। पाठ्यक्रम में प्रशिक्षकों की नई बढ़ती भूमिका पर भी जोर दिया गया।

प्रशिक्षण की रूपरेखाः पाठ्यक्रम क्रियाकलाप, इनपुट तथा प्रमुख गतिविधियांः

सामान्यतः प्रशिक्षण कार्यक्रम की सफलता लोगों के लिए प्रशिक्षण की रूपरेखा तैयार करने तथा प्रभावी एवं काल्पनिक प्रशिक्षण प्रदान करने संबंधी प्रशिक्षकों की योग्यता पर निर्भर करती है, ताकि वे अपने कार्य–निष्पादन में सुधार ला सकें। प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए आवश्यक दक्षता का विकास डी.टी.एस. पाठ्यक्रम के दौरान किया जाता है। डी.ओ.टी. पाठ्यक्रम में और अधिक मंत्रणा तथा विकास के अवसर प्रदान किए जाते हैं, ताकि प्रशिक्षक, प्रशिक्षण रूपरेखा (डी.ओ.टी.) की अतिरिक्त जिम्मेदारी निभाने में सक्षम हो सकें।

डी.ओ.टी. पाठ्यकम उन लोगों के लिए तैयार किए जाते हैं जिन्होनें डी.टी.एस. पाठ्यक्रम पूरा कर लिया हो। हम उन प्रशिक्षकों के लिए पाठ्यक्रम निर्धारित करते हैं जिनको अपने साथ या संगठन के लिए प्रशिक्षक की रूपरेखा तैयार करने तथा विकसित करने की आवश्यकता होती है।

प्रमुख अतिथि वक्ताः

श्री एम.पी.सेठी, अपर निदेशक, आई.एस.टी.एम., ओल्ड जे.एन.यू. कैम्पस, नई दिल्ली, श्री एम.एस. कसाना, आई.एस.टी.एम., कार्मिक तथा प्रशिक्षण विभाग, ओल्ड जे.एन.यू कैम्पस, नई दिल्ली, श्री सेतु रामलिंगम, केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग, 36–जनपथ, नई दिल्ली, श्री एस. राजमोहन, प्रधानाचार्य तथा सचिव, इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट कैंटरिंग टेक्नोलॉजी एंड एप्लाइड न्यूट्रीशन, सी.आई.टी कैम्पस, तारामनि, चेन्नै।

संगोष्ठी / कार्यशाला

अकादमी में विशिष्ट विषयों पर संगोष्ठियां और कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती है। इसमें विशेषज्ञों और विद्वानों को आंमत्रित किया जाता है जो विभिन्न पाठ्यक्रमों के प्रतिभागियों से भी विचार विमर्श करते हैं। इसके अलावा प्रशिक्षण पद्वति को अद्यतन तथा अधिक उपयोगी बनाने के लिए अकादमी में प्रशिक्षण पद्धति पर भी पाठ्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिनमें अकादमी के संकाय सदस्यों के साथ–साथ विभिन्न केन्द्रीय और राज्य प्रशिक्षण संस्थानों के संकाय सदस्यों को भी शामिल किया जाता है।

कार्यक्रम का नाम	केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों का 11वां सम्मेलन
अवधि	11–12 अक्टूबर, 2010
उपस्थित प्रतिनिधियों / प्रतिभागियों की संख्या	23
पाठ्यक्रम समन्वयक	राजेश आर्य, उपनिदेशक (व.)

कार्यक्रम रिपोर्टः

यह कार्यक्रम 11–12 अक्टूबर 2010 को केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों के 11वें सम्मेलन के पाठ्यक्रम समन्वयक, श्री राजेश आर्य, उपनिदेशक (व0) के स्वागत भाषण से आरंभ हुआ, उसके बाद प्रतिभागियों ने अपना–अपना परिचय दिया।

श्री पी.के.गेरा, संयुक्त निदेशक, ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी ने 85वें आधारिक पाठ्यक्रम के सांख्यिकीय ब्यौरों के साथ प्रतिभागियों को सम्बोधित किया।

श्री अजय साहनी, संयुक्त सचिव, कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग ने प्रतिभागियों को निम्नलिखित बिन्दुओं के बारे में बताया।

- केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थानों के लिए एम.सी.टी.पी. के आयोजन की आवश्यकता।
- आई.आई. एम की तरह नियम बनाने, वित्तपोषित करने तथा वार्षिक योजना बनाने के संबंध में।
- विदेश प्रशिक्षण के लिए घरेलू वित्तपोषण (डी.एफ.एफ.टी.) पर चर्चा की गई।

श्री पदमवीर सिंह, निदेशक, ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी तथा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ने प्रशिक्षण संस्थानों के संघ (एफ.ओ.टी.आई.) की विद्वत सभा को अपने अभिनव विचारों तथा प्रांरभिक कार्यक्रमों की व्यापक तैयारी के बारे में परिचय कराया जिसमें निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा की गईः

- संसाधनों के बारे में सूचना का आदान–प्रदान, अतिथि संकायों के डाटाबेस या सभी केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थानों की अन्य सुसंगत जानकारी
- प्रशिक्षण संस्थान संघ (एफ.ओ.टी.आई.) का पंजीकरण सोसाइटी के रुप में किया जा सकता है ताकि कोई भी सरकारी / गैर–सरकारी संस्थान, इस फोरम का सदस्य बन सके।
- फोरम की वेबसाइट की रूपरेखा तैयार की जा सकती है तथा उसे आरम्भ किया जा सकता है।
- एफ.ओ.टी.आई की सदस्यता के लिए अनुरोध।
- सभी केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थानों के लिए प्रशिक्षण के मुख्य बिन्दुओं का पता लगाने के लिए ''प्रशिक्षण हेतु आवश्यकता का विश्लेषण'' (टी.एन.ए.) किया जा सकता है।
- सबसे पहले अपने संस्थान के कर्मचारियों को प्रशिक्षित करना आवश्यक है।

- अगले सम्मेलन के लिए कार्य सूची प्रस्तावित करने की आवश्यकता है।

कार्यसूची की मदों पर चर्चा

- संसाधन सामग्रियों को अपलोड करने के लिए सी.टी.आई ई–मेल ग्रुप / एफ.ओ.टी.आई.ई. मेल ग्रुप आरंभ करना।
- एफ.ओ.टी.आई की सहमति से ई–गवर्नेंस की पहल करना लाभकारी होगा।
- सी.टी.आई को अधिक बैंडविथ प्रदान करने के लिए रा.सू.वि.के / सूचना प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क (एन.के.एन.) लागू किया जा सकता है।
- ल.ब.शा.रा.प्र अकादमी में भाषा प्रयोगशाला (लैंग्वेज लैब) का आधुनिकीकरण।
- नियमित अंग्रेजी भाषा संकाय की नियुक्ति।
- फीडबैक प्रणाली को मानकीकृत करने की आवश्यकता है।
- फीडबैक प्रपत्र के प्रारूप की अन्य एफ.ओ.टी.आई. सदस्यों के साथ आपसी साझेदारी की जा सकती है।
- सत्र की स्टार रेटिंग तत्काल शुरू की जा सकती है।
- सभी केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थानों के ई–पुस्तकालय नेटवर्क को एफ.ओ.टी.आई. के जरिए जोड़ा जा सकता है।
- शारीरिक रूप से अशक्त अधिकारियों के लिए अवसंरचना एवं अध्ययन सामग्री संबंधी जानकारी आपस में साझा की जा सकती है।
- सिविल सेवकों के बीच इग्नू को लोकप्रिय बनाना।
- एम.सी.टी.पी. के लिए अकादमिक संस्थाओं के बीच संविदा / दर साझा करना।
- रेलवे या अन्य परिवहन से संबंधित सेवाओं के लिए आई.सी.एस कार्यक्रम के जरिए आपदा प्रबंध शुरू किया जा सकता है।
- फोरम के लिए श्री राजेश आर्य द्वारा ई–लर्निंग पोर्टल का प्रदर्शन किया गया।
- ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी में बायोमेट्रिक उपस्थिति प्रणाली तथा हाई रिसोल्यूशन सी.सी.टी.वी. की शुरुआत।
- केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थानों के बीच वीडियो कान्फ्रेस सुविधा का उन्नयन तथा नेटवर्किंग।
- प्रश्न पत्र तैयार करने तथा उत्तर पुस्तिका की जांच के लिए दरों में संशोधन पर चर्चा (विशेष रूप से बाहरी संकाय सदस्यों तथा सेवानिवृत्त अधिकारियों के लिए)
- ऑन लाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के संवर्धन पर चर्चा।
- ''यू–ट्यूब'' में कक्षा सत्रों के वीडियो स्ट्रीम की अपलोडिंग।
- संबंधित संस्थागत वेबसाइड / एफ.ओ.टी.आई. वेबसाइड में उच्च तकनीकी उपकरण संबंधी विवरण डालना।
- ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी के लिए विकी टूल्स लगाने की कोशिश की जा सकती है।
- सभी केन्द्रीय प्रशिक्षक संस्थानों की ''मिमोरेबिलिया'' की उपलब्धता।
- मार्च, 2011 के दौरान आई.आर.आई.टी.एम, लखनऊ में 12वें केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थान सम्मेलन के आयोजन का प्रस्ताव।

यह सम्मेलन पाठ्यक्रम समन्वयक के समापन सत्र तथा पदमवीर सिंह, निदेशक, ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी की समापन टिप्पणी और धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समाप्त हुआ।

राज्य प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों का सम्मेलन

कार्मिक तथा प्रशिक्षण विभाग ने दिनांक 13 दिसम्बर, 2000 के अपने स्वीकृति आदेश संख्या 12012 / 11 / 96–टी.एन.पी. (एस) के द्वारा भा.प्र.से. प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की जांच करने और सिविल सेवकों की व्यावसायिक क्षमता बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम के विषय वस्तु में परिवर्तन का सुझाव देने के लिए स्थायी पाठ्यक्रम पुनरीक्षा समिति का गठन किया। स्थायी पाठ्यक्रम पुनरीक्षा समिति की चौथी बैठक में यह निर्णय लिया गया कि ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी में प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थानों तथा राज्य समन्वयकों का एक वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया जाना चाहिए ताकि जिला प्रशिक्षण अपने–अपने पैटर्न तथा प्रशिक्षण से संबंधित अन्य मामलों को नियमित रूप से सरल तथा कारगर बन सके। इससे प्रशिक्षण की सम्पूर्णता के संबंध में सूचना के बेहतर आदान–प्रदान करने तथा जिला स्तरीय प्रशिक्षण में व्यावसायिकता को सुदृढ़ बनाने में कई तरह से सहायता मिलेगी।

स्थायी पाठ्यक्रम पुनरीक्षा समिति की सिफारिश का अनुपालन करते हुए ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी में प्रत्येक वर्ष इस सम्मेलन का आयोजन किया जाता है।

इस सम्मेलन का उद्देश्य पिछली बैठक में लिए गए संकल्पों पर कार्रवाई करना तथा पारस्परिक हित के अन्य मुद्दों पर चर्चा करना है जिससे भा.प्र.से. अधिकारियों को दिए जाने वाले प्रशिक्षण में चहुमुखी सुधार लाया जाएगा।

कार्मिक तथा प्रशिक्षण विभाग ने भा.प्र.से. के अधिकारियों के प्रवेशकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में संशोधन करने के लिए डॉ. आर.बी. वैद्यनाथ अय्यर की अध्यक्षता में दिनांक 29 मार्च, 2005 को एक समिति गठित की थी इस समिति की सिफारिशों में जिला प्रशिक्षण की संरचना के विशेष संदर्भ में विस्तार पूर्वक चर्चा की गई। इसके अलावा मुस्लिम समुदाय द्वारा सामना की जा रही कठिनाईयों के लिए सरकारी अधिकारियों की संवेदनशीलता के बारे मे राजिन्दर सच्चर समिति की सिफारिशों पर भी सम्मेलन में चर्चा की गई।

राज्य प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों का 9वां सम्मेलन (19–20 मई, 2010)

अवधि	2 दिन
तिथि	19–20 मई, 2010
समन्वयक	श्री आशीष वच्छानी, भा.प्र.सेवा, उपनिदेशक वरिष्ठ
कुल प्रतिभागी	20 (पुरुष–16, महिला–04)

अकादमी ने भा.प्र.से. चरण– I के लिए गुणवत्तायुक्त जिला प्रशिक्षण के पैटर्न को सरल तथा कारगर बनाने के उद्देश्य से 9वें वार्षिक सम्मेलन की मेजबानी की। इस सम्मेलन में, प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों, प्रधान सचिवों (प्रशि.) कार्मिक विभाग के अधिकारियों तथा अकादमी संकाय सदस्यों सहित कुल 37 लोगों ने भाग लिया। इसमें सर्वोत्तम कार्य–संस्कृति का आदान–प्रदान, विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा स्व–मूल्यांकन के जरिए 'प्रशिक्षण मॉडल' विकसित करने का संकल्प, संघ–राज्य विनिर्दिष्ट मॉडल की पहचान करने, मीडिया प्रबंध मॉडल के आयोजन हेतु आर.सी.वी.पी., एन.ए.ए. एंड एम. भोपाल का आगे आना, ई–नेटवर्किंग पोर्टल का अधिकतम प्रयोग, कतिपय विषयों पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों को पुनः चलाने, राष्ट्रीय प्रशिक्षण नीति के प्रावधानों का कार्यान्वयन, प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थानों को डीम्ड विश्वविद्यालय मानने की संभावनाओं का पता लगाना तथा ए.एस.टी.आइ. को सुदृढ़ करने जैसे विषय लिए गए। प्रतिभागी समय–समय पर मूसलाधार वर्षा आने से काफी प्रफुल्लित थे, क्योंकि कुछ प्रतिभागियों ने अपने परिवार के साथ इस भ्रमण कार्यक्रम का आनंद उठाया।

वरिष्ठ अधिकारियों के साथ विचार–विनिमय

अकादमी की चरण– I तथा चरण– II कार्यक्रमों में अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों के साथ पारस्परिक विचार–विनिमय करने के लिए वरिष्ठ भा.प्र.से. के अधिकारियों को आंमत्रित करने की परम्परा रही है। इससे आगे आने वाले दिनों में अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों के बारे में पूरी जानकारी मिलती है।

1997 से, यह अकादमी 50 वर्ष पूर्व भा.प्र.से. में प्रविष्ट होने वाले अधिकारियों के पुनर्मिलन कार्यक्रम के अंतर्गत वर्तमान सरकार से संबंधित सामयिक विषयों पर बातचीत के लिए आमंत्रित करती आ रही है। इसमें, प्रतिभागीगण रिपोर्ट तथा आलेखों के रुप में सरकार के लिए सिफारिशें तैयार करते हैं। 1959 बैच के अधिकारियों के लिए 24–25 सिंतबर, 2009 को पुनर्मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

1960 बैच के अधिकारियों का स्वर्णजयंती पुनर्मिलन

समन्वयक	श्री दुष्यंत नरियाला
सह समन्वयक	श्री तेजवीर सिंह, डॉ. मोना भगबती
समूह गठन	29 पुरुष 1 महिला

राष्ट्र को अपने गौरवमयी 50 वर्षो का जश्न मनाते हुए, अकादमी ने 1960 के स्वर्णजंयती बैच के अधिकारियों को वार्षिक पुनर्मिलन कार्यक्रमों आमंत्रित किया। 1960 बैच के तीस अधिकारी जिनमें से अधिकांश पति/पत्नी के साथ 16 तथा 17 सितम्बर 2010 को दो दिवसीय कार्यक्रम में एकत्रित हुए। शासन संचालन, भा.प्र.सेवा तथा सिविल सेवाओं जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चिंतन के औपचारिक सत्रों और 85वें आधारिक पाठ्यक्रम के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों के साथ विचार–विनिमय के बीच इन सदस्यों के अनौपचारिक बातचीत, पुरानी यादों तथा अकादमी परिसर के भ्रमण के लिए भी समय निकाला। अकादमी के नज़रिए से यहां के लोगों, जीवन तथा गुजरते समय की चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया। रात्रि को खुले आसमान के नीचे संगीत लहरियों, रात्रि भोज और सादे जीवन पर व्याखान–प्रदर्शन का दौर भी चला। श्री पदमवीर सिंह ने इस बैच द्वारा संकलित, मैमॅरीज ऑफ दॅ बैच ऑफ 1960 का लोकार्पण 17 सिंतबर के समापन सत्र के दौरान किया।

भा.प्र. सेवा के अधिकारियों के लिए यह पुनर्मिलन अकादमी द्वारा आयोजित 13वां पुनर्मिलन था। पहला पुनर्मिलन, स्वतंत्र भारत के स्वर्णजंयती वर्ष अर्थात्, 1997 में आयोजित किया गया जिसमें स्वतंत्रता के समय सेवारत भारतीय सिविल सेवा तथा भा.प्र. सेवा के अधिकारियों को आमंत्रित किया गया था।

अध्याय 4

हमारी सहयोगी संस्थाएं

एन.आई.सी. प्रशिक्षण यूनिट

अकादमी में एन.आइ.सी. की यह यूनिट अखिल भारतीय सेवाओं के आधिकारियों को अकादमी में प्रशिक्षण के दौरानए उन्हें सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान करती है। प्रशिक्षण कैलेण्डर 2010 के दौरान निम्नलिखित पाठ्यक्रम संचालित किए गए थे.

पाठ्यक्रम / अवधि	सत्र	प्रतिभागी	विषय
भा.प्र.सेवा व्यावसायिक पाठ्यक्रम चरण–I (2009–10 बैच) (26 सप्ताह)	21x2 = 42	121	What-if Analysis using Excel, Descriptive Statistics and Graphical Analysis, Survey Analysis, Pivot Table and Pivot Chart, Introduction to MS Access, Dynamic Key Retrieval, Multiple Table with Single Primary Key and Multiple Keys, Tenancy database, Introduction to MS Project and Election monitoring using MS Project.
भा.प्र.सेवा व्यावसायिक पाठ्यक्रम चरण–II (2008–10 बैच) (08 सप्ताह)	12 x2 = 24	112	Working with multiple sheets in Excel, Descriptive statistics and graphical analysis using Excel, Survey analysis using Excel, Sensitivity analysis using Excel, Customise animation using MS Power Point, Inventory management using MS Access, Multiple Tables with Primary Key using MS Access, Introduction to GIS & MS Outlook
भा.प्र. सेवा के अधिकारियों के लिए मिड कॅरिअर प्रशिक्षण कार्यक्रम (चरण– III)	20	95	Absolute and relative Cell Addressing, User Defined Formula and In-Built Function, What-if Analysis using MS Excel, Descriptive Statistics, Graphical Analysis. Survey Analysis and Statistical Analysis, Financial statement and Accounting concepts using Excel, Project Appraisal and Budget Process using Excel and Introduction to MS Project
भा.प्र. सेवा के अधिकारियों के लिए मिड कॅरिअर प्रशिक्षण कार्यक्रम (चरण–IV)	06	60	Absolute and relative Cell Addressing, User Defined Formula and In-Built Function, What-if Analysis using MS Excel, Descriptive Statistics, Graphical Analysis. Survey Analysis and Statistical Analysis, Financial statement and Accounting concepts using Excel.
83वां आधारिक पाठ्यक्रम (15 सप्ताह)	20x8=160	278	Introduction to Computers, Windows (XP), Typing Tutor, Internet/E-mail & Work Flow Automation, MS Word, MS PowerPoint, MS Excel, Income Tax Calculation using Excel, Data Analysis using MS Excel, Statistical Analysis using MS Excel.

पाठ्यक्रम / अवधि	सत्र	प्रतिभागी	विषय
भा.प्र.सेवा के अधिकारियों के लिए 107वां प्रवेश कालीन कार्यक्रम (8 सप्ताह)	18	37	Introduction to computer software and hardware, Internet & E-mail, Typing Tutor, Windows (XP), MS Word, MS Excel and MS PowerPoint.
भा.प्र.सेवा के अधिकारियों के लिए 108वां प्रवेश कालीन कार्यक्रम (8 सप्ताह)	18	44	Introduction to computer software and hardware, Internet & E-mail, Typing Tutor, Windows (XP), MS Word, MS Excel and MS PowerPoint.
भा.ति.सी. पुलिस अधिकारियों के लिए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण (01 सप्ताह)	15	16	Introduction to computers, Windows(XP) O. S. , MS Word , MS Excel MS PowerPoint, Sensitivity Analysis and Regression Analysis.
रेलवे अधिकारियों के लिए आइ.आर.टी.एम., लखनऊ में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण (4 प्रशिक्षण कार्यक्रम)	20	160	MS Project, Introduction of MS Excel, Data Analysis using MS Excel, MS Word and MS Power Point.

- भा.प्र. सेवा व्यावसायिक पाठ्यक्रम चरण – I (2009 बैच) के दौरान, एम.एस. प्रोजेक्ट का प्रयोग करते हुए, श्री गौरव द्विवेदी, उपनिदेशक वरिष्ठ के साथ निर्वाचन पर मॉड्यूल संचालित किया गया।

प्रशिक्षण–विधि

- व्याख्यान–सह–निदर्शन
- मुद्रित सामग्री
- कक्षा तथा गृह कार्य
- प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुतिकरण

अतिथि वक्ता

निम्नलिखित अतिथि वक्ताओं ने विभिन्न पाठ्यक्रमों में व्याख्यान दिया–

- डॉ. वंदना शर्मा, उप महानिदेशक, एन.आइ.सी. मुख्यालय, दिल्ली
- डॉ. शेफाली दास, उप महानिदेशक, एन.आइ.सी. मुख्यालय, दिल्ली
- श्रीमती सुचित्रा प्यारेलाल, तकनीकी निदेशक, एन.आइ.सी. मुख्यालय, दिल्ली
- श्री साई नाथ, तकनीकी निदेशक, एन.आइ.सी. मुख्यालय, दिल्ली

तैयार पाठ्यसामग्री

एन.आइ.सी. संकाय द्वारा निम्नलिखित विषयों पर विस्तृत पाठ्यसामग्री तैयार की गई–

- MS-Word 2007
- MS-Power Point 2007
- MS-Excel 2007

सॉफ्टवेयर का विकास

अकादमी की आवश्यकता के अनुसार निम्नलिखित सॉफ्टवेयर विकसित किए गए–

- Online Registration of Foundation Course Officer Trainees.
- SMS Server for Call Monitoring System.

अन्य गतिविधियां

- ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी, मसूरी में एन.आई.सी. मुख्यालय, दिल्ली के सहयोग से ई–कार्यालय का क्रियान्वयन किया जा रहा है। एन.आई.सी. प्रशिक्षण संकाय इस सिस्टम के विश्लेषण चरण से ही इस कार्य में सक्रियता से जुड़ा हुआ है।
- एन.आई.सी. के सहयोग से अकादमी की वेबसाइट का पुनः डिजाइन तैयार करने में तकनीकी सहयोग प्रदान किया।
- एन.आइ.सी. संकाय ने ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी के व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र द्वारा संचालित 'डिप्लोमा इन कंप्यूटर एप्लिकेशल' (छह माह) पाठ्यक्रम में अकादमी स्टाफ के बच्चों को प्रशिक्षण प्रदान किया। यह पाठ्यक्रम हिल्ट्रॉन तथा पंत विश्वविद्यालय, पंतनगर द्वारा मान्यताप्राप्त है।
- एन.आइ.सी. संकाय ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से मास्टर इन पब्लिक पॉलिसी हेतु ई–गवर्नेन्श एंड कंप्यूटर लिटॅरेसी का प्रश्नपत्र तैयार किया और उसका मूल्यांकन किया।
- होप (Hands on project of Experience) के अंतर्गत, 85वें आधारित पाठ्यक्रम के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों के लिए "Watershed Management in Mussoorie" का समन्वय किया।
- 85वें आधारिक पाठ्यक्रम के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों के साथ 'Digital Art' पर पाठ्येतर कार्यकलाप का समन्वय किया।

संकाय कौशल विकास

प्रौद्योगिकी कौशल एवं ज्ञान के अद्यतन के लिए, एन.आइ.सी.संकाय सदस्य ए.आइ.सी. मुख्यालय, नई दिल्ली तथा अन्य विख्यात संस्थानों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों / कार्यशालाओं / संगोष्ठियों में भाग लेते हैं। संकाय सदस्यों द्वारा विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों / कार्यशालाओं / संगोष्ठियों में भाग लेने का विवरण निम्नवत् है–

संकाय सदस्य का नाम	प्रशिक्षण / कार्यशाला / संगोष्ठी	अवधि	स्थान
श्री एम. चक्रवर्ती वरिष्ठ तकनीकी निदेशक	मानव संसाधन विकास के रणनैतिक प्रबंध पर कार्यशाला	02 दिन	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी, मसूरी
श्री आजाद सिंह वरिष्ठ प्रणाली विश्लेषक	प्रबंध तथा नेतृत्व विकास	05 दिन	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी, मसूरी

वर्ष 2010 के दौरान प्रकाशन

इन्फॉर्मेटिक्स के जुलाई, 2010 अंक में 'Role of NIC in Administration' आलेख प्रकाशित हुआ।

प्रशिक्षण, अनुसंधान तथा विकास प्रकोष्ठ

अकादमी में प्रतिवर्ष कई गण्यमान्य व्यक्तियों एवं प्रतिनिधि–मण्डलों का आगमन होता है। इस दौरान आपसी अनुभव आदान–प्रदान द्वारा ज्ञानार्जन किया जाता है जिससे अतिथि तथा अकादमी, दोनों ही लाभान्वित होते हैं। प्रशिक्षण, अनुसंधान तथा विकास प्रकोष्ठ द्वारा समन्वय किए गए कुछ भ्रमण कार्यक्रमों का विवरण इस प्रकार है–

गण्यमान्य व्यक्ति / प्रतिनिधि मंडल	भ्रमण की तिथि
पांच– सदस्यीय फिलीस्तीनी प्रतिनिधि मंडल	22–24 मार्च, 2011
केरल कृषि विश्वविद्यालय के बी.एस.सी. के 40 विद्यार्थी	27 फरवरी, 2011
राज्य स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थाएं, पंजाब मोहाली में प्रशिक्षणाधीन 24 सरकारी चिकित्सकों का समूह	23 फरवरी, 2011
कें. रि. पु. बल, गुड़गांव के 28 प्रशिक्षणार्थी अधिकरी	19 नवम्बर, 2010
श्री एस.एस. पिल्लै, महानिदेशक, एन.ए.ए.ए.,शिमला	30 अक्टूबर, 2010
सूर्या रोशनी लि. गुड़गांव के 45 अधिकारियों का समूह	9 दिसम्बर, 2010
एन.एण्ड. टी. नागपुर के 153 भा.रा. सेवा अधिकारियों का समूह	5–7 मार्च, 2011
एस.एस.बी. प्रशिक्षण संस्थान, श्रीनगर के 8 अधिकारियों का समूह	23 जून, 2010

म्यांमार सिविल सेवा चयन बोर्ड का प्रतिनिधि मंडल	29–30 सितम्बर, 2010
जम्मू–कश्मीर के 25 युवाओं का दल	22 अक्टूबर, 2010
तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय के 71 विद्यार्थियों का समूह	28 अक्टूबर, 2010
इ.गां.रा.व. अकादमी, के 18 प्रतिमागी	अक्टूबर, 2010
श्री फारूख गोटकोथ कैम के नेतृत्व में सूडान का पांच–सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल	30 नवम्बर, 2010
श्री पदमवीर सिंह निदेशक ने भा.प्र. सेवा चरण–II के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों के सिंगापुर तथा वियतनाम के अध्ययन भ्रमण में साथ दिया।	15–17 अगस्त, 2010 18–21 अगस्त, 2010
श्री राजेश आर्य, उ0नि0व0 ने भा0प्र0 सेवा चरण II (2008–10 बैच) ने अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों के वियतनाम तथा सिंगापुर के अध्ययन भ्रमण में साथ दिया।	12–22 अगस्त, 2010
श्री संजीव चोपड़ा, संयुक्त निदेशक ने एम.सी.टी.पी. चरण– IV, 2010 के प्रतिभागियों के दक्षिण कोरिया अध्ययन भ्रमण में साथ दिया।	24–10 से 04.11.2011
श्री राजेश आर्य, उ.नि.व. ने एम.सी.टी.पी. चरण– IV, 2010 के प्रतिनिधियों के दक्षिण कोरिया अध्ययन भ्रमण में साथ दिया।	24–10 से 04.11.2011
श्रीमती निधि शर्मा, उ.नि. ने एल.के.वाई. स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी, सिंगापुर में शहरी प्रबंध तथा सार्वजनिक सेवा अकादमी कार्यक्रम में भाग लिया।	17–25 मार्च, 2011
श्री तेजवीर सिंह, उ.नि.व. ने एम.सी.टी.पी. चरण– IV, 2010 के प्रतिभागियों के दक्षिण कोरिया अध्ययन भ्रमण में साथ दिया।	11–23 अप्रैल, 2010 23.10.10 से 5.11.10
श्री आशीष वच्छानी, उ.नि. एफ.सी.आर.ए.	22.9.10 से 30.9.2011
श्री संजीव चोपड़ा, संयुक्त निदेशक अध्ययन अवकाश पर रहे। (लंदन स्कूल ऑफ इकनोमिक्स एंड पोलिटिकल साइन्स)	1.10.2009 से 30.9.2010
श्री आलोक कुमार, उ.नि.व. ने भा. प्र. सेवा चरण V के प्रतिभागियों के साथ दक्षिण कोरिया का भ्रमण किया।	
श्री आलोक कुमार, उ.नि.व. ने भा. प्र. सेवा चरण– V के प्रतिभागियों के साथ हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, यू.एस.ए. का भ्रमण किया।	12–19.12.2010
श्रीमती रंजना चोपड़ा, उ.नि.व. अध्ययन अवकाश पर रही। (लंदन स्कूल ऑफ इकनोमिक्स एंड पोलिटिकल साइन्स)	01.10.2009 में 30.9.2010
श्री प्रेम कुमार गेरा, संयुक्त निदेशक ने एम.सी.टी.पी. चरण– IV, 2010 के प्रतिभागियों के साथ दक्षिण कोरिया का भ्रमण किया।	24.10 से 4.11.2010
श्री प्रेम कुमार गेरा, संयुक्त निदेशक ने एम.सी.टी.पी. चरण– V, 2010 के प्रतिभागियों के साथ दक्षिण कोरिया का भ्रमण किया।	07–21.12..2010
श्रीमती जसप्रीत तलवार, उ.नि.व. भा. प्र. सेवा, चरण– II (2008-10) ने प्रतिभागियों के साथ वियतनाम तथा सिंगापुर का भ्रमण किया।	12–22.8.2010

संकाय विकास

इस अकादमी में संकाय सदस्यों की दक्षता, ज्ञान तथा प्रशिक्षण तकनीकों को उन्नत तथा अद्यतन करने के लिए एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया है। इस उद्देश्य की प्राप्ति, परिसर में आयोजित कार्यक्रमों की मदद से, तथा संकाय सदस्यों को देश और विदेश के ख्यातिप्राप्त संस्थानों में भेजकर की जाती है। संकाय विकास योजना के तहत निम्नलिखित संकाय सदस्यों को प्रशिक्षणों, कार्यशालाओं/संगोष्ठियों में भाग लेने के लिए देश–विदेश भेजा गया।

अधिकारी का नाम तथा पदनाम	संस्थान/स्थान/देश, जहां का भ्रमण किया।	भ्रमण का उद्देश्य
श्री गौरव द्विवेदी, उ.नि.व.	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी 22–29 मार्च, 2011	केन्द्रीय संस्थानों के लिए टी.ओ.टी. कार्यक्रम
श्री आलोक कुमार, उ.नि.व.	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी 22–29 मार्च, 2011	केन्द्रीय संस्थानों के लिए टी.ओ.टी. कार्यक्रम
डॉ. मनिंदर कौर द्विवेदी, उ.नि.व.	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी 22–29 मार्च, 2011	केन्द्रीय संस्थानों के लिए टी.ओ.टी. कार्यक्रम

अधिकारी का नाम तथा पदनाम	संस्थान / स्थान / देश, जहां का भ्रमण किया।	भ्रमण का उद्देश्य
डॉ प्रेम सिंह, उ.नि.	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी 22–29 मार्च, 2011	केन्द्रीय संस्थानों के लिए टी.ओ.टी. कार्यक्रम
श्री पदमवीर सिंह, निदेशक	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 11–12 अक्टूबर, 2010	केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रमुखों का 11वां सम्मेलन
श्री प्रेम कुमार गेरा, संयुक्त निदेशक	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 11–12 अक्टूबर, 2010	केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रमुखों का 11वां सम्मेलन
श्री तेजवीर सिंह, उ.नि.व.	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 11–12 अक्टूबर, 2010	केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रमुखों का 11वां सम्मेलन
श्री राजेश आर्य, उ.नि.व.	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 11–12 अक्टूबर, 2010	केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रमुखों का 11वां सम्मेलन
डॉ. मनिंदर कौर द्विवेदी, उ.नि.व.	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 11–12 अक्टूबर, 2010	केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रमुखों का 11वां सम्मेलन
डॉ. प्रेम सिंह, उ.नि.व.	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 11–12 अक्टूबर, 2010	केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रमुखों का 11वां सम्मेलन
श्रीमती निधि शर्मा, उ.नि.	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 11–12 अक्टूबर, 2010	केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रमुखों का 11वां सम्मेलन
डॉ. मोना भगवती	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 11–12 अक्टूबर, 2010	केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रमुखों का 11वां सम्मेलन
श्री पदमवीर सिंह, निदेशक	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला
श्री प्रेम कुमार गेरा, संयुक्त निदेशक	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला
श्री संजीव चोपड़ा, संयुक्त निदेशक	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला
श्री कुश वर्मा, कार्यपालक निदेशक, एन.आइ.ए.आर.	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला
श्री आलोक कुमार, उ.नि.व.	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला
श्री दुष्यंत नरियाला, उ.नि.व.	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला
श्रीमती रंजना चोपड़ा, उ.नि.व.	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला
श्री गौरव द्विवेदी, उ.नि.व.	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला
श्री तेजवीर सिंह, उ.नि.व.	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला
श्रीमती जसप्रीत तलवार, उ.नि.व.	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला
श्री राजेश आर्य, उ.नि.व.	ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला

अधिकारी का नाम तथा पदनाम	संस्थान/स्थान/देश, जहां का भ्रमण किया।	भ्रमण का उद्देश्य
डॉ. मनिंदर कौर द्विवेदी, उ.नि.व.	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला
डॉ. प्रेम सिंह, उ.नि.	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला
श्रीमती निधि शर्मा, उ.नि.	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला
प्रो. ए. एस. रामचंद्रन	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला
श्री मंतोष चक्रवर्ती एन.आइ.सी. केंद्र प्रमुख	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला
श्री शीलधर सिंह यादव, सहायक निदेशक	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला
डॉ. गरिमा यादव, सहायक निदेशक	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला
श्री इंदरजीत पाल, सह आचार्य	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी 14–16 फरवरी 2011	टी.ओ.टी.कार्यशाला, यू.एन. ए.सी.सी.आइ. सी.टी.कार्यशाला
श्री पदमवीर सिंह, निदेशक	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी 19–20 मई, 2010	प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों का 9वां सम्मेलन
श्री आशीष वच्छानी, उ.नि.	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी 19–20 मई, 2010	प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों का 9वां सम्मेलन
श्री तेजवीर सिंह, उ.नि.व.	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी 19–20 मई, 2010	प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों का 9वां सम्मेलन
डॉ. एच.एम. मिश्र, प्रोफेसर, सामाजिक प्रबंध	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी 19–20 मई, 2010	प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों का 9वां सम्मेलन
डॉ. मनिंदर कौर द्विवेदी, उ.नि.व.	बी.पी.एस. टी. नई दिल्ली 21–25.7.2010	पशुपालन पर कार्याशाला सिविल सेवा सम्मेलन
डॉ. मनिंदर कौर द्विवेदी, उ.नि.व.	बंगलौर 23.01.10 से 06.02.10	नेतृत्व तथा रणनीति कार्यक्रम
डॉ. मनिंदर कौर द्विवेदी, उ.नि.व.	प्रथम ज्वाइंट रिव्यू मिशन 2–12 मार्च, 2010	प्रथम जॉइंट रिव्यू मिशन

राष्ट्रीय प्रशासनिक अनुसंधान संस्थान

राष्ट्रीय प्रशासनिक अनुसंधान केंद्र एक स्वायत्तशासी संस्था है, जिसकी स्थापना ला.ब.शा.रा.प्र, अकादमी के तत्वावधान में 1994–95 मे की गयी थी। यह मुख्य परिसर अकादमी में एक कि.मी. की दूरी पर ग्लेनमाइर इस्टेट, कोजी नुक में अवस्थित है। इसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय नीतियों तथा कार्यक्रमों पर अनुसंधान करना तथा भारत सकार के संबंधित मंत्रालयों को उसके निष्कर्षो से अवगत कराना है ताकि वे तदनुसार कार्रवाई कर सकें।

आरंभ में, ग्रामीण विकास तथा ग्राम्य अध्ययनों पर मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित किया गया जिसमें बाद में सरकारी विषयों को भी शामिल किया गया। इस संस्थान ने प्राथमिक तथा बुनियादी शिक्षा, तथा ब्लॉक स्तर पर विकेद्रीकृत सहभागी नियोजन, पंचायतीराज संस्थाओं का क्षमता संवर्द्धन, सहभागी शिक्षण तथा कार्यान्वयन, ग्राम्य विकास, सहकारिता, सार्वजनिक क्षेत्र प्रबंधन तथा मानव अधिकारों पर काफी काम किया है। इस संस्थान द्वारा विशेष रूप से मनरेगा तथा सर्वशिक्षा अभियान पर किए गए मूल्यांकनों को नीति–निर्माताओं तथा व्यवसायविदों ने काफी उपयोगी पाया है। प्रशासन, सामाजिक जवाबदेही तथा जल और स्वच्छता जैसे कुछ दूसरे विषय भी हैं जिस पर रा.प्र.अ. केंद्र ने कार्य किया है।

अपने मूलमंत्र ''उत्कृष्ट शासन की ओर'' का पालन करते हुए, रा.प्र.अ.केंद्र अपनी अनुसंधान शक्ति का अभीष्ट उपयोग करने की ओर अग्रसर है।

इसके लिए, अकादमी के अन्य अनुसंधान केंद्रों तथा ग्रामीण अध्ययन केंद्र, एन.सी.जी.पी.टी.आर, राष्ट्रीय शहरी प्रबंध केंद्र, आपदा प्रबंध केंद्र तथा सहकारिता और ग्रामीण विकास केंद्र का रा.प्र.अनु. केंद्र में विलय किया गया है ताकि यह नीति संबंधी सभी अनुसंधान कार्यो तथा उसके प्रचार–प्रसार का क्रियान्वयन एक छत के नीचे करने में समर्थ हो।

रा.प्र.अ. केंद्र वर्ष 2010–2011 के दौरान कार्यकलाप

इस दौरान केंद्र ने ग्राहक संगठनों के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए कार्यशालाओं, संगोष्ठियों का आयोजन किया, विकास तथा शासन–संचालन के विविध पहलुओं पर विषयोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा अनुसंधान अध्ययन करवाया। संस्थान ने वर्ष 2010–2011 के दौरान निम्नलिखित अनुसंधान अध्ययन तथा कार्यक्रम आयोजित किए।

क. अनुसंधान परियोजनाएं

- उत्तराखंड में सर्वशिक्षा अभियान का अनुश्रवण तथा पर्यवेक्षण

  इस संस्थान को मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा उत्तराखंड में सर्वशिक्षा अभियान को अनुश्रवण सहायता प्रदान करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। संस्थान ने उत्तराखंड राज्य में बुनियादी स्कूलों तथा उनके क्षेत्रों का नमूना भ्रमण करके मानव संसाधन विकास मंत्रालय को सर्वशिक्षा अभियान की स्थिति की छमाही आधार पर फीडबैक प्रदान किया है।

- ''पढ़ो पंजाब'' अभियान पर प्रभाव मूल्यांकन अध्ययन

  पंजाब सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा मंजूर यह अनुसंधान अध्ययन जनवरी 2010 में किया गया। यह अध्ययन पूर्ण हो चुका है तथा उसकी रिपोर्ट राज्य परियोजना निदेशक, सर्व शिक्षा अभियान, पंजाब को प्रस्तुत की चुकी है।

- पंजाब में कक्षा V, VIII, X तथा XII के छात्रों के खराब परिणमों का अध्ययन

  यह अध्ययन शिक्षा विभाग, पंजाब सरकार द्वारा प्रायोजित किया गया है। इसकी रिपोर्ट राज्य परियोजना निदेशक, सर्वशिक्षा अभियान, पंजाब को प्रस्तुत की जा चुकी है।

- सर्वशिक्षा अभियान, पंजाब के अंतर्गत बालिका शिक्षा तथा अ.जा./अ.ज.जा.शिक्षा जैसे नवाचारी कार्यकलापों पर मूल्यांकन अध्ययन

  यह अध्ययन राज्य परियोजना निदेशक द्वारा प्रयोजित किया गया है। इससे संबंधित प्राथमिक आंकड़े तालिकाबद्ध किए जा रहे हैं।

- अ.जा./अ.ज.जा. के बच्चों का काफी संख्या में स्कूल छोड़ने पर मूल्यांकन अध्ययन

  यह अध्ययन राज्य परियोजना निदेशक, सर्वशिक्षा अभियान प्राधिकरण, पंजाब द्वारा प्रायोजित किया गया है। फील्ड अध्ययन किया जा चुका है और प्राथमिक आंकड़ों पर कार्य चल रहा है।

- पठन–पाठन पर शिक्षक प्रशिक्षण के प्रभाव का अध्ययन

  यह अध्ययन राज्य परियोजन निदेशक, सर्वशिक्षा अभियान प्राधिकरण, पंजाब द्वारा प्रायोजित किया गया है। फील्ड अध्ययन किया जा चुका है। प्राथमिक आंकड़े तालिकाबद्ध किए जा चुके हैं। रिपोर्ट लिखी जा रही है।

- पंजाब के कपूरथला जिला में यू.सी.एम.ए.एस./ए बी.ए.सी.यू.एस. तथा सर्वशिक्षा अभियान पर मूल्यांकन अध्ययन

  यह अध्ययन राज्य परियोजना निदेशक सर्वशिक्षा अभियान प्राधिकरण, पंजाब द्वारा प्रायोजित है। इसकी रिपोर्ट राज्य परियोजना अधिकारी, पंजाब को प्रस्तुत की जा चुकी है।

- केरल में मातृ मृत्यु अनुपात के आकलन पर अनुसंधान अध्ययन

  यह अध्ययन राज्य मिशन निदेशक, एन.आर.एच.एम. (केरल) द्वारा सौंपा गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में, एम.एम.आर. के संबंध में प्राथमिक आंकड़े एकत्रित करके तालिकाबद्ध किए जा चुके हैं। शहरी क्षेत्रों के एम.एम.आर. आंकड़ों को तालिकाबद्ध किया जा रहा है।

- मुस्लिम विद्यार्थियो के नामांकन, उपस्थिति तथा पढ़ाई जारी रखने और नियमित स्कूलों में उनकी भागीदारी की स्थिति पर मूल्यांकन रिपोर्ट

  यह अध्ययन झारखंड शिक्षा परियोजन परिषद, रांची द्वारा प्रायोजित है। मुस्लिम बहुल आबादी वाले 8 चिहि्नत जिलों से प्राथमिक आंकड़े एकत्रित किए जा चुके हैं। इन्हें तालिकाबद्ध किया जा रहा है।

ख. प्रबंध विकास कार्यक्रम

- एन.आइ.ए.आर. ने प्रबंध विकास कार्यक्रम 1998 में आरंभ किया था और तब से खादी एवं ग्राम उद्योग आयोग, कोल इंडिया, श्रम विभाग (उ.प्र.), राज्य सभा तथा लोक सभा सचिवालय जैसे विभिन्न संगठनों के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए कई कार्यक्रम आयोजित किए हैं। प्रबंध विकास कार्यक्रमों में सामान्यतः इन विषयों को लिया जाता है–लोक सेवा में आचार–नीति तथा जीवन–मूल्य, जवाबदेही तथा पारदर्शिता, प्रशासन में शिकायत निवारण, सूचना का अधिकार, प्रबंध में संगठनात्मक व्यवहार (अभिप्रेरणा, संप्रेषण, नेतृत्व तथा टीम सृजन), परिवर्तन प्रबंधन, समय तथा तनाव प्रबंधन, जन संपर्क आदि। वर्ष 2010–2011 के दौरान आयोजित कार्यक्रम इस प्रकार हैं–

i. आइ.आइ.सी.एम., कोल इंडिया, रांची के प्रशिक्षणार्थियों के लिए रणनीति प्रबंध पर दो कार्यक्रम– 27–30 अप्रैल, 2010 तथा 23–24 नवम्बर, 2010.

ii. राज्य सभा तथा लोक सभा सचिवालय के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए प्रबंध विकास कार्यक्रम 31 मई से 4 जून,2010.

iii. ए.ई.ई.एस. के अधिकारियों के लिए प्रबंध विकास कार्यक्रम 12–16 मार्च, 2010.

iv. संघ–शासित क्षेत्रों के सिविल सेवा अधिकारियों के लिए लोक नीति पर प्रशिक्षण कार्यक्रम 7–11 मई, 2011.

ग. एस.एस.ए. नियोजन प्रक्रिया तथा वार्षिक कार्य योजना एवं बजट की तैयारी

प्राथमिक शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, एन.आइ.ए.आर. भारत सरकार मानव संस्थान विकास मंत्रालय, तथा अन्य राज्य सरकारों द्वारा प्रायोजित प्राथमिक शिक्षा तथा सहभागी नियोजन पर 1995 से प्रशिक्षण का आयोजन और अनुसंधान क्रियाकलापों का समन्वय करता रहा है। वर्ष 2010–2011 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम इस प्रकार है–

कार्यक्रम का नाम	दिनांक	जिला / स्थान	अवधि
ए.डब्ल्यु.पी. एंड बी. की तैयारी हेतु क्षमता सृजन प्रशिक्षण कार्यक्रम	7–11 मार्च, 2011	पूर्वी चम्पारन	5 दिन
ए.डब्ल्यु.पी. एंड बी. की तैयारी हेतु क्षमता सृजन प्रशिक्षण कार्यक्रम	7–11 मार्च, 2011	पूर्णिया	5 दिन
ए.डब्ल्यु.पी. एंड बी. की तैयारी हेतु क्षमता सृजन प्रशिक्षण कार्यक्रम	7–11 मार्च, 2011	बेगुसराय	5 दिन
ए.डब्ल्यु.पी. एंड बी. की तैयारी हेतु क्षमता सृजन प्रशिक्षण कार्यक्रम	7–11 मार्च, 2011	पटना (देहात)	5 दिन
ए.डब्ल्यु.पी. एंड बी. की तैयारी हेतु क्षमता सृजन प्रशिक्षण कार्यक्रम	7–11 मार्च, 2011	मदेपुर	5 दिन
ए.डब्ल्यु.पी. एंड बी. की तैयारी हेतु क्षमता सृजन प्रशिक्षण कार्यक्रम	25–29 मार्च, 2011	सीतामढ़ी	5 दिन
ए.डब्ल्यु.पी. एंड बी. की तैयारी हेतु क्षमता सृजन प्रशिक्षण कार्यक्रम	25–29 मार्च, 2011	अररिया	5 दिन
ए.डब्ल्यु.पी. एंड बी. की तैयारी हेतु क्षमता सृजन प्रशिक्षण कार्यक्रम	25–29 मार्च, 2011	समस्तीपुर	5 दिन
ए.डब्ल्यु.पी. एंड बी. की तैयारी हेतु क्षमता सृजन प्रशिक्षण कार्यक्रम	25–29 मार्च, 2011	नवादा	5 दिन
ए.डब्ल्यु.पी. एंड बी. की तैयारी हेतु क्षमता सृजन प्रशिक्षण कार्यक्रम	25–29 मार्च, 2011	सहरसा	5 दिन

घ. राष्ट्रीय जल एवं स्वच्छता संसाधन केंद्र

एन.आइ.ए.आर., ला.ब.शा.रा. प्रशासन अकादमी में राजीव गांधी पेयजल मिशन के अधीन राष्ट्रीय श्रम एवं स्वच्छता केंद्र स्थापित करने का प्रस्ताव भारत सरकार, ग्रामीण विकास मंत्रालय, पेयजल आपूर्ति विभाग, नई दिल्ली द्वारा अनुमोदित किया गया है। राष्ट्रीय जल एवं स्वच्छता संसाधन केंद्र के अंतर्गत, एन.आइ.ए.आर., ला.ब.शा.रा.प्र.अकादमी लोक स्वास्थ्य इंजीनियरिंग विभाग के इंजीनियरों तथा प्रशासकों, सभी भागीदारों, और उत्तरी क्षेत्र के सभी राज्यों तथा संघ शासित क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों मे सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने तथा संपूर्ण स्वच्छता अभियान का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने वाले कार्यकर्ताओं के लिए क्षमता सृजन कार्यक्रमों का आयोजन करेगा। अब तक आयोजित कार्यक्रम निम्नवत् हैं–

कार्यक्रम का नाम	तारीख	स्थान	अवधि
जल तथा स्वच्छता पर राज्य स्तरीय कार्यशाला	20–24 दिसम्बर 2010	भोपाल, म.प्र.	5 दिन
जल तथा स्वच्छता पर राज्य स्तरीय कार्यशाला	27–31 दिसम्बर 2010	चंड़ीगढ़, पंजाब	5 दिन
जल तथा स्वच्छता पर राज्य स्तरीय कार्यशाला	4–8 जनवरी 2011	चंड़ीगढ़, हरियाण	5 दिन
जल तथा स्वच्छता पर राज्य स्तरीय कार्यशाला	28 फरवरी से 4 मार्च, 2011	शिमला, हि.प्र.	5 दिन

ड. कार्यशालाएं / प्रशिक्षण कार्यक्रम

- **सुशासन में उत्कृष्ट कार्य–संस्कृति**

  एन.आइ.ए.आर. द्वारा इस विषय पर 14–15–जून 2010 को एक दो–दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इसका मुख्य उद्देश्य जे.पी. आइ.आइ.टी, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली (नोयडा) में 20–22 अक्टूबर, 2010 को आइ.एस.क्यू. तथा क्यू.सी.आइ. द्वारा संयुक्त रूप से 8वें ए.एन.क्यू. कांग्रेस, दिल्ली 2010 में प्रदर्शित सरकारी क्षेत्रों में अपनाए गए उत्कृष्ट कार्य–संस्कृति कार्यो से अवगत कराना था। इस कार्यशाला का उद्घाटन श्री पदमवीर सिंह, निदेशक, ला.ब.शा.रा.प्र.अकादमी, मसूरी तथा डॉ. वी.के. अग्निहोत्री, महासचिव, राज्य सभा द्वारा संयुक्त रूप

से किया गया था। इसमें एन.आइ.ए.आर.के कार्यपालक निदेशक तथा संकाय सदस्यों को ए.एन.क्यू. काउंसिल के गण्यमान्य सदस्यों ने सहभागिता की। इस कार्यशाला का समन्वय डॉ. एस.एच.खान, उ.नि.व., ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी, मसूरी ने किया। इसमें कुल 19 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया जिसमें सिविल सेवा क्षेत्र तथा अन्य शैक्षिक एवं सरकारी क्षेत्र के लोग थे। इसमें प्रधानमंत्री तथा सी.ए.पी.ए.एम. पुरस्कार प्राप्तकर्ता भी शामिल हैं जिन्होंने इस विषय पर अपने–अपने आलेख प्रस्तुत किए।

- **सरकारी प्रापण सुधार**

  यद्यपि भारत में सरकारी प्रापण हेतु स्थायी तथ बहुस्तरीय कार्ययोजना निर्धारित है, तथापि अनुभव यह रहा है कि प्रतिस्पर्धा, क्षमता, मितव्ययता मुद्रा–मान, शीघ्रता तथा प्रक्रियात्मक सुसंगति कई मामलों मे दिखाई नहीं पड़ते हैं। इस दृष्टि से, एन.आइ.ए.आर. द्वारा एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें देशा में प्रचलित वर्तमान राजनैतिक–आर्थिक परिदृष्यों में प्रापण सुधार से संबंधित मुद्दों का विश्लेषण किया गया। इस कार्यशाला के उद्देश्य निम्नवत् थे–

  - सरकारी प्रापण सुधारों के पहलुओं पर चिंतन करना
  - संभावित वैधानिक ढांचे की जरूरत
  - नीति नियमन निर्धारण भूमिका निभाने के लिए किसी एकल एजेंसी को नामित करने पर विचार
  - निगरानी तथा शिकायत निवारण तंत्र
  - अधिक प्रतिस्पर्धी बोली–प्रकिया हेतु प्रक्रियात्मक सुधार
  - सरकारी प्रबंधकों का क्षमता सृजन

च. प्रकाशन कार्य

1. आगामी आन्तरिक प्रकाशन

- एजुकेशनल गवर्नेन्शः क्वालिटी इश्यूज इन एलिमेंटरी एजुकेशन
- कम्युनिटी गवर्नेन्श ऑफ एलिमेंटरी एजुकेशन : फ्रॉम पार्टिसिपेशन टु ऑनरशिप
- एजुकेशनल गवर्नेन्शः क्वांटिटेटिव, क्वालिटेटिव एंड पार्टिसिपेटरी रिसर्च मैथड्स

2. आगामी बाह्य प्रकाशन

- टोटल सेनिटेशन कैम्पेन इन इंडियाः बेस्ट प्रेक्टिसेज
- सोशल एकाउंटेविलिटी मैकेनिज्म फॉर एस.एस.ए. एंड एन.आर.एच.एम.

सहकारिता तथा ग्रामीण विकास केन्द्र (सी.सी.आर.डी.)

सहकारिता एवं ग्रामीण विकास केन्द्र, अकादमी में सितम्बर, 1995 से कार्यरत है । सीसीआरडी सहकारिता के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य कर रहा है, जिसके अतंर्गत वह ग्रामीण निर्धनों द्वारा सहकारिता में शामिल होने संबंधी समस्याओं तथा सहकारी संस्थाओं एवं ग्रामीण विकास संस्थाओं द्वारा गरीबी कम करनें की दिशा में किए जाने वाले सफल प्रयासों का अध्ययन करता है, जिससे कि भा.प्र. सेवा एवं अन्य श्रेणी–। सेवाओं के अधिकारियों को सहकारिता एवं ग्रामीण विकास का प्रशिक्षण दिया जा सके, स्वयं सहायता समूहों के लिए क्षमता विकास संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा सकें तथा राष्ट्रीय प्रशासनिक अनुसंधान संस्थान (एनआइएआर) एवं अकादमी की अन्य अनुसंधान इकाईयों को सहयोग प्रदान किया जा सके। इस अवधि में श्री संजीव चोपड़ा, भा. प्र. सेवा सीसीआरडी के समन्वयक सह उपध्यक्ष थे ।

ग्रामीण अध्ययन केन्द्र

ग्रामीण अध्ययन केन्द्र, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी की स्थापना ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा की गई थी जिसका उद्देश्य जिला प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों द्वारा दी गई सूचनाओं के आधार पर राज्यों द्वारा लागू भू–सुधार नीतियों का समवर्ती मूल्यांकन करना है। इसके अलावा, गरीबी उन्मूलन स्कीमों के समवर्ती मूल्यांकन का कार्य भी केन्द्र को सौंपा गया था। पिछले कई वर्षों से केन्द्र ने अपने कार्यकलापों में विस्तार किया है जिसमें शोध अध्ययन, प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा नीतिगत सुझाव शामिल हैं। केन्द्र के उत्कृष्ट कार्य–निष्पादन के आधार पर ग्रामीण विकास मंत्रालय ने 1989 से लेकर 11वीं पंचवर्षीय योजना के अंत तक केन्द्र को कार्य करते रहने की मंजूरी दी है।

ग्रामीण अध्ययन केन्द्र देश के विभिन्न राज्यों में भू–सुधार तथा ग्रामीण गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम के कार्यान्वयन की स्थिति पर उपयोगी आंकड़े एकत्रित कर रहा है। आंकड़े एकत्रित करने के अलावा केन्द्र द्वारा निष्पादित किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यकलापों में से एक कार्य भारतीय प्रशासनिक अधिकारियों के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को ग्रामीण गरीबी तथा भू–सुधार से संबंधित मुद्दों तथा समस्याओं से अवगत कराना है। धरातलीय वास्तविकताओं से रू–ब–रू होने का निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रमों तथा भूमि सुधार कानूनों पर तब लाभदायी प्रभाव पड़ता है जब अधिकारी प्रशिक्षणार्थी अपने–अपने राज्यों में अपना कार्यग्रहण करते हैं।

उद्देश्य

- काश्तकारी भू–हदबंदी, भू–अभिलेख, भू–चकबंदी, सरकारी बंजर भूमि, आवासविहीनता, ग्रामीण विकास, निर्धनता–उन्मूलन कार्यक्रमों पर प्रश्नावली तैयार करना तथा भा.प्र. सेवा के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों द्वारा अपने जिला प्रशिक्षण के दौरान इन सभी पर अनुभवजनित आंकड़े एकत्रित करना।
- भूमि सुधार तथा ग्रामीण विकास, निर्धनता–उन्मूलन कार्यक्रमों से संबंधित विभिन्न विषयों पर भा.प्र. सेवा के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों द्वारा अपने जिला प्रशिक्षण के दौरान तैयार समनुदेशनों में सुधार करना और उनसे प्राप्त संगत सांख्यिकीय आंकड़ों को सुरक्षित रखना।
- देश में काश्तकारी सुधारों, भूमि जोतों की हदबंदी तथा सरकारी भूमि के उपयोग में की गई प्रगति का मूल्यांकन करना और सफलता के दावों तथा मौके की समस्याओं का गहन परीक्षण करना।
- ग्रामीण विकास कार्यक्रमों का कार्यान्वयन करना तथा इसके कार्यान्वयन तंत्र एवं नीति से संबंधित उपायों हेतु सुझाव देना।

इसके अतिरिक्त, इस केंद्र को ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने नीति उपायों में परिवर्तन एवं प्रदायगी तंत्र में सुधार हेतु सुझाव देने, भूमि सुधारों तथा ग्रामीण विकास से संबंधित विभिन्न विषयों पर राज्य सरकारों को परामर्श देने का भी दायित्व सौंपा है। यह केंद्र इस कार्यक्रम के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु भारत के विभिन्न राज्यों के लिए भू–अभिलेखों के कंप्यूटरीकरण के मूल्यांकन से भी जुड़ा है। यह केंद्र प्रशासकों / ख्यातिप्राप्त अकादमियों के लिए उनकी दृष्टि से महत्वपूर्ण विषयों की समझ हेतु उनके लिए अध्ययन कार्य भी करवाता है।

ग्रामीण अध्ययन केंद्र द्वारा वर्ष 2010–2011 के दौरान किए गए कार्यकलापों का विवरण इस प्रकार है–

1. (i) **85वें आधारिक पाठ्यक्रम के लिए ग्रामीण अध्ययन कार्यक्रम**

   - ग्राम भ्रमण पुस्तिका तैयार की
   - अधिकारी प्रशिक्षणर्थियों के लिए अलग–अलग सामूहिक / व्यक्तिगत कार्यपुस्तिका रिपोर्टें तैयार कीं
   - ग्राम भ्रमण हेतु राज्यों / जिलों की प्रशासनिक व्यवस्था तथा प्रोफाइल तैयार किया।

   (ii) **भा.प्र.सेवा चरण– II परिवीक्षाधीनों के लिए ग्रामीण अध्ययन कार्य**

   भा.प्र.सेवा के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को जिला प्रशिक्षण के दौरान, ग्राम भ्रमण अध्ययन आधारित सर्वेक्षण करना होता है जिसके लिए उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों तथा भूमि–सुधारों के संबंध में एक प्रश्नावली दी जाती है। इसी के आधार पर उन्हें सामाजिक–आर्थिक तथा भूमि सुधार के बारे में ग्रामीण अध्ययन केंद्र को दो रिपोर्टें प्रस्तुत करनी होती हैं। तदुपरांत, इन रिपोर्टों का उपयोग राज्य–विनिर्दिष्ट आलेख तैयार करने के लिए किया जाता है जिन्हें इसी केंद्र में तथा बाहर भी प्रकाशित कराया जाता है।

   भा.प्र. सेवा (चरण–II) के 2008–10 बैच के अधिकारी प्रशिक्षणाथियों के लिए, इस केंद्र ने ग्रामीण अध्ययन समनुदेशन हेतु साक्षात्कार अनुसूची संशोधित की है। यह समनुदेशन जिला प्रशिक्षण समनुदेशन का अहम भाग है। अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रस्तुत की गई सामाजिक–आर्थिक तथा भूमि सुधार संबंधी रिपोर्टों का इस केंद्र द्वारा मूल्यांकन किया जाता है।

2. अनुसंधान / प्रभाव मूल्यांकन अध्ययन

i) 'मिजोरम राज्य में राजस्व प्रशासन का सुदृढ़ीकरण तथा भू अभिलेखों के उन्नयन' पर अध्ययन
स्थिति : मसौदा शीघ्र पूरा होने वाला है।

ii) 'विशेष आर्थिक क्षेत्रों के लिए भूमि अधिग्रहण तथा ग्रामीण आजीविका पर उसके प्रभाव – पंजाब एवं पश्चिम बंगाल के संदर्भ में अध्ययन'

भारत में, विशेष आर्थिक क्षेत्रों के संवर्द्धन हेतु भूमि अर्जन का प्रयास हमेशा ग्रामीण किसानों की कृषि भूमि को गैर–कृषि भूमि उपयोग में बदलने से संबंधित रहता है। भूमि के ऐसे परिवर्तन से न केवल बड़े पैमाने पर ग्रामीण लोगों को विस्थापित होना पड़ता है अपितु उनका सामजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक जीवन भी प्रभावित होता है। इसलिए भूमि अधिग्रहण का मुद्दा हमेशा अत्यंत विरोध वाला नीतिगत मुद्दा रहा है। इसने कई विवादों को तूल दिया है विशेषकर तब, जब विकास परियोजनाओं के लिए ग्रामीण भूमि का बड़े पैमाने पर अधिग्रहण किया जाना हो।

स्थिति : अध्ययन अनुमोदित हो गया है तथा आरंभिक सर्वेक्षण शीघ्र आरंभ किया जाने वाला है।

iii) 'हरियाणा एवं कर्नाटक में ठेका खेती एवं महिलाओं पर अध्ययन'
स्थिति – साक्षात्कार अनुसूची तैयार की जा रही है, फील्ड कार्य शीघ्र आरंभ किया जाएगा।

iv) 'उड़ीसा राज्य में भूमि अभिलेखों के कंप्यूटरीकरण के कार्यान्वयन के मूल्यांकन' का अध्ययन
स्थिति – रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

v) "भारत के विभिन्न राज्यों की पुनर्स्थापन एवं पुनर्वास नीतियों का मूल्यांकन" विषयक अध्ययन
स्थिति – प्रक्रिया जारी है।

vi) "उत्तर–पूर्वी राज्यों के लिए भू–राजस्व प्रबंध तंत्र का विरचन" विषयक अध्ययन
स्थिति – इस अध्ययन के बदले "उत्तर–पूर्वी राज्यों में भू–प्रशासन" पर कार्यशाला रखी गई है।

vii) राष्ट्रीय भू–अभिलेख आधुनिकीकरण कार्यक्रम–मूल्यांकन अध्ययन
स्थिति – ग्रामीण अध्ययन केंद्र मे ग्रामीण विकास मंत्रालय को प्रस्ताव प्रस्तुत कर दिया है। परियोजना के अनुमोदन की प्रतीक्षा है।

viii) विभिन्न संस्थानों/एजेंसियों द्वारा संचालित जलागम विकास कार्यक्रमों की मूल्यांकन रिपोर्टो का विश्लेषण तथा प्रलेखीकरण
स्थिति – उपर्युक्त परियोजना के लिए परियोजना सहयोगी तथा कम्प्यूटर ऑपरेटर की नियुक्ति की जा रही है।

3. 2001–2006 बैच के भा.प्र. सेवा व्यावसायिक पाठ्यक्रम–चरण–।। के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रस्तुत रिपोर्टों पर आधारित अनुसंधान प्रकाशन।

स्थिति – रिपोर्ट तैयार करने के लिए नागालैंड, पश्चिम बंगाल, हिमाचल प्रदेश, बिहार, जम्मू और कश्मीर, कर्नाटक और केरल राज्यो को शामिल किय गया है।

4. 82वें आधरिक पाठ्यक्रम के परिवीक्षाधीनों द्वारा प्रस्तुत रिपोर्टो पर आधारित अनुसंधान प्रकाशन की तैयारी

मोनोग्राफ तैयार करने के लिए मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश राज्यों को लिया गया है।

स्थिति – 82वें आधरिक पाठ्यक्रम के परिवीक्षाधीनों द्वारा मध्य प्रदेश तथा राजस्थान पर ग्रामीण रिपोर्टों पर आधारित मोनोग्राफ तैयार किया जा चुका है।

5. बाह्य प्रकाशन

पुस्तक का नाम	वर्ष	प्रकाशक
एग्रेरियन क्राइसिस एंड फार्मर सुइसाइड्स	सितम्बर, 2010	सेज प्रकाशन

6. आंतरिक प्रकाशन

पुस्तक का नाम	वर्ष	संपादनकर्ता
ह्वट वुमैन वान्ट–रूरल एरियाज ऑफ मध्य प्रदेश एंड राजस्थान	मई, 2010	आशीष वच्छानी, सरोज अरोड़ा
इवेल्युएशन ऑफ कम्प्यूटरराइजेशन ऑफ लैंड रिकॉर्ड्स इन गुजरात	सितम्बर, 2010	आशीष वच्छानी, एच.सी.बेहरा

7. आगामी प्रकाशनों की स्थिति

पुस्तक का नाम	वर्ष	प्रकाशक
सोसियो-इकनोमिक प्रोफाइल ऑफ रूरल इंडिया-वाल्यूम-IV सीरीज-II (ईस्टर्न इंडिया)	प्रेस में	कंसेप्ट पब्लिसिंग कंपनी
सोसियो-इकनोमिक प्रोफाइल ऑफ रूरल इंडिया वोल्यूम-V, सीरीज-II (नॉर्थ एंड सेन्ट्रल इंडिया)	प्रेस में	कंसेप्ट पब्लिसिंग कंपनी
सोसियो-इकनोमिक प्रोफाइल ऑफ रूरल वोल्यूम-II, सीरीज-II (नॉर्थ ईस्ट इंडिया) प्रो.एस.सी. पात्रा	प्रेस में	कंसेप्ट पब्लिसिंग कंपनी
सोसियो-इकनोमिक प्रोफाइल ऑफ रूरल इंडिया वोल्यूम-I, सीरीज-II (साउथ इंडिया)	काम चल रहा है	कंसेप्ट पब्लिसिंग कंपनी
सोसियो-इकनोमिक प्रोफाइल ऑफ रूरल वोल्यूम-III, सीरीज-II (वेस्टर्न इंडिया)	काम चल रहा है	कंसेप्ट पब्लिसिंग कंपनी
डिप्रैस्ड कास्ट लैंड्स : देयर स्टेटस टुडे-अ स्टडी इन दं स्टेट ऑफ तमिलनाडु	काम चल रहा है	सी.आर.एम
स्टेट ऑफ इंडियन विलेजेस	काम चल रहा है	सी.आर.एम

आपदा प्रबंधन केंद्र

1. इन्सिडेंट एंड इमर्जेन्सी मैनेजमैंट (31 मई–4 जून, 2010)

कार्यक्रम का उद्देश्य

(क) प्राकृतिक आपदाओं तथा अन्य आपात–स्थितियों हेतु अभीष्ट योजना–निर्माण, प्रबंध तथा संप्रेषण कौशलों का विकास करना;

(ख) वायरलेस रेडियो टेलीफोन ले–आउट तथा ई.ओ.सी. प्रबंध के जरिए आपदा संप्रेषण प्रोटोकॉल समेत अन्य संप्रेषण कौशलों का उपयोग करना; तथा

ब्योरा	विवरण
पाठ्यक्रम / संगोष्ठी / कार्यशाला / सम्मेलन का नाम	इन्सिडेंट एंड इमर्जेन्सी मैनेजमैन्ट
अवधि तथा तारीख	1 सप्ताह (31 मईः 4 जून, 2010)
पाठ्यक्रम टीम	श्री राजेश आर्य,कार्यपालक निदेशक आपदा प्रबंध केंद्र डॉ. इन्द्रजीत पाल, सह आचार्य आपदा प्रबंध केंद्र श्री एन.वी.जोसैफ, अनु. अधिकारी, आपदा प्रबंध केंद्र
पाठ्यक्रम का परिचय	यह कार्यक्रम सरकारी क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिकों तथा प्रौद्योगिकीविदों के लिए राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत आपदा प्रबंधन केंद्र द्वारा आयोजित किया गया था।
लक्ष्य समूह	कनिष्ठ तथा मध्यम–स्तरीय वैज्ञानिक
समूह–गठन	18 वर्ष तक की सेवा वाले वैज्ञानिक / प्रौद्योगिकीविद कुल–18 (सभी पुरुष)
उद्घाटनकर्ता	श्री दुष्यंत नरियाला, उ.नि.व., ला.ब.शा.रा.प्र.अकादमी
समापन भाषण	श्री पी.के.गेरा, संयुक्त निदेशक, ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी

(ग) ग्रामीण संदर्भ में आपदा नियंत्रण तंत्र के बुनियादी तत्वों कर उपयोग करना।

पाठ्यक्रम क्रियाकलाप / विशेषताएं

इस पाठ्यक्रम में, भारत में आपदा प्रबंध, आपदा नियंत्रण तंत्र की जानकारी, संसाधन प्रबंध संबंधी संकल्पना, आपदा कार्य–योजना तैयारी, आपदा की स्थिति में अभ्यास, आपाद क्रिया केंद्र की संकल्पना, स्वरूप, आपदा प्रबंध में जी. आई.एस. / आर.एस.का उपयोग जैसे विषयों पर चर्चा की गई।

प्रमुख अतिथि वक्ता

डॉ. एम.भास्कर, सी.डी.पी. प्रमुख, डॉ. एम.सी.आर. संस्थान, हैदराबाद, डॉ. अरुण के. सर्राफ, भू–विज्ञान संस्थान, आई.आई.टी.रूड़की, डॉ. आनंद शर्मा, आई.एम.डी. देहरादून, डॉ. पीयूष रौतेला, कार्यपालक निदेशक, डी.एम.एम.सी. देहरादून, डॉ. वी.के. शर्मा, प्रोफेसरए आई.आई.पी.ए., नई दिल्ली तथा एम.आर.आई, देहरादून के संकाय सदस्यगण।

2. मैनेजमैंट एंड लीडरशिप डेवलेपमैंट (14–18 जून, 2010)

ब्योरा	विवरण
पाठ्यक्रम / संगोष्ठी / कार्यशाला / सम्मेलन का नाम	मैनेजमैंट एंड लीडरशिप डेवलेपमैंट
अवधि तथा तारीख	1 सप्ताह (14–18 जून, 2010)
पाठ्यक्रम टीम	श्री राजेश आर्य,कार्यपालक निदेशक आपदा प्रबंध केंद्र डॉ. इन्द्रजीत पाल, सह आचार्य आपदा प्रबंध केंद्र श्री एन.वी.जोसैफ, अनु. अधिकारी, आपदा प्रबंध केंद्र
पाठ्यक्रम का परिचय	यह कार्यक्रम सरकारी क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिकों तथा प्रौद्योगिकीविदों के लिए राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत आपदा प्रबंधन केंद्र द्वारा आयोजित किया गया था।
लक्ष्य समूह	मध्यम तथा वरिष्ठ–स्तरीय वैज्ञानिक
समूह–गठन	9 वर्ष तक की सेवा वाले वैज्ञानिक / प्रौद्योगिकीविद कुल–23 (पुरुष 21; महिला 02)
उद्घाटनकर्ता	श्री पदमवीर सिंह, निदेशक, ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी
समापन भाषण	श्री पी.के.गेरा, संयुक्त निदेशक, ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी

कार्यक्रम का उद्देश्यः प्रशिक्षणार्थियों को मौजूदा टीम तथा नई टीम में भी नेता के तौर पर कार्य को प्रभावपूर्ण तथा दक्षतापूर्ण ढंग से सम्पन्न करने में समर्थ बनाना, नेतृत्व तथा प्रभावी संप्रेषण के उपयोग से टीम का प्रभावपूर्ण ढंग से नेतृत्व करना, कार्य से संबंधित निर्णय की स्थिति का पता लगाना तथा तदनुसार प्रभावी निर्णय लेना, और टकरावों का कारगरता से समाधान करना।

पाठ्यक्रम क्रियाकलाप तथा विशेषताएं

पाठ्यक्रम का आरंभ श्री पदमवीर सिंह, निदेशक के उद्घाटन भाषण से हुआ। पाठ्यक्रम क्रियाकलापों में, नेतृत्व के सिद्घांत, निर्णय लेना, टकराव प्रबंधन पर व्याख्याानों के साथ ही अनुभव आदान–प्रदान तथा पैनल परिचर्चा आदि शमिल रही।

प्रमुख अतिथि वक्ता

डॉ. साधना मल्होत्रा, देहरादून; डॉ. सुनील सेनन, मसूरी; श्री विनीत बहुगुणा, देहरादून

3. साइन्स एंड टेक्नोलोजी फॉर रूरल सोसाइटीज प्रोग्राम (28 जून–9 जुलाई, 2010)

ब्योरा	विवरण
पाठ्यक्रम / संगोष्ठी / कार्यशाला / सम्मेलन का नाम	साइन्स एंड टेक्नोलोजी फॉर रूरल सोसाइटीज प्रोग्राम
अवधि तथा तारीख	2 सप्ताह, 28 जून–9 जुलाई,2010
पाठ्यक्रम टीम	श्री राजेश आर्य, कार्यपालक निदेशक, सी.डी.एम. डॉ. इन्द्रजीत पाल, सह–आचार्य, सी.डी.एम. श्री एन.वी.जोसैफ अनुसंधान अधिकारी, सी.डी.एम.
पाठ्यक्रम परिचय	यह कार्यक्रम ''नैशनल ट्रेनिंग प्रोग्राम फॉर साइंटिस्ट्स / टेक्नोलोजिस्ट्स वर्किंग इन गवर्नमैंट सेक्टर' योजना के तहत आपदा प्रबंधन केंद्र द्वारा आयोजित तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया था।
लक्ष्य समूह	सरकारी स्थापनाओं में कम से कम 2 वर्ष की सेवा वाले वैज्ञानिक / प्रौद्योगिकीविद
समूह गठन	कुल 17, पुरुष 16, महिला–01
उद्घाटनकर्ता	श्री पी.के.गेरा, संयुक्त निदेशक
समापन भाषण	श्री राजेश आर्य कार्यपालक निदेशक, सी.डी.एम.

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

प्रमुख वैज्ञानिकों तथा व्यवसायविदों से युवा वैज्ञानिकों का मार्गदर्शन करवाना, ग्रामीण समाजों के लिए विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी आधारित ज्ञान–आधार विकसित करना, पी.एल.ए. तकनीकों द्वारा ग्राम भ्रमण अध्ययन।

पाठ्यक्रम क्रियाकलाप तथा विशेषताएं

पाठ्यक्रम में ग्रामीण विकास तथा ग्लोबल वार्मिंग संबंधी व्याख्यानों तथा फिल्में का सहारा लिया गया, प्रतिभागियों को पी.एल.ए. अध्ययनों के लिए गांवों में भेजा गया था जिन्होंने ग्राम अध्ययन के पश्चात रिपोर्ट तैयार तथा प्रस्तुत की।

प्रमुख अतिथि वक्ता

डॉ. वी.सी. गोयल, वैज्ञानिक– एफ, रूड़की, डॉ. वी.वी. आर. सिंह, एफ.आर.आई. देहरादून, श्री चंडी प्रसाद भट्ट, गोपेश्वर, डॉ. आर.के. पंडित, ग्वालियर, श्री अरुण गुहा, मसूरी, श्री अनिंदो बनर्जी, पटना, डॉ. आनंद शर्मा, आई.एम.डी. देहरादून, श्री जॉन बोस्को लॉर्डूसामी, आई.आई.टी, मद्रास, डॉ. एच.सी. पोखरियाल, दिल्ली।

4. जॉइन्ट ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन डिजास्टर मैनेजमैंट फॉर आई.ए.एस. / आई.पी.एस. / आई.एफ.एस. (26–30 जुलाई, 2010)

कार्यक्रम का उद्देश्य

तीनों सेवाओं के अधिकारियों में परस्पर भाई–चारा तथा सामंजस्य की भावना पैदा करना जिससे शासन संचालन में और अधिक सुधार लाया जा सके।

पाठ्यक्रम क्रियाकलाप तथा विशेषताएं

इस पाठ्यक्रम में आपदा प्रबंध के विभिन्न पहलुओं यथा–आपदा अनुक्रिया तंत्र की जानकारी, भारत में आपदा प्रबंधन, एम.डी.एम.ए.की भूमिका, सुनामी– तमिलनाडु के संदर्भ मै, सिविल प्रतिरक्षा की भूमिका, राष्ट्रीय आपदा उपशमन परियोजनाएं, आतंकवादी संकट– भारता की द्विविघा, परमाणु तथा रेडियोधर्मी आपदाओं का प्रबंध, आपात क्रिया केंद्र की संकल्पना तथा स्वरूप, आदि विषयों को लिया गया।

ब्योरा	विवरण
पाठ्यक्रम/संगोष्ठी/कार्यशाला/सम्मेलन का नाम	जॉइन्ट ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन डिजास्टर मैनेजमैंट फॉर आई.ए.एस./आई.पी.एस./आई.एफ.एस.
अवधि तथा तारीख	1 सप्ताह, 21–30 जुलाई,2010
पाठ्यक्रम टीम	श्री दुष्यंत नरियाला
पाठ्यक्रम परिचय	यह कार्यक्रम कार्मिक तथा प्रशिक्षण विभाग, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया था।
लक्ष्य समूह	अखिल भारतीय सेवाओं के अधिकारी
समूह गठन	कुल 21
उद्घाटनकर्ता	श्री ए.बी. प्रसाद, एन.डी.एम.ए. नई दिल्ली
समापन भाषण	श्री पदमवीर सिंह, निदेशक, ला.ब.शा.रा.प्र.अकादमी

प्रमुख अतिथि वक्ता

श्री ए.बी. प्रसाद, सचिव, एन.डी.एम.ए.नई दिल्ली, श्री अमित झा, संयुक्त सचिव, एन.डी.एम.ए, नई दिल्ली, डॉ. जे. राधाकृष्णन, यू.एन.डी.पी. नई दिल्ली, श्री ए. आर. मुले, निदेशक (मिटिगेशन), श्री के. एम. सिंह, एन.डी.एम.ए. नई दिल्ली, मेज.जन.वी.के. दत्ता, एन.डी.एम.ए. नई दिल्ली, ब्रिगे. (डॉ.) बी. के. खन्ना, एन.डी.एम.ए. नई दिल्ली, डॉ. बिक्रम गुप्ता, वैज्ञानिक, वाडिया संस्थान, देहरादून, डॉ. एम.सी. अबानी, एन.डी.एम.ए. नई दिल्ली, श्री आलोक शर्मा, पुलिस उपमहानिदेशाक, कुंभ मेला 2010, डॉ. वी.वी.आर.सिंह, एफ.आर.आई, देहरादून, श्री एम.एफ. दस्तूर, मुख्य अग्नि अधिकारी, अहमदाबाद तथा डॉ. आनंद शर्मा, आई.एम.डी. देहरादून।

5. मैनेजमैंट एंड लीडरशिप डेवलेपमैंट
(16–20 अगस्त, 2010)

ब्योरा	विवरण
पाठ्यक्रम/संगोष्ठी/कार्यशाला/सम्मेलन का नाम	मैनेजमैंट एंड लीडरशिप डेवलेपमैंट
अवधि तथा तारीख	1 सप्ताह (16–20 अगस्त, 2010)
पाठ्यक्रम टीम	डॉ. एस.एच.खान, पाठ्यक्रम समन्वया, आपदा प्रबंध केंद्र डॉ. इन्द्रजीत पाल, सह आचार्य आपदा प्रबंध केंद्र श्री एन.वी.जोसैफ, अनु. अधिकारी, आपदा प्रबंध केंद्र
पाठ्यक्रम परिचय	यह कार्यक्रम सरकारी क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिकों तथा प्रौद्योगिकीविदों के लिए राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत आपदा प्रबंधन केंद्र द्वारा आयोजित किया गया था।
लक्ष्य समूह	मध्यम तथा वरिष्ठ–स्तरीय वैज्ञानिक
समूह–गठन	9 वर्ष तक की सेवा वाले वैज्ञानिक/प्रौद्योगिकीविद कुल–23 (पुरुष 15; महिला 06)
उद्घाटनकर्ता	श्री तेजवीर सिंह, उपनिदेशक, ला.ब.शा.रा.प्र.अकादमी
समापन भाषण	श्री संजीव चोपड़ा, उपनिदेशक, ला.ब.शा.रा.प्र.अकादमी

कार्यक्रम का उद्देश्य

प्रशिक्षणार्थियों को मौजूदा टीम तथा नई टीम में भी नेता के तौर पर कार्य को प्रभावपूर्ण तथा दक्षतापूर्ण ढंग से सम्पन्न करने में समर्थ बनाना, नेतृत्व तथा प्रभावी संप्रेषण के उपयोग से टीम का प्रभावपूर्ण ढंग से नेतृत्व करना, कार्य से संबंधित निर्णय की स्थिति का पता लगाना तथा तदनुसार प्रभावी निर्णय लेना, और टकरावों का कारगरता से समाधान करना।

पाठ्यक्रम क्रियाकलाप तथा विशेषताएं

पाठ्यक्रम का आरंभ श्री तेजवीर सिंह, उपनिदेशक के उद्घाटन भाषण से हुआ। पाठ्यक्रम क्रियाकलापों में, नेतृत्व के सिद्घांत, निर्णय लेना, टकराव प्रबंधन पर व्याख्यानों के साथ ही अनुभव आदान–प्रदान तथा पैनल परिचर्चा आदि शमिल रही।

प्रमुख अतिथि वक्ता

डॉ. साधना मल्होत्रा, देहरादून; डॉ. सुनील सेनन, मसूरी; श्री सुमित चौधरी, नई दिल्ली, डॉ. अरुण कुमार, इलाहाबाद, श्री अतुल शर्मा, गुड़गांव।

6. केंद्र के अन्य क्रियाालाप

आपदा प्रबंध केंद्र द्वारा संचालित मॉड्यूल / सत्र

पाठ्यक्रम का नाम	सत्र	तारीख	संख्या	स्थान
भा.प्र.सेवा, चरण–I 2009 बैच	आपदा प्रबंध पर दो सत्र	29.3.2010	121	अकादमी परिसर
भा.प्र.सेवा, चरण–I 2009 बैच	हैम रेडियो पर एक सत्र	22.4.2010	121	अकादमी परिसर
चरण–I पाठ्यक्रम के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को हैम रेडियो प्रशिक्षण	हैम लाइसेंस हेतु परीक्षा	6/7.6.2010	21	अकादमी परिसर
भा.ति.सी.पुलिस के वरिष्ठ उपमहानिरीक्षकों के लिए एच.एस.एम. पाठ्यक्रम	राष्ट्रीय आपदा प्रबंध योजना की जानकारी तथा सी.पी.एम.एफ./आई.टी.बी.पी. की भूमिका	6.7.2010	08	भा.ति.सी.पुलिस अकादमी मसूरी
भा.प्र.सेवा चरण–III (चौथा) पाठ्यक्रम हेतु प्रकरण अध्ययन		23.7.2010	93	अकादमी परिसर
भा.प्र.सेवा चरण–III (चौथा) हेतु ई.ओ.सी.एम	ई.ओ.सी.पर एक सत्र	26.7.2010	08	भा.ति.सी.पुलिस अकादमी मसूरी

राष्ट्रीय जेंडर केंद्र

इस केंद्र की स्थापना 1998 में हुई थी जिसका उद्‌देश्य जेंडर को नीति की मुख्य धारा में लाना, इसके लिए कार्यक्रम का निर्धारण करना और उसका क्रियान्वयन करना था ताकि जेंडर को सरकार में प्राथमिकता के तौर पर स्थापित किया जाए और पुरुषों तथा महिलाओं का समान विकास सुनिश्चित किया जा सके। जेंडर को लेकर इस केंद्र का दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करना रहा है कि जेंहर संबंधित मुद्‌दों को प्रशिक्षण कार्यक्रम का हिस्सा बनाकर उसका क्रियान्वयन तथा अनुश्रवण किया जा सके। यह केंद्र पाठ्यक्रमों तथा पाठ्य सामग्री के जरिए जेंडर प्रशिक्षण प्रदान करता है ताकि अकादमी द्वारा संचालित नियमित पाठ्यक्रमों में संकल्पनात्मक तथा विश्लेषणात्मक जेंडर संबंधों को समझा जा सके। इसके अतिरिक्त, भा.प्र.सेवा के मध्यम से लेकर वरिष्ठ स्तर तक के अधिकारियों और राज्य सिविल सेवा से भा.प्र.सेवा में पदोन्नत अधिकारियों को भी जेंडर संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। यह केंद्र जेंडर संबंधित विभिन्न मुद्‌दों पर प्रशिक्षक–प्रशिक्षण भी संचालित करता रहा है।

संगोष्ठी	''मैनस्ट्रीमिंग सोशल सेक्टर इशूज विद फोकस ऑन जेंडर' पर अखिल भारतीय सेवाओं के लिए संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम
अवधि तथा तारीख	पांच दिवस, 19–23 जुलाई, 2010
पाठ्यक्रम टीम	डा. एन.सी. सक्सेना, श्री तेजिन्दर संधू, श्रीमती जसप्रीत तलवार, प्रोफे. ए.एस. रामचन्द्र, सुश्री अंजलि चौहान
पाठ्यक्रम परिचय	श्री तेजिन्दर संधू, श्रीमती जसप्रीत तलवार
लक्ष्य समूह	अखिल भारतीय सेवा के अधिकारी तथा सशस्त्र सेवा के अधिकारी
समूह गठन	कुल 29, पुरुष–23, महिला–06
कार्यक्रम उद्घाटन	श्री पदमवीर सिंह
समापन भाषण	श्री पी.के. गेरा

राष्ट्रीय जेंडर केंद्र ने कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग तथा यूनिसेफ के सहयोग से ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी, मसूरी में **''मैनस्ट्रीमिंग सोशल सेक्टर इशूज विद द फोकस ऑन जेंडर'** पर 19–23 जुलाई, 2010 को संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

इस कार्यक्रम के उद्‌देश्य निम्नवत हैं:–

इस कार्यक्रम के मुख्य उद्‌देश्य अखिल भारतीय सेवाओं तथा सशस्त्र बल सेवाओं के अधिकारियों को एक मंच पर साथ–साथ लाना था जिससें वे एक–दूसरे से विचार–विमर्श करके आवश्यकताओं का समाधान ढूंढ सकें।

- जेंडर को नीति, कार्यक्रम निर्माण तथा क्रियान्वयन की मुख्य धारा में लाना ताकि जेंडर को सरकार की प्राथमिकताओं में लाया जा सके।
- एम.डी.जी. लक्ष्यों की प्राप्ति में मानव की प्रगति की समीक्षा करना, कमियों का विश्लेषण करना तथा निवारक उपायों का सुझाव देना।
- बच्चों के विकास तथा संवृद्धि से जुड़े मुद्दों की समझ विकसित करना, जिसमें स्वास्थ्य शिक्षा, जल, स्वच्छता तथा बाल विकास में नीतियों के प्रभाव को भी शामिल किया गया है।
- विकास के लिए जेंडर मुद्दों की समझ तथा उनके निहितार्थो की समझ विकसित करना।
- भारत में बच्चों के विकास में बाधक तत्वों की पहचान करना तथा उनका समाधान करना।

पाठ्यक्रम क्रियाकलाप तथा विशेषताएं

- कार्यक्रम में लिए गए विषय तथा प्रमुख अतिथि वक्ता
- भारत में एम.डी.डी. – रिपोर्ट कार्ड की प्रस्तुति – राजगौतम मित्रा

सामाजिक क्षेत्र पर मॉड्यूल

- भारत में सामाजिक क्षेत्र का परिदृश्य – डॉ. एन.सी. सक्सेना, भा.प्र.सेवा (सेवानिवृत्त), सदस्य राष्ट्रीय सलाहकार समिति, नई दिल्ली ।
- जेंडर तथा विकास – सुश्री बनिता शर्मा, जेंडर विशेषज्ञ ।
- उपेक्षित समूह : जनजातीय लोग – श्री देव नाथन तथा श्री वरजीनियस, एक्सएएक्सऐ।

बाल संरक्षण पर मॉड्यूल

- किशोर न्याय अधिनियम – सुश्री नीना नायक, अध्यक्ष, के.एस.सी.सी.आर., कर्नाटक ।
- बाल संरक्षण – सुश्री सुधा मुरली, बाल संरक्षण, आई.एन.आई.सी.ई.एफ. ।
- मानव तस्करी रोक – श्री महेश भागवत, डी.आई.जी. ईलुरू क्षेत्र, ईलुरू / श्री प्रवीण पटकर, निदेशक, प्रेरणा एन.जी.ओ. ।
- निर्धनता की समझ – डॉ. एन.सी. सक्सेना भा.प्र.सेवा (सेवानिवृत्त), सदस्य राष्ट्रीय सलाहकार समिति, नई दिल्ली ।
- राज्य निर्धनता उन्मूलन मिशन 'आश्रय प्रोजेक्ट' केरल सरकार – श्री टी.के. जोस,प्रबन्ध निदेशक, रोड एवं पुल विकास कॉरपोरेशन, केरल ।

जेंडर आधारित हिंसा पर मॉड्यूल

- घरेलू हिंसा अधिनियम – सुश्री उज्वला कादरेकर
- यौन उत्पीड़न – श्रीमती जसप्रीत तलवार, भा.प्र.सेवा, उप निदेशक (वरिष्ठ) तथा श्रीमती अंजलि चौहान, प्रोग्राम अधिकारी, राष्ट्रीय जेंडर केन्द्र ।
- महिला भ्रूण हत्या – डॉ. साबू एम. जॉर्ज, सलाहकार महिला विकास अध्ययन केन्द्र तथा डा. पुनीत बेदी, महिला रोग विशेषज्ञ।

जेंडर बजट पर मॉडयूल

- जेंडर बजटिंग – श्रीमती सरोजिनी जी. ठाकुर, भा.प्र.सेवा, अपर मुख्य सचिव,पर्यावरण, विज्ञान एवं तकनीकी

अनुभव आदान–प्रदान

- सुरक्षित मातृत्व तथा बाल उत्तरजीविता कार्यक्रम, गुजरात – डॉ. अमरजीत सिंह
- सुरक्षित स्वास्थ्य तथा स्वच्छता, सरगुजा जिला, छत्तीसगढ़ – डा. रोहित यादव, तकनीकी शिक्षा, रोजगार तथा प्रशिक्षण, छत्तीसगढ

'इंटिग्रेटेड डिस्ट्रिक्ट ऍप्रोच' पर सम्मेलन

2–4 अगस्त, 2010

सम्मेलन	इंटिग्रेटेड डिस्ट्रिक्ट ऍप्रोच
अवधि तथा तारीख	तीन दिवसीय, 2–4 अगस्त, 2010
पाठ्यक्रम टीम	डॉ. एन.सी. सक्सेना, श्री तेंजिदर सन्धू, श्रीमती जसप्रीत तलवार, सुश्री अंजलि चौहान
पाठ्यक्रम परिचय	श्री तेंजिदर संधू
लक्ष्य समूह	राज्यों में '' इंटिग्रेटेड डिस्ट्रिक्ट एप्रोच'' के क्रियान्वयन से जुड़े भा.प्र.सेवा के जिला–स्तरीय अधिकारी
समूह गठन	कुल 61, पुरुष–51, महिला–10
कार्यक्रम उद्घाटन	डॉ. एन.सी. सक्सेना, श्री तेंजिदर सिंह संधू, श्री एडॉर्ड बीबेडर, श्रीमती जसप्रीत तलवार
समापन भाषण	डॉ. करीन हुलसोफ, डॉ. एन.सी. सक्सेना, श्री तेंजिदर सिंह संधू, श्री एडार्ड बीबेडर, श्री थॉमस जॉर्ज, श्रीमती जसप्रीत तलवार

राष्ट्रीय जेंडर केंद्र ने यूनिसेफ के सहयोग से ''इंटिग्रेटेड डिस्ट्रिक्ट ऍप्रोच'' पर 2–4 अगस्त, 2010 को ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी, मसूरी में एक तीन–दिवसीय सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य उन समन्वित जिलों के अनुभवों तथा नवाचारों का आदान–प्रदान करना था जहां भारत सरकार–यूनीसेफ, इंटीग्रेटेड डिस्ट्रिक्ट ऍप्रोच कार्यान्वित किया जा रहा है।

इस सम्मेलन के उद्देश्य निम्नवत् थे–

- जिलों के मूल्यांकन परिणामों का आदान–प्रदान करना
- विकेंद्रित नियोजन हेतु क्षमता संवर्द्धन करना
- प्रयासों की निरंतरता तथा अनुकरण के लिए खाका तैयार करना
- जिलों के उत्कृष्ट प्रयासों का आदान–प्रदान करना।

  इस सम्मेलन में मेडक, रायपुर, पुरुलिया, डिब्रूगढ़, टौंक, वैशाली, पूर्वी सिंहभूम, गुना, शिवपुरी, वलसाड, कृष्णगिरि, ललितपुर, कोरापुट, चन्द्रपुर, लातूर, नंदरबार तथा राजनंदगांव जिलों से कुल 61 प्रतिभागियों (महिला 10, पुरुष 51) ने भाग लिया।

पाठ्यक्रम क्रियाकलाप तथा विशेषताएं

इस सम्मेलन में निम्नलिखित विषयों को लिया गया :–

- इमर्जिंग इशूज इन इंटिग्रेटेड डिस्ट्रिक्ट्स– मोनिटरिंग
- सोशल इन्क्लुजन
- डिसेंट्रलाइज्ड प्लॅनिंग
- बिहेवियर चेंज कम्युनिकेशन
- डिस्ट्रिक्ट प्लॅनिंग एंड मोनिटरिंग यूनिट्स – झारखंड एक्सपिअरेंस
- विलेज प्लॅनिंग एंड विलेज इन्फॉमेंशन सेंटर्स
- कम्युनिटी बेस्ड ट्रेकिंग सिस्टम इन छत्तीसगढ़ – एन इनोवेशन
- डिस्ट्रिक्ट एंड ब्लॉक लेवल मैकेनिज्म फॉर कनवर्जेंश
- सोशल पॉलिसी, प्लॅनिंग, मोनिटरिंग एंड इवेलुएशन

प्रमुख अतिथि वक्ता

श्री एडॉर्ड बीगबेडर, भारतीय अधिकारी, यूनिसेफ, नई दिल्ली, श्री तेजिन्दर संधू, मुख्य फील्ड ऑफिस, यूनिसेफ, महाराष्ट, श्री राजगौतम मित्रा, एम एण्ड ई अधिकारी, यूनिसेफ, सुश्री रम्या सुब्रहमणियन,प्रोग्राम विशेषज्ञ, सामाजिक नीति, यूनिसेफ, श्री एस.एम. विजयानंद, मुख्य सचिव, स्थानीय सरकार, डॉ. एन.सी. सक्सेना, भा.प्र.सेवा (सेवानिवृत्त), सदस्य राष्ट्रीय सलाहकार समिति, नई दिल्ली, सुश्री सुप्रिया मुखर्जी, प्रोग्राम विशेषज्ञ, यूनिसेफ, सुश्री वीणा बंदोपाध्याय,प्रबन्धक, जिला सपोर्ट, एसपीपीएमई, यूनिसेफ, श्री थॉमस जॉर्ज, प्रबन्धक, जिला सपोर्ट, एसपीपीएमई, यूनिसेफ, डॉ. करीन हुलसॉफ,यूनिसेफ, प्रतिनिधि ।

समग्र गुणवता प्रबंधन प्रकोष्ठ

अकादमी के क्रियाकलापों में समग्र गुणवत्ता प्रबंधन की अवधारणा विकसित करने के लिए अकादमी ने कई क्रियाकलाप आरंभ किए हैं। इन क्रिया–कलापों में अकादमी में कई तरह के कर्मचारी अनुकूल कार्यकलापों को शुरु करना तथा सुविधाओं और जनोपयोगी सेवाओं का उन्नयन करना आदि शामिल है। इसके अलावा, अकादमी ने टीक्यूएम अवधारणाओं को अकादमी में संचालित लगभग सभी तरह के पाठ्यक्रमों में जरूरी इनपुट के रूप में रखा है। वास्तव में, टीक्यूएम अकादमी में संचालित पाठ्यक्रमों का एक आंतरिक भाग हो चुका है। टीक्यूएम से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण विषयों को आधारिक पाठ्यक्रमों भा.प्र.से. चरण–। तथा सेवाकालीन पाठ्यक्रमों जैसे विविध प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में शामिल किया गया है।

आधारिक पाठ्यक्रम, भा.प्र.से. चरण–। तथा सेवाकालीन पाठ्यक्रमों जैसे विविध प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में सिस्टम थिंकिंग, सिक्स सिग्मा जैसे उन्नत विषय शामिल किए जा रहे हैं। टीक्यूएम प्रकोष्ठ ने जनवरी 2008 तक एक अर्द्धवार्षिक, पत्रिका ''सेवा गुणवता'' प्रकाशित करने का भी लक्ष्य रखा है। 23 फरवरी, 2008 को इंडिया इंटरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली में डॉ. वी.के. अग्निहोत्री, भा.प्र.से. (सेवानिवृत्त) महासचिव, राज्यसभा द्वारा प्रथम अर्द्धवार्षिक पत्रिका ''सेवा गुणवता'' आरंभ की गई थी।

सरकार में समग्र गुणवत्ता प्रबंध पर प्रशिक्षण कार्यक्रम (5.7.2010 से 09.7.2010)

ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी के समग्र गुणवत्ता प्रकोष्ठ द्वारा ''सरकार में समग्र गुणवत्ता प्रबंध'' पर 5.7.2010 में 09.7.2010 तक पांच–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का समन्वय डॅा. एस.एच. खान, उ.नि.व. ने किया। इसमें आंध्र प्रदेश, गुजरात महाराष्ट्र, उड़ीसा, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, मेघालय तथा दिल्ली के कुल 15 अधिकारियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्य निम्नलिखित थेः

i. समस्याओं का पता लगाने तथा उनका विधिवत समाधान करने हेतु सहभागियों में कौशल विकसित करना;

ii. समग्र गुणवत्ता प्रबंधन की अवधारणाओं को स्पष्ट तरीके से समझना;

iii. अस्पताल प्रबंधन में बेहतर कार्य–व्यवहार हेतु उसका प्रतिपादन करना, और

iv. जिला अस्पतालों में सुधार हेतु एक 'रोड मैप' तैयार करने तथा उसे लागू करने के लिए उन्हें सुविधाएं उपलब्ध कराना।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य राज्यों की टीमों को गुणवत्ता सुधार के साथ ही सरकारी प्रंबधन में बेहतरी लाने के लिए प्रशिक्षित किया जाना था।

अतिथि संकाय

श्री आलोक पुरी, नई दिल्ली, श्री डी.एम.आर.पांडा, एन.टी.पी.सी., श्री वी.एन. चौधरी, एन.टी.पी.सी., श्री अजय कुमार, मैक्स इंटरनेशनल, डॉ. के. कुमार, निदेशक, मारुति, सुश्री लक्ष्मी वी. मुरली, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेस, श्री मनीष मोहन, निदेशक, डी.ए.आर.पी.जी., श्री बी.वैंकटरमण, एन.ए. बी.सी.बी., श्री आर सी. भार्गव, भा.प्र.सेवा, अध्यक्ष, मारुति सुजुकी इंडिया

पाठ्यक्रम विशेषता

इस पाठ्यक्रम में, समग्र गुणवत्ता प्रबंध, सरकार प्रबंध में समग्र गुणवत्ता प्रबंध की प्रासंगिकता जैसे विषय लिए गए। इस पाठ्यक्रम को प्रतिभागियों ने काफी उपयोगी बताया तथा प्रत्येक राज्य के लिए नियमित रूप से ऐसे पाठ्यक्रम आयोजित किए जाने की आवश्यकता बताई।

राष्ट्रीय शहरी प्रबंध केंद्र (एनसीयूएम)

राष्ट्रीय शहरी प्रबंध केंद्र ने 22–23 जुलाई, 2010 को चौथे दौर का परामर्शी सम्मेलन आयोजित किया है। ऐसा विचार है कि ऐसे शहरी व्यवसायविदों, निर्वाचित प्रतिनिधियों तथा नागरिक समाज संगठनों की पहचान के लिए सम्मेलन आयोजित किया जाए जो एम.सी.टी.पी. चरण–IV तथा V के लिए अपेक्षित प्रशिक्षण सामग्री तथा उसकी अवधि का निर्धारण तथा प्राथमिकताएं तय करे। प्राथमिकताएं न केवल शहरी प्रशासन तथा प्रबंध से संबंधित नीति विश्लेषण के लिए सुनिश्चित की जाए बल्कि शहरी सुधारों के कार्यान्वयन के लिए भी इनका निश्चय किया जाए।

परामर्शी सम्मेलन के उद्देश्य निम्नलिखित थेः–

- उन्नत तथा समेकित शहरी शासन हेतु वरिष्ठ सिविल सेवकों के क्षमता संवर्द्धन की पहचान करना
- अकादमी द्वारा संचालित एम.सी.टी.पी. चरण–IV तथा V में इस्तेमाल हेतु शहरी विकास संबंधी प्रशिक्षण सामग्री का निर्धारण तथा प्राथमिकता तय करना
- अकादमी द्वारा संचालित एम.सी.टी.पी. चरण–IV तथा V में, शहरी विकास संबंधी प्रशिक्षण सामग्री का मॉड्यूल या सिद्धांत के रूप में विषयों को शामिल करने के लिए उनकी पहचान करना
- शहरी विशेषज्ञों का मॉडयूल लेखकों तथा स्रोत व्यक्ति के तौर पर पैनल तैयार करना जिससे वे विभिन्न स्तरों पर प्रशिक्षण प्रदान कर सके।

लक्ष्यः

- स्वयं–शासी संस्थाओं को गतिशील संस्था के रूप में बढ़ावा देना
- सरकार में शहरी प्रबंधक तैयार करना
- विकेन्द्रीकरण तथा सुशासन के माध्यम से सहभागिता बढ़ाना
- शहरी क्षेत्रों में लोक प्रबंध के क्षेत्र में उत्कृष्टता लाना, जिसके फलस्वरूप क्रियाशील, पारदर्शी और जवाबदेह शासन के माध्यम से जीवन–स्तर में सुधार किया जा सके।
- शहरी विकास और प्रबंध से जुड़े भागीदारों की क्षमता और योग्यता में वृद्धि के अवसर प्रदान करना।
- शहरी क्षेत्रों में अध्यापन, प्रशिक्षण और अनुसंधान में गुणवत्तापूर्ण सुधार करना, जिसके तहत शहरी सुशासन और शहरों को सहभागी एवं रहने योग्य बनाना।

उद्देश्यः

- शहरी प्रबंध और विकास प्रशासन में व्यावसायिकता को प्रोत्साहन देने हेतु उत्प्रेरक संस्था के रूप में कार्य करना;
- विकेन्द्रीकरण, शहरी सुशासन के तरीके तथा नगरपालिका प्रबंध संबंधी जानकारी, सूचना और अनुभवों को साझा करना तथा ज्ञान के भंडार के रूप में कार्य करना;
- सिविल सेवकों को अपने ज्ञान और अनुभवों की अद्यतन करने के अवसर प्रदान करना, जिससे शहरी विकेन्द्रीकरण तथा सुशासन संबंधी अध्ययनों को बढ़ावा दिया जा सके।

- शहरी प्रशासन में सुधार करने हेतु प्रबंधकीय, तकनीकी एवं विश्लेषणात्मक कौशल में वृद्धि करना;
- प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना;
- शहरी विकास तंत्र अनुसंधान (कार्य अनुसंधान सहित) अध्ययन करना और/या इसकी स्वीकृति देना, जिससे शहरी प्रबंध, विकास, आवास और पर्यावरण इत्यादि के क्षेत्र में प्रभावशीलता तथा दक्षता में सुधार हो सके।
- शहरी प्रबंध प्रणाली के विभिन्न आयामों पर विशेषज्ञों प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन करना;
- प्रशिक्षण प्रभाव मूल्यांकन करना
- देश तथा विदेश के प्रशिक्षण संस्थानों के बीच सूचना के आदान–प्रदान हेतु नेटवर्किंग करना; तथा
  - सूचना का आदान–प्रदान, व्यावसायिक और निर्देशात्मक संसाधान
  - प्रशिक्षण एवं सर्वोत्तम क्रियाविधि संबंधी सूचना का आदान–प्रदान करना
  - प्रकरण/अनुसंधान अध्ययनों आदि का डाटा बेस तैयार करना।

सम्मेलन का नाम	राष्ट्रीय परामर्शी सम्मेलन– IV
अवधि तथा तारीख	दो दिवसीय, 22–23 जुलाई, 2010
पाठ्यक्रम परिचय	उन्नत तथा समेकित शहरी शासन हेतु वरिष्ठ सिविल सेवकों की क्षमता संवर्द्धन आवश्यकताओं की पहचान करना तथा अकादमी द्वारा संचालित एम.सी.टी.पी. चरण– IV एवं V में शहरी विकास संबंधी प्रशिक्षण सामग्री का निर्धारण और प्राथमिकता तय करना।
लक्ष्य समूह	विशेषज्ञों की राय ली जा रही है।
समूह गठन	कुल 10; पुरुष–19 महिला–01
कार्यक्रम का उद्घाटन	श्री गौरव द्विवेदी
समापन अभिभाशण	डॉ. एच.एम.मिश्रा

प्रकाशन प्रकोष्ठ

प्रकाशन प्रकोष्ठ अब प्रशिक्षण अनुसंधान एवं प्रकाशन प्रकोष्ठ (टी.आर.पी.सी.) के साथ विलय हो गया है। इस प्रकोष्ठ के मुख्य कार्य उपयुक्त प्रशिक्षण सॉफ्टवेयर की तैयारी, संग्रहण तथा प्रचार–प्रसार करना और द्विभाषी पत्रिका 'The Administrator' (प्रशासक) का प्रकाशन करना है। यह प्रकोष्ठ लोक प्रबंध, अर्थशास्त्र, विधि, प्रबंध, कम्प्यूटर इत्यादि के लिए आधारभूत प्रशिक्षण सामग्री भी तैयार करता है। इसके कार्यकलापों पर नजर रखने के लिए एक संपादकी मंडल तथा कोर समूह गठित किया गया है जिसके अध्यक्ष इस अकादमी के निदेशक हैं।

कार्य

प्रशिक्षण सॉफ्टवेयर तैयार करना तथा 'Adminidtrator' (प्रशासक) का संपादन करना, इस प्रकोष्ठ के मुख्य कार्य हैं–

(i) उन क्षेत्रों की पहचान करना, जिनमें सॉफ्टवेयर तैयार करने का काम किया जाना है;

(ii) सॉफ्टवेयर तैयार करने के लिए मार्गदर्शक व्यक्तियों की पहचान करना;

(iii) सूचना के आदान–प्रदान के लिए, संबंधित क्षेत्रों में विशेषज्ञ राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ संपर्क साधना;

(iv) एकत्रित सूचना तथा आंकड़ों के आधार पर विश्लेषणात्मक रूपरेखा तैयार करने के लिए अध्ययन करवाना;

(v) महसूस की गई समस्याओं से उबरने के लिए, कार्यनीति, विधियों का सुझाव देना;

(vi) उपयुक्त प्रशिक्षण फिल्मों की पहचान तथा खरीद;

(vii) प्रशिक्षण से संबंधित स्रोत पुस्तकों/प्रकरण अध्ययनों तथा अन्य पुस्तकों का प्रकाशन;

(viii) तैयार सॉफ्टवेयर का विपणन;

(ix) लोक प्रबंध में प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए मॉड्यूल तैयार करना, तथा

(x) प्रशिक्षण के प्रभाव के मूल्यांकन के लिए अध्ययन करवाना;

(xi) सूक्ष्म–सामुदायिक प्रयासों सहित, वैकल्पिक प्रशिक्षण विधियों पर प्रयोग करना।

प्रशिक्षण सॉफ्टवेयर के प्रकार

इस प्रकोष्ठ द्वारा निम्नलिखित प्रकार के प्रशिक्षण सॉफ्टवेयर तैयार किए गए हैं–

- स्रोत पुस्तकें;
- प्रशिक्षण मेन्युअल;
- प्रकरण अध्ययन; तथा
- प्रशिक्षण फिल्में

स्रोत पुस्तकें तथा प्रशिक्षण मेन्युअल

इस प्रकोष्ठ ने प्रशिक्षणाधीन अधिकारियों के लिए प्रशासन के विविध पहलुओं पर स्रोत पुस्तकें तथा प्रशिक्षण मेन्युअल तैयार करने की एक प्रमुख परियोजना आरंभ की है। हमारा यह उद्देश्य रहता है कि स्रोत पुस्तकें व्यावहारिक तथा कार्योन्मुखी हों और ये फील्ड में कार्यरत प्रशासकों के प्रभावी रूप से कार्य करने के लिए अमूल्य संदर्भ पुस्तकों के रूप में उपयोगी हों। इसमें इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि ऐसी पुस्तकें तैयार की जाएं जो प्रशासकों को उनके व्यावसायिक जीवन के विभिन्न स्तरों पर अर्जित ज्ञान और कौशल का भंडार हो।

इस वर्ष के दौरान निम्नलिखित पुस्तकें मुद्रित करने की प्रक्रिया में हैं अथवा मुद्रित की गई हैंः–

- श्री वी. रमाकांत एवं सुश्री बी.वी. उमादेवी द्वारा लिखित पुस्तक ''फारेस्ट इशूज फॉर नॅान–फॉरेस्ट ऑफिसर्स'' (प्रक्रियाधीन)

प्रकरण अध्ययन

वर्तमान में प्रशिक्षण की जितनी विधियां प्रयोग में लाई जा रही हैं, उनमें से प्रकरण अध्ययन विधि सेवाकालीन अधिकारियों के लिए अत्यंत प्रभावशाली रहती है। इसके अलावा, सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के प्रतिभागियों तथा समन्वयकों द्वारा दी गई फीडबैक में भी इस विधि को अत्यंत उपयोगी तथा प्रभावी बताया जाता है।

प्रशिक्षण सामग्री

प्रकाशन प्रकोष्ठ ने इंदिरा भवन के सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रतिभागियों हेतु पाठ्यसामग्री तैयार करने में सहायता प्रदान की है।

अकादमी द्विभाषी पत्रिका 'Administrator'/**'प्रशासक'**

'प्रशासक' पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य 'लोक प्रशासन, लोक प्रबंध तथा लोक नीति से जुड़े लोक सेवकों तथा विद्यार्थियों को इन क्षेत्रों में अनुसंधान तथा अभिलेखन के लिए मंच प्रदान करना' है। इस वर्ष हमने प्रकाशन के निम्न खंड तथा संस्करण प्रकाशित किए ।

- 'प्रशासक' खंड 51 संस्करण I (मुद्रित)
- 'प्रशासक' खंड 51 संस्करण II (मुद्रित)

अध्याय 5

क्लब और सोसाइटियां

अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को अकादमी परिसर के अंदर सृजनात्मक तथा वैविध्यपूर्ण परिसर जीवन का आनंद उठाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसकी प्राप्ति के लिए, वे स्वयं को विभिन्न क्लबों तथा सोसाइटियों से जोड़ते हैं। इस वर्ष के दौरान इन क्लबों तथा सोसाटियों के क्रियाकलाप निम्नवत् रहे–

साहसिक खेलकूद क्लब

अप्रैल 2010 से मार्च, 2011 के दौरान, इस क्लब ने निम्नलिखित कार्यकलापों का संचालन किया–

पाठ्यक्रम	साहसिक गतिविधियां	प्रतिभागियों की संख्या	दिनांक
भा.प्र.सेवा चरण–। पाठ्यक्रम (2009 बैच)	रिवर राफ्टिंग (ऋषिकेश)	29 अधिकारी प्रशि.	29/03/2010
भा.प्र.सेवा चरण–।।।	रिवर राफ्टिंग (ऋषिकेश)	49 प्रतिभागी	12/06/2010
भा.प्र.सेवा चरण–।।।	जार्ज एवरेस्ट का ट्रेक	50 प्रतिभागी	19/06/2010
85वां आधारिक पाठ्यक्रम	कैम्पटी फाल का लघु ट्रेक	85वें आधारिक पाठ्यक्रम के सभी अधिकारी प्रशि.	04/09/2010
85वां आधारिक पाठ्यक्रम	बिनोग हिल का लघु ट्रेक	85वें आधारिक पाठ्यक्रम के सभी अधिकारी प्रशि.	11/09/2010
85वां आधारिक पाठ्यक्रम	लाल टिब्बा का लघु ट्रेक	85वें आधारिक पाठ्यक्रम के सभी अधिकारी प्रशि.	18/09/2010
85वां आधारिक पाठ्यक्रम	नाग मंदिर का लघु ट्रेक	85वें आधारिक पाठ्यक्रम के सभी अधिकारी प्रशि.	29/09/2010
85वां आधारिक पाठ्यक्रम	रिवर राफ्टिंग (ऋषिकेश)	48 अधिकारी प्रशि.	17/10/2010
85वां आधारिक पाठ्यक्रम	रिवर राफ्टिंग (ऋषिकेश)	94 अधिकारी प्रशि.	04/12/2010
चरण V	रिवर राफ्टिंग (ऋषिकेश)	22 प्रतिभागी	18/12/2010
चरण V	रिवर राफ्टिंग (ऋषिकेश)	13 प्रतिभागी	25/12/2010
चरण V	बिनोग हिल का लघु ट्रेक	10 प्रतिभागी	01/01/2010
भा.प्र.सेवा चरण–। पाठ्यक्रम (2010 बैच)	फ्लाइंग फाक्स और बंगी जंपिंग	18 अधिकारी प्रशि.	29/03/2010

अलम्नाई एसोशिएसन

अलम्नाई एसोशिएसन ने अकादमी वेबसाइट पर अलम्नाई कॉर्नर www.lbsalumni.gov.in आरंभ किया है। वेबसाइट डिजाइन करने का कार्य अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों ने कंप्यूटर अनुभाग की सहायता से स्वयं किया। इस वेबसाइट का औपचारिक उद्घाटन श्री सत्यानंद मिश्र, सचिव, कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग द्वारा दिनांक 14 मई, 2008 को किया गया था। अलम्नाई एसोशिएसन, राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली के साथ मिलकर एशोसिएसन के सदस्यों को बिक्री करने हेतु स्मृति चिह्नों का निर्माण करा रहा है। रिपोर्टाधीन अवधि में श्री आशीष वाच्छानी, भा. प्र. सेवा, उपनिदेशक, अलम्नाई एसोशिएसन के निदेशक नामिती हैं।

कंप्यूटर सोसाइटी

इस वर्ष के दौरान, कंप्यूटर सोसाइटी ने कंप्यूटर संबंधित प्रश्नोत्तरियों, व्याख्यानों, कक्षाओं जैसे विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया। साथ ही, अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को सूचना प्रौद्योगिकी तथा ई–गवर्नेन्श में नवीन प्राद्योगिकियों तथा संकल्पनाओं से अवगत कराया गया। वर्ष 2010–11 के दौरान, ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी की कंप्यूटर सोसाइटी द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम संचालित किए गए:

- भा.प्र.सेवा व्यावसायिक चरण–।। पाठ्यक्रम (2009 बैच) के दौरान, अकादमी के होम पेज के लिए वेब डिजायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- 85वें आधारिक पाठ्यक्रम (2010) के दौरान, पावर पॉइंट प्रस्तुति पर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

फिल्म सोसाइटी

फिल्म सोसाइटी अकादमी की अति लोकप्रिय सोसाइटी है। वर्ष 2010–11 के दौरान फिल्म सोसाइटी ने सामाजिक सहित विभिन्न विषयों पर आधारिक पाठ्यक्रम, भा.प्र.सेवा चरण–I, चरण–II एवं चरण–III पाठ्यक्रम के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को 100 से अधिक फिल्में दिखाई। इसमें सभी अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों की भिन्न–भिन्न रुचियों को ध्यान में रखकर फिल्मों का चयन किया गया। फिल्म सोसाइटी ने अंग्रेजी, हिंदी एवं अन्य भाषाओं की 16 वी.सी.डी./डी.वी.डी. भी खरीदी। इस वर्ष फिल्म सोसाइटी के निदेशक नामिती, डॉ. एस.एच. खान, उपनिदेशक (व.), तथा निदेशक सह नामिती, डॉ. मनिन्दर कौर, उपनिदेशक (व.) थीं।

अभिरुचि क्लब

अभिरुचि क्लब ने वर्ष 2010 में अभिरुचि के कई क्षेत्रों, यथा– रचनात्मक लेखन, कालेज प्रतियोगिता, खजाने की खोज (ट्रेजर हंट), खाने की प्रतियोगिता, गायन प्रतियोगिता तथा खेलकूद इत्यादि को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया। यह क्लब, अकादमी के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों तथा अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रतिभागियों को उनकी रुचि के अनुसार गतिविधियों में भाग लने के लिए आवश्यक सामग्री एवं उपकरण उपलब्ध कराने तथा विचारों के आदान–प्रदान हेतु मंच की भूमिका भी निभाता है। इस वर्ष फिल्म सोसाइटी के निदेशक नामिती, श्री गौरव द्विवेदी, उपनिदेशक (व.), तथा निदेशक सह नामिती, श्री राजेश आर्य, उपनिदेशक (व.) थे।

ललित कला एसोशिएसन

ललित कला एसोसिएशन ने तरह–तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जिसमें सामूहिक भागीदारी को प्राथामिकता दी गई। एसोसिएशन द्वारा आयोजित कार्यक्रमों से अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों में संघ भावना को बढ़ावा मिला है और उनमें क्षेत्रीयता या भाषगत आधार पर विषमताओं को दूर करने में मदद मिलती है।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों से कई अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को अपनी सृजनशीलता उजागर करने का अवसर मिला है। इसके अतिरिक्त, ललित कला एसोसिएशन ने विभिन्न कलाकारों तथा कला समूहों को आमंत्रित किया। गायन संगीत, स्पेनिश गिटार तथा ड्रम के लिए पाठ्येतर मॉड्यूल आयोजित किए गए। आधारिक पाठ्यक्रमों के दौरान, स्व. श्री ए.के.सिन्हा स्मृति एकांकी प्रतियोगिता का भी सफलतापूर्वक मंचन किया गया। इस वर्ष इस एसोशिएसन की निदेशक नामिती, श्रीमती रंजना चोपड़ा, उपनिदेशक (व.) थीं।

गृह पत्रिका सोसाइटी

अकादमी में संचालित की जाने वाली गृह पत्रिका सोसाइटी, एक सचिव एवं 3 सदस्यों वाली कार्यकारी समिति है। सोसाइटी की सभी गतिविधियों का समन्वय, गृह पत्रिका सोसाइटी के सचिव द्वारा किया जाता है।

इस सोसाइटी के उद्देश्य निम्नवत् हैं :–

- सृजनात्मक लेखन द्वारा शैक्षिक क्रियाकलापों को प्रोत्साहन देना
- स्वतंत्र अभिव्यक्ति तथा एक–दूसरे से वार्ता हेतु मंच प्रदान करना
- पत्रकारिता की संपादकीय तथा अन्य संबंधित दक्षताओं का विकास करना।
- छिपी प्रतिभाओं और कार्टून कला का विकास करना

गतिविधियां :

गृह पत्रिका सोसाइटी ने 85वें आधारिक पाठ्यक्रम के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों की विवरणी वाली ''सोजोर्न'' नाम की पत्रिका का प्रकाशन किया। गृह पत्रिका सोसाइटी का नेतृत्व अकादमी के निदेशक, श्री पदमवीर सिंह द्वारा किया जाता है। सुश्री जसप्रीत तलवार, गृह पत्रिका सोसाइटी की निदेशक नामिती थीं।

प्रबंध मंडल

प्रबंध मंडल का मुख्य कार्य, विभिन्न क्षेत्रों में हुए हाल के विकास को प्रोत्साहित करना तथा उसका अध्ययन करना है तथा यह, आलेख एवं सूचना के आदान–प्रदान के मंच की भूमिका निभाता है–

मुख्य परिसर में आयोजित किए गए विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रबंध मंडल ने निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया :

- 'ट्रेजर हंट' पर दो आयोजन किए गए।
- चरण–II पाठ्यक्रम के दौरान, 'डिस्ट्रिक्ट ट्रेनिंग रेडी रेकनर' नामक पुस्तक का प्रकाशन किया गया तथा उसे सभी अधिकारी प्रशिक्षणार्थी एवं संकाय सदस्यों में वितरित किया गया।
- प्रेरणास्पद फिल्म, "द पर्स्यूट ऑफ हैप्पीनेस" दिखाई गई।
- पत्रिका 'द एग्ज्यूकीटिव' (प्रशासक) का प्रकाशन किया गया।
- 'मॉक स्टॉक्स' पर खेल आयोजित किए गए।

प्रकृति प्रेमी क्लब

इस वर्ष प्रकृति प्रेमी क्लब ने, विभिन्न पाठ्यक्रमों अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों तथा संकाय सदस्यों के सक्रिय सहयोग से, अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण, प्रकृति, वन्य जीव संरक्षण, प्लास्टिक के कुप्रभाव इत्यादि की जानकारी प्रदान करने तथा इसके प्रति संवेदनशील बनाने के लिए कई गतिविधियों का आयोजन कियाः

- कार्बन फुट–प्रिंट वाली टी–शर्टें, अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों, बागवानी स्टाफ तथा मेस कर्मचारियों को वितरित की गईं।
- वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- प्रकृति, वन्य जीव और पर्यावरण संबंधित कई चलचित्र दिखाए गए।
- क्लब द्वारा दिखाए गए चलचित्रों में दिखाई गई वन्य जीव समस्याओं पर, सर्वोत्तम समाधान विषयक प्रतियोगिता आयोजित की गई।
- एक फोटोग्राफी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।
- प्रकृति और वन्यजीव संपदा पर प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया।
- व्याख्यान प्रतियोगिता का भी आायेजन किया गया।

अधिकारी क्लब

अधिकारी क्लब, अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों, जिसमें सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम, चरण–V चरण–IV, चरण– ।।। पाठ्यक्रम के प्रतिभागी शामिल हैं, संकाय तथा स्टाफ सदस्यों को बाह्य और आंतरिक खेलकूद की सुविधाएं प्रदान करता है। बाह्य खेलकूद में टेनिस, बास्केट बाल, वॉली बाल, क्रिकेट, फुटबाल, इत्यादि की सुविधाएं प्रदान की जाती है और आंतरिक खेलकूद में बिलियर्ड्स, कैरम, शतरंज, ब्रिज, स्नूकर, टेबल टेनिस, स्क्वैश तथा बैडमिंटन शामिल है। यहां सुसज्जित जिम्नाजियम भी मौजूद है। इस वर्ष क्लब कई क्रियाकलाप आयोजित किए गए, जिनका पाठ्यक्रमवार विवरण निम्नवत् हैः

भा.प्र.सेवा, व्यावसायिक पाठ्यक्रम, चरण – ।

क. भा.प्र.सेवा, व्यावसायिक पाठ्यक्रम, चरण– I, 2009 बैच के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों के लिए निम्नलिखित खेलों की प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं–

- बैडमिंटन – पुरुष एकल, महिला एकल, पुरुष युगल, मिश्रित युगल
- टेनिस – पुरुष एकल, पुरुष युगल, मिश्रित युगल
- टेबल टेनिस – पुरुष एकल, पुरुष युगल, मिश्रित युगल, महिला एकल
- कैरम – पुरुष एकल, पुरुष युगल, मिश्रित युगल
- शतरंज – पुरुष एकल
- स्क्वैश – पुरुष एकल
- बिलियर्ड्स – पुरुष एकल
- स्नूकर – पुरुष एकल

ख. उपर्युक्त प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों ने निम्नलिखित टीम स्पर्धाएं भी आयोजित की–

- फुटबाल
- वालीबाल
- क्रिकेट

अधिकारी क्लब ने अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों तथा अकादमी संकाय सदस्यों की टीमों के बीच बैडमिन्टन की प्रतियोगिता आयोजित की।

घ. अधिकारी क्लब ने अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों तथा चरण–IV पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों के बीच क्रिकेट की प्रतियोगिता आयोजित की।

भा.प्र.सेवा, व्यावसायिक पाठ्यक्रम, चरण – ।।, 2008 एवं 2009 बैच

- चरण– ।। के दौरान बैडमिंटन, टेनिस, टेबल टेनिस इत्यादि की खेलकूद स्पर्धाएं आयोजित की गई।
- अधिकारी क्लब ने अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों तथा अकादमी संकाय सदस्यों की टीमों के बीच बैडमिन्टन की प्रतियोगिताएं आयोजित की, तथा अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों तथा चरण– ।।। पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों के बीच क्रिकेट की प्रतियोगिता आयोजित की।
- भा.प्र.सेवा, व्यावसायिक पाठ्यक्रम, चरण – ।।, 2008–2009 बैच के लगीाग 30 अधिकारी प्रशिक्षणार्थी बैडमिटन, फुटबाल तथा टेनिस खेल–कूद प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए इंदिरा गांधी राश्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून गए।

85वां आधारिक पाठ्यक्रम

- पाठ्यक्रम के दौरान बैडमिंटन, टेनिस, टेबल टेनिस, शतरंज, स्क्वैश, स्नूकर, कैरम इत्याादि की खुली प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।
- पाठ्यक्रम के दौरान व्याख्यान समूहवार वालीबाल, फुटबाल, बास्केट बाल तथा क्रिकेट के टूर्नामेन्ट का आयोजन किया गया।
- 85वें आधारिक पाठ्यक्रम के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों के लिए 13–14 नवंबर, 2010 को पोलो ग्राउंड में एथलीटिक मीट आयोजित की गई।
- 85वें आधारिक पाठ्यक्रम के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों तथा संकाय सदस्यों के लिए क्रॉस कंट्री दौड़ भी आयोजित की गई।
- व्यावसायिक पाठ्यक्रम चरण– ।, चरण– ।। तथा 85वें आधारिक पाठ्यक्रम के दौरान, क्लब ने टेनिस, बैडमिन्टन, बास्केट बाल, फुट बाल, स्क्वैश, टेबल टेनिस तथा बिलियर्ड्स के लिए प्रशिक्षण शिविर का भी आयोजन किया।

अधिकारी मेस

अधिकारी मेस में फर्श बदलकर, नए उपकरण (विशेषतः बर्तन धोने के) खरीदकर तथा रसोई के नए उपकरण लगाकर नया कलेवर प्रदान किया गया है। नए उन्नत साधनों की उपलब्धता से भोजन की उच्च गुणवत्ता और साफ–सफाई सुनिश्चित होती है। वेटरों और बैरों को प्रतिव्यक्ति दो यूनिफार्म उपलब्ध कराए गए है। मेस में लगाए गए जल शोधक यंत्रों की मासिक जांच के अतिरिक्त सभी मेस कर्मियों का नियमित चिकित्सा परीक्षण कराया जाता है। अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों के बीच चाय/कॉफी की वेन्डिन्ग मशीनें काफी लोकप्रिय हैं, उनका प्रभावी संचालन एवं रख–रखाव किया जाता है। मेस सर्विस के अतिरिक्त अधिकारी मेस, अधिकारी क्लब मदिरालय का भी संचालन कर रहा है, अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को कपड़े साफ करने के लिए लान्ड्रोमैट सुविधा भी अधिकारी मेस को प्रदान की गई हैं जिसे अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों ने बहुत पसंद किया है। भोजनालय की क्षमता को एक साथ 300 व्यक्तियों से बढ़ाकर 400 व्यक्तियों के लिए कर दिया गया है।

राइफल तथा धनुर्विद्या क्लब

अकादमी में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाला प्रत्येक अधिकारी इस क्लब का सदस्य होता है। क्लब की कार्यकारिणी समिति में निर्वाचित/नामित एक सचिव और तीन सदस्य होते हैं। कार्यकारिणी समिति, श्री एस.एस. राणा, मुख्य व्यायाम प्रशिक्षक तथा श्री गोकुल सिंह, सहायक व्यायाम प्रशिक्षक की सहायता से क्लब की गतिविधियों का आयोजन करती है। क्लब का निदेशक नामिती, क्लब की प्रशासनिक व्यवस्था की देखरेख करता है।

राइफल तथा धनुर्विद्या क्लब के पास बीस 0.22 स्पोर्टिंग गन, तीन .38 रिवॉल्वर, पांच एअर गन तथा एक .12 बोर एस.बी.एल. गन है। इस क्लब के पास ले. जनरल जे.एस. अरोड़ा द्वारा 1972 में भेंट की गई एक स्वचालित राइफल तथा लाइट मशीन गन भी है। इस क्लब ने अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों तथा संकाय सदस्यों के लिए इन शस्त्रों को चलाने के लिए अभ्यास सत्र आयोजित किए। भा.प्र.सेवा व्यावसायिक पाठ्यक्रम चरण– । (2009–2011 बैच) के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों के लिए 0.22 राइफल, 0.38 रिवाल्वर एवं 5.56 इन्सास राइफल संचालन के सत्र निम्नवत् आयोजित किए गएः–

पाठ्यक्रम	दिनांक	गतिविधियां	प्रतिभागियों की संख्या
भा.प्र.सेवा चरण– । पाठ्यक्रम (2009 बैच)	01/03/2010	0.22 राइफल संचालन	29 अधिकारी प्रशिक्षणार्थी
भा.प्र.सेवा चरण– । पाठ्यक्रम (2009 बैच)	16/03/2010	0.22 राइफल संचालन	35 अधिकारी प्रशिक्षणार्थी
भा.प्र.सेवा चरण– । पाठ्यक्रम (2009 बैच)	08/04/2010	0.38 रिवाल्वर संचालन	40 अधिकारी प्रशिक्षणार्थी
भा.प्र.सेवा चरण– । पाठ्यक्रम (2009 बैच)	09/04/2010	9 एमएम पिस्टल संचालन	39 अधिकारी प्रशिक्षणार्थी
भा.प्र.सेवा चरण– । पाठ्यक्रम (2009 बैच)	10/04/2010	9 एमएम पिस्टल संचालन	26 अधिकारी प्रशिक्षणार्थी
भा.प्र.सेवा चरण– ।। पाठ्यक्रम (2010 बैच)	12/03/2010	आर्अटीबीपी द्वारा 5.56 इन्सास राइफल संचालन	42 अधिकारी प्रशिक्षणार्थी

समकालीन क्रियाकलाप सोसाइटी

यह सोसाइटी, अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को सामान्य रुचि के विषयों, सामयिकी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित अन्य ज्वलंत विषयों पर भी परिचर्चा, बहस तथा अध्ययन के लिए मंच प्रदान करती है। इस सोसाइटी का कार्यक्षेत्र काफी व्यापक है क्योंकि अन्य सोसाइटियों तथा क्लबों के अंतर्गत न आने वाले सभी सामान्य प्रकृति के क्रियाकलाप इसी के अंतर्गत आते हैं। समकालीन क्रियाकलाप सोसायटी ने वर्ष 2010 में कई प्रतियोगिताओं एवं समारोहों का आयोजन किया। इस सोसाइटी द्वारा इस वर्ष कई गतिविधियां की गईः

- भा.प्र.सेवा चरण– ।। (2008 बैच) के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों के लिए अगस्त, 2010 के प्रथम सप्ताह में फुटबाल मैच के लिए विज्ञापन एवं आंखों देखा हाल प्रतियोगिता आयेजित की गई।
- भा.प्र.सेवा चरण– ।। (2008 बैच) के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों द्वारा निम्नलिखित विषयों पर किसी प्रकार योग्य अधिकारी (एसडीओ पुरस्कार) प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया : सर्वश्रेष्ठ कार्टूनिस्ट प्रतियोगिता, अकादमी पत्रिका में योगदान, लाफिंग बुद्धा, टच मी नाट

(छुई–मुई जैसी), श्रेणी 4 अधिपोषित, दम मारो दम, जेहादी केटीपी, रब ने बना दी जोड़ी, बाध्यकारी कलाकार, सब इंजीनियर ऑफ वेल डन अब्बा और साइलेंसर (खामोश!!) इत्यादि।

- 85वें आधारिक पाठ्यक्रम के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों द्वारा 19 नवंबर, 2010 को 'क्या ओटी लाउंज में एक मदिरालय होना चाहिए'' विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- भा.प्र.सेवा चरण– I (2010 बैच) के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों द्वारा 23 मार्च, 2011 को 'ग्राम सभा' विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

समाज सेवा सोसाइटी

समाज सेवा सोसाइटी, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी की ओर से किए जा रहे कल्याणकारी कार्यक्रमों में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस वर्ष समाज सेवा सोसाइटी ने निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया :

मसूरी के रिक्शा चालकों एवं दिहाड़ी मजदूरी करने वाले तपेदिक के मरीजों के लिए साप्ताहिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जाना जारी है। इस शिविर में सोसाइटी द्वारा औषधियां प्रदान की गई एवं डॉ. सुनील सैनन ने इस शिविर में स्वैच्छिक मार्गदर्शन किया। यह स्वास्थ्य शिविर प्रत्येक गुरुवार को आयोजित किया जाता है जिसमें 40–45 मरीजों को औषधि सहित निःशुल्क चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाती है। शिविर के संचालन हेतु राजीव गांधी फाउन्डेशन, नई दिल्ली से आर्थिक सहायता प्राप्त होती है।

85वें आधारिक पाठ्यक्रम के दौरान समाज सेवा सोसाइटी ने रक्तदान शिविर का आयोजन किया। अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों ने इस गतिविधि में बढ़–चढ़कर भाग लिया।

यह सोसाइटी हैप्पी वैली ग्राउंड के पास एक बालवाड़ी भी चलाती है जिसके लिए यह अवसंरचनात्मक सुविधाएं एवं बच्चों को मध्याह्न भोजन भी उपलब्ध कराती है। सोसाइटी ने ललिता शास्त्री बालवाड़ी में दिनांक 14 नवंबर, 2010 को बाल दिवस मनाया।

इस सोसाइटी द्वारा डॉ. एन.पी. उनियाल के मार्गदर्शन में एक होम्योपैथी औषधालय भी चलाया जाता है। इसमें मरीजों से औषधालय के रख–रखाव हेतु नाम मात्र शुल्क लिया जाता है।

इस सोसाइटी द्वारा आधारिक पाठ्यक्रम महोत्सव के रूप में दिनांक 16.10.2010 को एक मेले का आयोजन किया गया। यह सभी के लिए अविस्मरणीय क्षण था। विभिन्न परामर्शी समूहों ने दो स्टाल लगाए थे जिसमें एक खाद्य पदार्थ का तथा दूसरा खेलों का था। परामर्शदाता, अधिकारी प्रशिक्षणार्थी तथा संकाय सदस्य सभी सुबह से शाम तक इसमें शामिल रहे। समाज सेवा सोसायटी ने मेले का आयोजन किया और इसमें अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया तथा मेले का लक्ष्य प्राप्त किया गया। सोसाइटी ने परामर्शी समूहों की सबसे अच्छी भागीदारी एवं सुसज्जित स्टाल के लिए दो पुरस्कार भी रखे थे। पुरस्कार वितरण के दिन विजेता समूहों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। यह सोसाइटी अकादमी कर्मियों तथा बाहर की बालिकाओं की दक्षता बढ़ाने तथा उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए कपड़ों की सिलाई–कटाई एवं डिजाइनिंग केन्द्र का संचालन भी करती है।

इस सोसायटी को अकादमी के निदेशक, श्री पदमवीर सिंह का नेतृत्व मिलता रहा है। श्रीमती रंजना चोपड़ा, समाज सेवा सोसायटी की निदेशक नामिती तथा श्री ए. नल्लासामी, श्री अरशद एम नंदन सह निदेशक नामितियों और निर्वाचित कार्यपालक समिति के सदस्यों (श्री मनोज जैन, सचिव, सुश्री रश्मिता पांडा एवं अन्य) के मार्गदर्शन में इस सोसाइटी की गतिविधियों का संचालन किया गया।

हैम रेडियो क्लब

सभी प्रकार की प्रौद्योगिक उन्नतियों के बावजूद, गैर–व्यावसायिक रेडियो (हैम), आपातकालीन परिस्थितियों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आ रहा है। जैसा कि हाल की कुछ बड़ी त्रासदियों में, यथा– उड़ीसा का भयानक चक्रवात, 2001 की गुजरात भूकंप त्रासदी, तथा सुनामी के समय, जब सभी संचार सेवाएं ठप पड़ गईं थी, तो हैम रेडियो ही राहत और बचाव कार्य हेतु संचार का एकमात्र साधन रह गया था।

ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी के आपदा प्रबंध केंद्र में, किसी प्रकार की आपदा के प्रभावी प्रबंध का प्रशिक्षण देने हेतु एक हैम रेडियो क्लब की स्थापना की गई है। इस केंद्र के लक्ष्य भागीदार हैं– अखिल भारतीय सेवाओं तथा अन्य केंद्रीय सेवाओं को समूह 'क' सेवाओं के अधिकारी प्रशिक्षणार्थी। वर्तमान समय में यह केंद्र, अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों तथा स्थानीय स्वयंसेवकों को क्षमतावर्धन कार्यक्रम के तहत हैम रेडियो का प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, हैम रेडियो का लाइसेंस प्रदान करने के लिए अब परीक्षाएं आयोजित करता है, जहां सामुदायिक रेडियो, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीन है। दोनों साधन एक–दूसरे के पूरक हैं जिससे वे, बेहतर एवं प्रभावी तरीके से सेवाएं उपलब्ध कराते हैं।

85वें आधारिक पाठ्यक्रम के दौरान 23 अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया और उन्होंने गैर–व्यावसायिक लाइसेंस (सामान्य और प्रतिबंधित) के लिए परीक्षा दी। 85वें आधारिक पाठ्यक्रम के ट्रेक के दौरान, हैम रेडियो ने अधिकांश समूहों को संचार सुविधा उपलब्ध कराई। बाह्य तथा अन्य क्रियाकलापों में हैम रेडियो ने यथासमय यथावश्यक संचार सुविधाएं उपलब्ध कराई।

भा.प्र.सेवा चरण– I, 2010 बैच के अधिकारी प्रशिक्षणार्थी मई, 2011 में हैम लाइसेंस परीक्षा देने वाले हैं।

पिछले 4 वर्षों में अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्राप्त लाइसेंस तथा प्रशिक्षण का सार निम्नवत् है:

वर्ष	प्रशिक्षित अधिकारी	लाइसेंस प्राप्त किए
2007–08	77	69
2008–09	31	18
2009–10	41	32
2010–11	23	20

अध्याय 6

अन्य गतिविधियां

गांधी स्मृति पुस्तकालय की गतिविधियां

अकादमी का गांधी स्मृति पुस्तकालय, भारतीय प्रशासकों, अनुसंधानकर्ताओं, संकाय सदस्यों, विभिन्न पाठ्यक्रमों के प्रतिभागियों इत्यादि की अध्ययन जरूरतों को पूरा करने वाला देश के अत्यंत आधुनिक एवं सुसज्जित पुस्तकालयों में से एक है। गांधी स्मृति पुस्तकालय को सुविकसित तथा अकादमी के स्तर के अनुरूप बनाने के लिए, निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखा जाता है–

- प्रशासन और प्रबंध विषयों पर सभी पुस्तकें / जर्नल / व्याख्यान / नीतियां / विधिक कार्यवाहियों / सुधारों का संग्रह करना
- संदर्भ ग्रंथ, सूचीयन तथा सारांशीकरण सेवाएं उपलब्ध कराना।
- प्रशासनिक सुधार, सिविल सेवा सुधार; आर्थिक सुधार; सार्वजनिक–निजी भागीदारी, सुशासन विषयों पर इंटरनेट पर उपलब्ध सभी सूचीगत लेखों को ऑन–लाइन सूचना सेवा के रूप में उपलब्ध कराना।
- प्रभावी भंडारण, त्वरित पुनःप्राप्ति तथा लक्ष्य उपभोगकर्ताओं को शीघ्र वितरण हेतु सूचना प्रणाली को आधुनिक बनाना
- कतिपय लोक प्रशासन पुस्तकालयों और सहयोगी संसाधन / संदर्भ पुस्तकालयों से संपर्क स्थापित कर, अन्तर–पुस्तकालयी संपर्कों को सुदृढ़ बनाना।

पुस्तकालय के अभिलेख पूर्णतः कंप्यूटरीकृत हैं, जिसके लिए LibSys/LS PREMIA DATABASE सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है। पुस्तकालय दो डाटाबेस की सहायता से कार्य करता है– पहला, पुस्तकों, रिपोर्टों, ऑडियो / वीडियो कैसेट, सीडी से संबंधित सूचना तथा दूसरा समाचारपत्रों एवं पत्र–पत्रिकाओं के आलेख संबंधित सूचना। पुस्तकालय के डाटाबेस अब लेन पर भी उपलब्ध है। पुस्तकालय डेटाबेस अकादमी की वेबसाइट www.lbsnaa.ernet.in पर उपलब्ध है।

पुस्तकालय में 1.65 लाख से अधिक दस्तावेज हैं जिनमें जिल्दबंद पत्रिकाएं, 2194 ऑडियो कैसेट तथा 3943 सीडी हैं। इस वर्ष 3500 से अधिक पुस्तकें जोड़ी गईं। इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय में लगभग 360 पत्र–पत्रिकाएं आती हैं जो विभिन्न राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय संगठनों / संस्थानों से अंशदान, विनिमय तथा उपहार आधार पर प्राप्त होती हैं।

यहां महात्मा गांधी पर तथा महात्मा गांधी द्वारा संग्रहीत दस्तावेजों का एक पृथक संग्रह है जिसे ''गांधीयन'' कहा जाता है। इस समय इस संग्रह में 1000 से अधिक प्रकाशन हैं। ज्ञानलोक संग्रह के अतिरिक्त, अकादमी संग्रह और मसूरी संग्रह, पुस्तकालय में अलग–अलग अपने निर्धारित स्थानों पर रखे गए हैं।

आरएफआईडी

यह पुस्तकालय आरएफआईडी प्रणाली आरंभ करने हेतु प्रक्रियाधीन है।

ई–संसाधनः

पुस्तकालय में (ऑन लाइन आईपी पर खोले जा सकने वाले) ई–संसाधनों का संग्रह है, जिनका विवरण निम्नवत् हैः

- **ईबीएससीओ प्रकाशन द्वारा तैयार ई–जर्नल डाटाबेस, बिजनेस सोर्स प्रीमियरः** बिजनेस सोर्स प्रीमियर में 1965 से लेकर आज तक 2300 से अधिक श्रृखंलाओं की पूर्ण तथा 1998 तक की संपादित संदर्भ पुस्तकें जिन्हें तलाशा जा सकता है, उपलब्ध हैं। जर्नल रैकिंग अध्ययनों से पता चलता है कि बिजनेस सोर्स प्रीमियर, प्रतियोगी रूप से व्यवसाय के सभी क्षेत्रों, विपणन, प्रबंध, सूचना प्रबंध तंत्र, पीओएम, लेखा, वित्त और अर्थशास्त्र में पूर्ण विषय–वस्तु के मामले में बेहतर है। गैर–जर्नल सामग्री की अतिरिक्त पूर्ण विषय–वस्तु में बाजार अनुसंधान रिपोर्टें, उद्योग रिपोर्टें, देश की रिपोर्ट, कंपनियों की विवरणी तथा स्वॉट विश्लेषण शामिल हैं।
- **डाटनिट इंडिया प्रा.लि. के** Indiastat.com **द्वारा प्रकाशित आन लाइन, सांख्यिकीय आंकड़ा** : यह भारत के निम्नलिखित क्षेत्रों में सांख्यिकीय सूचना देने के लिए हैः प्रशासनिक ढांचा, बैंक और वित्तीय संस्थाएं, नागरिक आपूर्ति और उपभोक्ता मामले, सहकारी समितियां, अपराध, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास निर्माण इत्यादि।

- **भारतीय अर्थव्यवस्था पर ऑनलाइन डाटाबेसः** भारतीय रिजर्व बैंक पहले से ही अर्थव्यवस्था के विभिन्न आयामों से जुड़े आंकड़ों को तैयार एवं संग्रह करता रहा है। इन आंकड़ों की अपने विभिन्न प्रकाशनों में प्रकाशित करना इसकी समृद्ध परंपरा रही है। समय के साथ, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी किए जाने वाले आंकड़ों की व्याप्ति और तरीका बदल चुका है; मुद्रित प्रारूप से इलेक्ट्रानिक और अब इंटरनेट पर इंटरैक्वि डाटाबेस के माध्यम से।
- **जेएसटीओआर ऑनलाइनः** जेएसटीओआर, उच्च गुणवत्तापूर्ण, अन्तर–विषयक पूर्ण सामग्री (आर्कीव), अध्ययन एवं अध्यापन हेतु उपलब्ध कराता है। इसमें एक हजार से अधिक प्रमुख अकादमिक जर्नलों के आर्कीव शामिल है, जो मानविकी, सामाजिक विज्ञान और विज्ञान विषयों के साथ साथ अकादमिक कार्य के लिए मोनोग्राफ तथा अन्य बहुमूल्य सामग्री उपलब्ध कराता है। संपूर्ण सामग्री फुल टेस्क्ट सोर्सेबल है, जो सर्च टर्म हाइलाइटिंग का विकल्प देती है, जिसमें उच्च गुणवत्ता वाले चित्र शामिल है तथा लाखों, कथनों एवं संदर्भों से अंतर्संबंधित है।

पुस्तक प्रदर्शनी

गांधी स्मृति पुस्तकालय के संग्रह में वृद्धि करने के लिए अकादमी ने अधिकारी लाउंज में विभिन्न प्रकाशकों, आपूर्तिकर्ताओं एवं पुस्तक बिक्रेताओं की पुस्तक प्रदर्शनियां आयोजित की, जिससे पुस्तकों की खरीद की जा सके।

पुस्तकालय द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली सेवाएं

यह पुस्तकालय, अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों, संकाय सदस्यों, स्टाफ, अनुसंधान कार्यकर्ताओं और मुख्य परिसर, इंदिरा भवन परिसर और रा.प्र. अनु. संस्थान परिसर में आयोजित होने वाले विभिन्न पाठ्यक्रमों, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों इत्यादि के प्रतिभागियों को की वाचन, अनुसंधान और संदर्भ जरूरतों को पूरी करता है। पाठकों की जिज्ञासा समाधान एवं सहायता के लिए प्रशिक्षित और सहयोगी स्टाफ सदा उपलब्ध रहता है। उपभोक्ताओं के लिए निम्नलिखित सेवाएं उपलब्ध हैंः

- उधारी सेवाएं
- संदर्भ सेवाएं
- संदर्भ ग्रंथ और अभिलेखीकरण सेवाएं
- समाचार पत्र क्लीपिंग सेवाएं
- समसामयिक जानकारी सेवाएं
- रिप्रोग्राफिक सेवाएं
- साहित्य खोज
- डीएलएससी समाधान
- अन्य उपलब्ध सेवाएं

सुलभ संदर्भ हेतु पुस्तकालय ने निम्नलिखित प्रकाशन जारी किए–

- सूचीयन सेवा (मासिक)
- सारांशीकरण सेवा (मासिक)
- नई विषय–सूची (मासिक)
- खरीदी गई पुस्तकों की सूची (मासिक)
- न्यूज एलर्ट (ताजा समाचार) (साप्ताहिक)

डिजिटीकरण परियोजना

पुस्तकालय की दुर्लभ पुस्तकों का सी–डैक, नोएडा द्वारा डिजिटलीकरण किया जा रहा है ताकि उनका इलैक्ट्रानिक डाटाबेस तैयार किया जा सके और पुस्तकों को संरक्षित किया जा सके। इस समय सी–डैक के स्टाफ लगभग 6000 पुस्तकों के 30 लाख पृष्ठों का डिजिटलीकरण कर चुके हैं। स्कैन की गई सभी पुस्तकें अकादमी के पुस्तकालय पोर्टल www.lbsnaa.ernet.in पर उपलब्ध हैं।

व्यावसायिक उन्नयन

- ऊर्जा एवं संसाधन संथान (टेरी), नई दिल्ली द्वारा दिनांक 23–26 फरवरी, 2010 तक सूचना प्रतिमान को स्वरूप प्रदान करना विषय पर डिजिटल पुस्तकालयों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। डॉ. ओ.पी वर्मा ने इस सम्मेलन में भाग लिया।
- आईएएसएलआईसी और गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा 18–21 दिसंबर, 2010 तक ''बदलते परिवेश में पठन–पाठन आदतें'' 12वीं राष्ट्रीय ज्ञान पुस्तकालय और सूचना नेटवर्किंग संगोष्ठी, एनएसीएलआईएन, 2009 का आयोजन किया गया। श्री मलकीत सिंह, आर.एस. बिष्ट और श्री एस.के. भारती ने इस संगोष्ठी में भाग लिया।

- के.आई.आई.टी. विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में 26–29 सितंबर, 2009 तक 27वीं ''अखिल भारतीय, डिजिटल युग में पुस्तकालय/सूचना उपभोक्ता'' सम्मेलन का आयोजन किया गया। श्री मलकीत सिंह और श्री राममिलन केवट ने इस सम्मलेन में भाग लिया।

कंप्यूटर केंद्र की गतिविधियां

वर्ष 2010–2011 के दौरान कंप्यूटर केंद्र द्वारा निम्नलिखित गतिविधियां की गई–

- अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों तथा चरण–।।। तथा IV के प्रतिभागियों को लैपटॉप उपलब्ध कराना : कंप्यूटर केंद्र ने सभी पी IV डेस्कटाप कंप्यूटरों को लैपटॉप के रूप में उन्नयन कर दिया है। सभी अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों तथा चरण–।।। तथा IV के प्रतिभागियों को उनके छात्रावासों में लैपटॉप उपलब्ध कराए गए।
- प्रिंटरों का उन्नयन : हमने परामर्शदात्री समिति के सभी सदस्यों के प्रिंटरों को उच्च गति वाले डुप्लेक्स प्रिंटर उपलब्ध करा दिए हैं। सभी वैयक्तिक सहायकों को भी उच्च गति वाले प्रिंटर उपलब्ध कराए गए हैं।
- अनुभाग प्रमुखों/स्टाफ सदस्यों को पी IV कंप्यूटर उपलब्ध कराना : सभी अनुभाग प्रमुखों को पी IV कंप्यूटर प्रदान किए गए हैं और हम निकट भविष्य में अन्य स्टाफ सदस्यों के कंप्यूटरों को भी उन्नत कर पी IV कंप्यूटर देने वाले हैं।
- एनआईएसी से वर्क फ्लो ऑटोमेशन सॉफ्टवेयर का कार्यान्वयन : कंप्यूटर केंद्र वर्क फ्लो आटोमेशन सॉफ्टवेयर का प्रयोग कर रहा है। इसी आटोमेशन सॉफ्टवेयर की सहायता से फाइलों की कार्यवाही होगी। इस सॉफ्टवेयर से लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी द्वारा कागजों के बिना कार्य करने के चलन को आरंभ करने में सहायता मिलेगी।
- प्रशिक्षण संस्थान परियोजना की नेटवर्किंग– कार्मिक तथा प्रशिक्षण विभाग द्वारा एक नई परियोजना आरंभ की गई है जिसके अंतर्गत पूरे भारत के 31 प्रशिक्षण संस्थानों को एमपीएलएस वीपीएन के माध्यम से जोड़ा जाएगा। इनमें से 13 संस्थान पहले ही नेटवर्क से जोड़ दिए गए हैं। पाठ्यक्रम संग्रह तथा ऑन लाइन परीक्षा मॉड्यूलों का परीक्षण तथा कार्यान्वयन ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी द्वारा किया जा चुका है।
- अकादमी परिसर में वाई–फाई नेटवर्क की व्यवस्था– अधिकांश कक्षाओं, सम्मेलन कक्षों तथा अन्य कक्षों में वाई–फाई इंटरनेट की व्यवस्था उपलब्ध कराई गई है। निकट भविष्य में परिसर से बाहर भी ऐसी ही व्यवस्था पर विचार किया जा रहा है।
- वीडियो कान्फ्रेसिंग सुविधा की व्यवस्था– परिसर में वीडियो कांफ्रेसिंग व्यवस्था कर दी गई है। इस सुविधा के लिए अनिवार्य उपकरणों की स्थापना कर उनका परीक्षण कर लिया गया है। चरण ।।। तथा चरण IV पाठ्यक्रमों के दौरान ड्यूक तथा मैक्सवेल विश्वविद्यालयों के साथ कई वीडियो कांफ्रेसिंग सत्र आयोजित किए गए।

राजभाषा अनुभाग

भारत सरकार के कार्यालयों में भारत संघ की राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए, सरकार द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार हिन्दी पदों का सृजन किया जाना अपेक्षित है। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु अकादमी में वर्ष 1986 में राजभाषा अनुभाग की स्थापना की गई है। यह अनुभाग, निदेशक तथा प्रशासन प्रभारी के समग्र मार्गदर्शन तथा पर्यवेक्षण में कार्य करता है। इस अनुभाग द्वारा विचाराधीन वर्ष के दौरान अक्टूबर, 2010 तक मुख्यतः निम्नलिखित कार्य संपन्न किए गये।

- भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2010–2011 के लिए निर्धारित कार्यक्रम के अनुरूप 'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्रों के साथ हिन्दी पत्राचार सुनिश्चित किया जा रहा है। तदनुसार, अकादमी द्वारा 'क' एवं 'ख' क्षेत्रों के साथ लगभग 95 प्रतिशत और 'ग' क्षेत्र के साथ लगभग पत्राचार हिन्दी में किया जा रहा है। राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत द्विभाषी जारी किए जाने वाले सभी दस्तावेजों को द्विभाषी रूप में जारी किया गया।
- इस अकादमी में दिनांक 01 सितम्बर से 30 सिंतबर, 2010 तक हिन्दी मास का आयोजन किया गया। इस उपलक्ष्य में, स्टाफ एवं अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों के लिए राजभाषा नीति से सम्बन्धित सामान्य ज्ञान, हिन्दी श्रुतलेख, हिन्दी निबन्ध लेखन तथा हिन्दी काव्य रचना प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। हिन्दी मास के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को दिनांक 29 सितम्बर, 2010 को आयोजित मुख्य समारोह में पुरस्कृत किया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि अकादमी के संयुक्त निदेशक, श्री प्रेम कुमार गेरा थे तथा कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ गीता शर्मा, आचार्य, हिन्दी एवं प्रादेशिक भाषाएं को आमंत्रित किया गया था। इस समारोह में, विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों के साथ ही, वार्षिक टिप्पण तथा मसौदा लेखन प्रोत्साहन योजना 2009–10 के प्रतिभागियों को भी पुरस्कृत किया गया। इस तरह, इस समारोह में कुल 22 प्रतिभागियों को सयुक्त निदेशक महोदय ने प्रशस्ति पत्र तथा 9,600/– रुपए के नकद पुरस्कार प्रदान किए। कार्यक्रम का संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन राजभाषा अनुभाग के सहायक निदेशक श्री नन्दन सिंह दुग्ताल ने किया। संयुक्त निदेशक महोदय ने अपने संबोधन में अकादमी में हिन्दी के प्रयोग पर संतोष व्यक्त किया तथा अकादमी में हिन्दी के प्रयोग को और–अधिक बढ़ाने का आह्वान किया। कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि डॉ गीता शर्मा ने राजभाषा हिन्दी की प्रगति के लिए और

अधिक प्रयास किए जाने की जरूरत बताई। सहायक निदेशक राजभाषा श्री नन्दन सिंह दुग्ताल, का आभार प्रकट करते हुए पुनः सभी से अकादमी में हिन्दी के प्रयोग को और–अधिक बढ़ाने का आह्वान किया।

- इसके अतिरिक्त, अकादमी के कर्चचारियों में राजभाषा संबंधी नियम, अधिनियम आदि की जानकारी बढ़ाने हेतु सिंतबर, 2010 में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें पावर प्वांइट प्रस्तुति में माध्यम से डॉ ओम प्रकाश द्विवेदी ने उपस्थित अकादमी स्टाफ को राजभाषा नीति, नियम, अधिनियम, वार्षिक लक्ष्य तथा सांविधानिक उपलब्धों की जानकारी दी तथा श्री दिनेश चन्द्र तिवारी, ने नेमी प्रकृति की टिप्पण तथा मसौदा लेखन का अभ्यास कराया। अकादमी के निदेशक की अध्यक्षता वाली राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन, दिनांक 28.09.2010 को किया गया। नराकास देहरादून के सदस्य कार्यालय, इलाहाबाद बैंक द्वारा आयोजित चित्र कविता लेखन प्रतियोगिता में इस अकादमी की अधिकारी प्रशिक्षणार्थी सुश्री रचना पाटिल, भा.प्र.सेवा की रचना ''मैं मजदूर'' भेजी गई। नराकास देहरादून के सदस्य कार्यालयों के लिए दिनांक 05 अक्टूबर, 2010 को आप्टोलेक देहरादून द्वारा आयोजित ''कम्पयूटरीकरण के युग में राजभाषा हिन्दी के समक्ष चुनौतियां व उनका समाधान'' विषयक हिन्दी लेखन प्रतियोगिता में अकादमी की और से डॉ ओम प्रकाश द्विवेदी तथा श्री राजेंन्द्र प्रसाद प्रजापति ने प्रतिभागिता की।
- अकादमी के विभिन्न अनुभागों एवं अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों को आवश्यकतानुसार समय–समय पर उपलब्ध कराई जाने वाली प्रशासनिक सामग्री यथा–पत्रों, परिपत्रों, सूचिनाओं, निविदा सूचनाओं, वार्षिक रिर्पोट पश्रपत्रों अनुशासनिक कार्यवाहियों इत्यादि के अनुवाद के अतिरिक्त, राजभाषा अनुभाग ने विभिन्न पाठ्यक्रमों, व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, चरण –। के लिए पाठ्यक्रम पुस्तिका तथा प्रबंध, विधि, आचार–नीति, भारतीय इतिहास और सस्कृति, तथा अर्थशास्त्र सबंधी कक्षा–व्याख्यानों का अनुवाद संपन्न किया।
- अकादमी में पढ़ाए जाने वाले मुख्य विषयों की पाठ्यसामग्री हिन्दी में चाहने और हिन्दी माध्यम अपनाने वाले प्रशिक्षणार्थियों की संख्या में हर आधारिक पाठ्यक्रम में वृध्दि होने तथा अकादमी में हिन्दी अनुवाद हेतु अपर्याप्त जनशक्ति (केवल 2 अनुवादकों) को ध्यान में रखतें हुए, हिन्दी माध्यम के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों की आवश्यकताओं को पूर्णतः पूरा करने हेतु अकादमी में पूर्णविकसित अनुवाद अनुभाग की नितांत आवश्यकता है।

इस प्रकार यह अकादमी अपने प्रशासनिक और प्रशिक्षण, दोनो क्षेत्रों में हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए कटिबध्द है।

परिशिष्ट–1 : अकादमी के संकाय सदस्य/अन्य अधिकारी

अकादमी के संकाय सदस्य

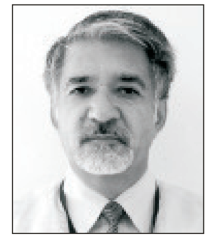
पदमवीर सिंह
निदेशक

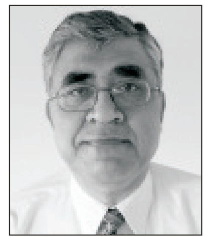
प्रेम कुमार गेरा
संयुक्त निदेशक

संजीव चोपड़ा
संयुक्त निदेशक

दुष्यंत नरियाला
उपनिदेशक (वरि.)

आलोक कुमार
उपनिदेशक (वरि.)

रंजना चोपड़ा
उपनिदेशक (वरि.)

डॉ. एस.एच. खान
उपनिदेशक (वरि.)

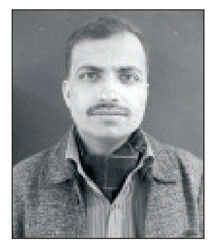
राजेश आर्य
उपनिदेशक (वरि.)

तेजवीर सिंह
उपनिदेशक (वरि.)

जसप्रीत तलवार
उपनिदेशक (वरि.)

गौरव द्विवेदी
उपनिदेशक (वरि.)

डॉ. मनिन्दर कौर द्विवेदी
उपनिदेशक (वरि.)

रोली सिंह
उपनिदेशक (वरि.)

जयंत सिंह
उपनिदेशक (वरि.)

आशीष वाच्छानी
उपनिदेशक

डॉ प्रेम सिंह
उपनिदेशक

निधि शर्मा
उपनिदेशक

प्रो. ए.एस. रामचंद्र
आचार्य, राजनैतिक सिद्धांत एवं संवैधानिक विधि

मोना भागवती
रीडर, राजनैतिक सिद्धांत एवं संवैधानिक विधि

संकाय सदस्य/अन्य अधिकारी

क्रम सं.	संकाय सर्वश्री	पद
1.	शीलधर यादव	सहायक निदेशक
2.	डॉ. गरिमा यादव	सहायक निदेशक
3.	डॉ. दलजीत कौर	सहायक आचार्य, हिन्दी
4.	वी. मुत्तिनमठ	भाषा अनुदेशक
5.	डॉ. अलका कुलकर्णी	भाषा अनुदेशक
6.	ए. नल्लासामी	भाषा अनुदेशक
7.	अरशद नंदन	भाषा अनुदेशक
8.	के.बी. सिंघा	भाषा अनुदेशक
9.	श्रीमती सौदामिनी भूयां	भाषा अनुदेशक
10.	हरि सिंह रावत	मुख्य व्यायाम अनुदेशक
11.	गोकुल सिंह	सहायक व्यायाम अनुदेशक
12.	कल्याण सिंह	घुड़सवारी अनुदेशक
13.	कुलविंदर सिंह	सहायक घुड़सवारी अनुदेशक
14.	एम. चक्रवर्ती	प्रमुख, निक्टू
15.	आजाद सिंह	वैज्ञानिक 'बी' निक्टू
16.	अमरजीत सिंह दत्त	वैज्ञानिक अधिकारी
17.	डॉ. ए.आर. टम्टा	मुख्य चिकित्साधिकारी (एसएजी)
18.	डॉ. बी.एस. काला	मुख्य चिकित्साधिकारी (एनएफएसजी)
19.	वी.एस. धनाई	प्रशासन अधिकारी (लेखा)
20.	आलोक पाण्डेय	वरिष्ठ प्रोग्रामर
21.	आर.के. अरोड़ा	सहायक पु. एवं सूचना अधिकारी
22.	सत्यबीर सिंह	सहायक प्रशासन अधिकारी
23.	एस.एस. बिष्ट	सहायक प्रशासन अधिकारी
24.	एस.पी.एस. रावत	निजी सचिव
25.	पुरुषोत्तम कुमार	निजी सचिव

परिशिष्ट–2 : भौतिक अवसंरचना

क. कक्षा / व्याख्यान / संगोष्ठी कक्ष		
i)	कक्षा / व्याख्यान कक्षों की कुल संख्या	11
ii)	सभी कक्षा / व्याख्यान कक्षों की कुल क्षमता	1184 सीट
iii)	सभागार (क्षमता– 478)	01
iv)	सम्मेलन कक्ष / हॉल	02
v)	प्रत्येक सम्मेलन कक्ष / हॉल की क्षमता	50 प्रत्येक
ख. अन्य प्रशिक्षण साधन		
i)	ओएचपी	15
ii)	सीआरटी	06 सीआरटी तथा 07 एलसीडी
iii)	अन्य	07 स्लाइड प्रोजेक्टर
ग. छात्रावास		
i)	गंगा छात्रावास	78
ii)	कावेरी छात्रावास	32
iii)	नर्मदा छात्रावास	21
iv)	कालिन्दी अतिथि गृह	21
v)	हैप्पी वैली ब्लॉक	22
vi)	इन्दिरा भवन छात्रावास	23
vii)	सिल्वरवुड छात्रावास	54
viii)	वैली व्यू छात्रावास (इन्दिरा भवन)	48
घ. रिहायशी आवास		
i)	अधिकारियों के लिए	38
ii)	कर्मचारियों के लिए	319

परिशिष्ट–3 : भारतीय प्रशासनिक सेवा चरण–। (2009–11 बैच) के प्रतिभागी

सेवा/राज्य	पुरुष	महिलाएं	प्रतिभागियों की संख्या
एजीएमयूटी	3	2	5
आंध्र प्रदेश	5	–	5
असम–मेघालय	4	1	5
बिहार	4	1	5
छत्तीसगढ़	3	2	5
गुजरात	3	3	6
हरियाणा	3	–	3
हिमाचल प्रदेश	1	–	1
जम्मू–कश्मीर	1	1	2
झारखंड	3	1	4
कर्नाटक	4	3	7
केरल	2	1	3
मध्य प्रदेश	9	3	12
महाराष्ट्र	5	3	8
मणिपुर–त्रिपुरा	4	–	4
नागालैण्ड	2	–	2
उड़ीसा	4	1	5
पंजाब	3	–	3
राजस्थान	–	1	1
रॉयल भूटान सिविल सेवा	2	1	3
सिक्किम	1	1	2
तमिलनाडु	6	1	7
उत्तर प्रदेश	11	3	14
उत्तराखण्ड	3	–	3
पश्चिम बंगाल	2	3	5
योग	**89**	**31**	**120**

परिशिष्ट–4 : भारतीय प्रशासनिक सेवा चरण–।। के प्रतिभागी (2008–10 बैच)

राज्य	पुरुष	महिलाएं	प्रतिभागियों की संख्या
एजीएमयूटी	7	1	8
आंध्र प्रदेश	2	–	2
सेना	1	–	1
असम–मेघालय	4	–	4
बिहार	4	1	5
छत्तीसगढ़	4	1	5
गुजरात	3	2	5
हरियाणा	3	–	3
हिमाचल प्रदेश	2	–	2
जम्मू–कश्मीर	3	–	3
झारखंड	4	–	4
कर्नाटक	2	3	5
केरल	4	–	4
मध्य प्रदेश	6	4	10
महाराष्ट्र	5	2	7
मणिपुर–त्रिपुरा	5	1	6
नागालैण्ड	1	1	2
उड़ीसा	2	1	3
पंजाब	3	2	5
राजस्थान	2	–	2
रॉयल भूटान सिविल सेवा	2	–	2
सिक्किम	–	1	1
तमिलनाडु	2	4	6
उत्तर प्रदेश	7	5	12
उत्तराखंड	2	–	2
पश्चिम बंगाल	2	3	5

परिशिष्ट–5 : भारतीय प्रशासनिक सेवा चरण– III के प्रतिभागी (2010)

राज्य	पुरुष	महिलाएं	योग
मध्य प्रदेश	11	3	14
उड़ीसा	0	0	0
तमिलनाडु	7	4	11
बिहार	1	0	1
महाराश्ट्र	12	1	13
उत्तर प्रदेश	1	1	2
नगालैंड	0	0	0
आंध्र प्रदेश	5	1	6
संघराज्य क्षेत्र	1	0	1
केरल	7	2	9
कर्नाटक	5	0	5
मणिपुर–त्रिपुरा	1	0	1
राजस्थान	0	0	0
पश्चिम बंगाल	1	1	2
छत्तीसगढ़	6	0	6
गुजरात	6	0	6
झारखंड	4	0	4
सिक्किम	0	0	0
असम–मेघालय	4	0	4
पंजाब	2	1	3
हरियाणा	1	0	1
योग	**79**	**14**	**93**

परिशिष्ट–6 : भारतीय प्रशासनिक सेवा चरण– IV के प्रतिभागी (2010)

राज्य	पुरुष	महिलाएं	योग
मध्य प्रदेश	3	0	3
उड़ीसा	0	0	0
तमिलनाडु	6	0	6
बिहार	2	0	2
महाराश्ट्र	8	0	8
उत्तर प्रदेश	1	0	1
नगालैंड	0	0	0
आंध्र प्रदेश	3	3	6
संघराज्य क्षेत्र	2	0	2
हिमाचल प्रदेश	1	0	1
जम्मू–कश्मीर	2	0	2
केरल	3	0	3
कर्नाटक	1	0	1
मणिपुर–त्रिपुरा	0	0	0
राजस्थान	1	0	1
पश्चिम बंगाल	6	0	6
छत्तीसगढ़	1	0	1
गुजरात	1	0	1
झारखंड	3	0	3
सिक्किम	0	0	0
असम–मेघालय	4	1	5
पंजाब	1	0	1
हरियाणा	3	3	6
एसएलएएस	2	2	4
योग	**54**	**10**	**64**

परिशिष्ट–7 : 85वें आधारिक पाठ्यक्रम के प्रतिभागी

सेवा/राज्य	पुरुष	महिलाएं	योग
भारतीय प्रशासनिक सेवा	86	38	124
भारतीय विदेश सेवा	19	06	25
भारतीय पुलिस सेवा	52	12	64
भारतीय वन सेवा	38	19	57
रॉयल भूटान विदेश सेवा	0	02	02
रॉयल भूटान सिविल सेवा	04	01	05
भारतीय राजस्व सेवा	0	01	01
योग	**199**	**79**	**278**

परिशिष्ट–8 : 108वें प्रवेशकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी

सेवा/संवर्ग	पुरुष	महिलाएं	योग
अरुणाचल प्रदेश	1	–	01
आंध्र प्रदेश	1	5	06
छत्तीसगढ़	3	–	03
दिल्ली	1	–	01
हरियाणा	3	–	03
हिमाचल प्रदेश	3	1	04
कर्नाटक	2	–	02
केरल	2	–	02
मध्य प्रदेश	3	2	05
मणिपुर–त्रिपुरा	2	–	02
उड़ीसा	4	–	04
तमिलनाडु	4	–	04
पश्चिम बंगाल	2	–	02
योग	**31**	**8**	**39**

परिशिष्ट–9 : राष्ट्रीय सुरक्षा पर 14वें संयुक्त सिविल–सैन्य कार्यक्रम के प्रतिभागी

सेवा/संवर्ग	पुरुष	महिलाएं	योग
भारतीय प्रशासनिक सेवा	05	01	06
भारतीय पुलिस सेवा	09	–	09
कैबिनेट सचिवालय	01	–	01
भारतीय राजस्व सेवा	03	–	03
भारतीय वायु सेना	03	–	03
भारतीय सेना	02	–	02
भारतीय नौसेना	02	–	02
राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड	01	–	01
भारतीय तट रक्षक	01	–	01
भारतीय रेल यातायात सेवा	01	–	01
भारतीय रेल सुरक्षा बल	01	–	01
मीडिया	01	–	01
निजी क्षेत्र	01	–	01
योग	31	01	32

परिशिष्ट–10 : राष्ट्रीय सुरक्षा पर 15वें संयुक्त सिविल–सैन्य कार्यक्रम के प्रतिभागी

सेवा/संवर्ग	पुरुष	महिलाएं	योग
भारतीय प्रशासनिक सेवा	03	01	04
भारतीय पुलिस सेवा	05	–	05
भारतीय वन सेवा	08	01	09
भारतीय नौसेना	01	–	01
भारतीय नौसेना आयुध सेवा	02	–	02
योग	19	02	21